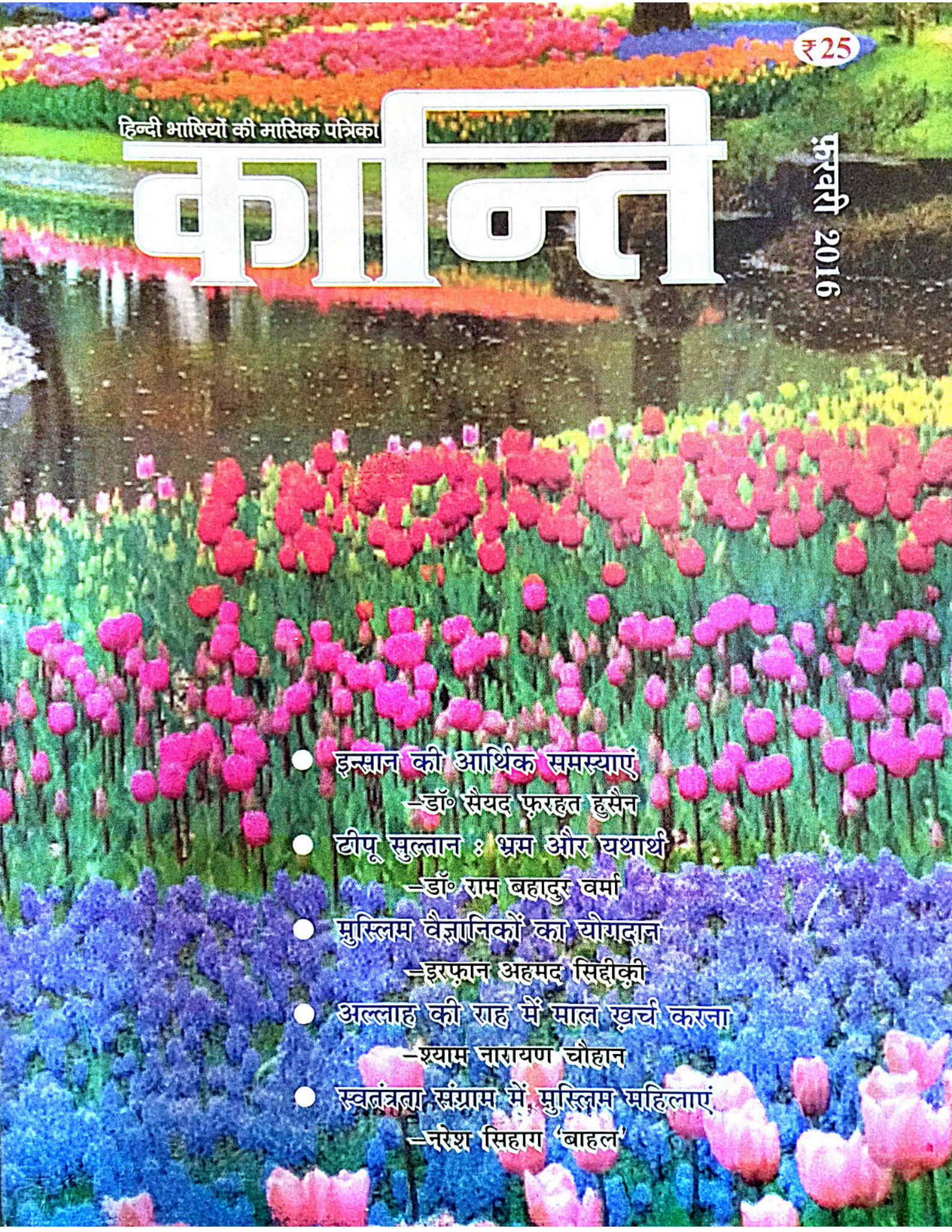

₹25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

फ़रवरी 2016

- इन्सान की आर्थिक समस्याएं
  –डॉ॰ सैयद फ़रहत हुसैन
- टीपू सुल्तान : भ्रम और यथार्थ
  –डॉ॰ राम बहादुर वर्मा
- मुस्लिम वैज्ञानिकों का योगदान
  –इरफ़ान अहमद सिद्दीक़ी
- अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना
  –श्याम नारायण चौहान
- स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाएं
  –नरेश सिहाग 'बाहल'

HINDUSTAN
Pavers & Blocks
Group

Established Since 1977

Anwar Khan
+91 9822427700
Akbar Khan
+91 9822497700

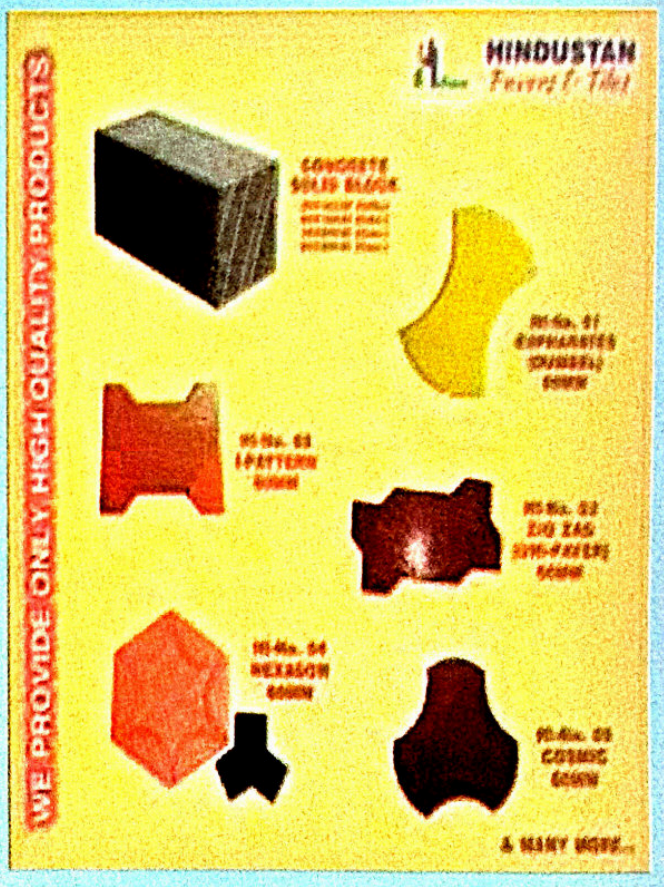

HINDUSTAN INDUSTRIES

Your Lifestyle Paving Company

Manufacturers Of Solid Concrete Blocks,
Interlocking Pavers, Tiles &
Allied Concrete Products

Colvale IDC, Colvale, Mapusa-Goa
Phone : 0832 2257700, 0832 2257900
Email : hindustanindustriesgoa@gmail.com

www.hindustangroupgoa.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 25 अंक 8 फ़रवरी 2016

ऐ ईमान लाने वालो! जब किसी निश्चित अवधि के लिए आपस में ऋण का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि कोई लिखने वाला तुम्हारे बीच न्यायपूर्वक (दस्तावेज़) लिख दे। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ़्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

जानते हैं वह हक़ीक़त को छिपा कर रखना
क़त्ल करना जिसे इल्ज़ाम उसी पर रखना

हाकिमे-वक़्त[1] पे जिस वक़्त मैं तनक़ीद[2] करूं
हाथ उस वक़्त न यारो मेरे मुंह पर रखना

उससे ख़ूरेज़ी की लत भी नहीं छोड़ी जाती
तमग़ए-अम्न[3] भी चाहे वह सितमगर[4] रखना

ज़रपरस्तों[5] का तो इक खेल है किरदार-कुशी[6]
वास्ता उनसे ज़रा सोच-समझकर रखना

जाने कब मुंह से निकल जाए कोई काम की बात
रब्त[7] हम ख़ाना-ख़राबों[8] से बराबर रखना

आज तस्वीर तो इक क़िस्सए-पारीना[9] है
पास अपने मेरी आवाज़ के पैकर[10] रखना

इससे ज़ेहनों की बलन्दी का पता चलता है
नाम ज़र्रों के तुम अपने महो-अख़्तर[11] रखना

अच्छे-अच्छों के यहां पांव उखड़ जाते हैं
जादए-हक़[12] पे क़दम ख़ूब जमाकर रखना

ख़ूने-तक़वा[13] की कोई रिन्द[14] न बू पा जाए
साक़िया,[15] अच्छी तरह जाम को धोकर रखना

आसमां इससे बहुत दूर है अज़मत[16] का 'हफ़ीज़'
आशियां फ़न का न शुहरत[17] के शजर[18] पर रखना

● हफ़ीज़ मेरठी

---

1. वर्तमान शासक 2. आलोचना 3. शांति का पदक, अमन का तमग़ा 4. अत्याचारी, सितम करने वाला 5. भौतिकवादियों 6. चरित्र हनन 7. लगाव, संबंध 8. बदनसीबों 9. पुराना क़िस्सा 10. शरीर, आकार 11. चांद और तारे 12. सत्य मार्ग 13. तक़वा के ख़ून, धर्मनिष्ठा के ख़ून 14. शराबी, धार्मिक बंधनों से मुक्त 15. ऐ साक़ी 16. महानता, महात्म्य, बुज़ुर्गी 17. प्रसिद्धि 18. पेड़।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
पति का हक़ पत्नी पर (हदीस मंजरी)		6
बिहार में शराबबन्दी-आधी हक़ीक़त, आधा फ़साना (संपादकीय)		7
सच्चा लोकतंत्र (आपके पत्र)		9
मानव जीवन की सार्थकता और इस्लाम	–जमीला आली जाफ़री	13
अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना	–श्याम नारायण चौहान	17
प्राकृतिक आपदाओं से शिक्षा	–ज़हीर ललितपुरी	19
महिलाओं की कम होती संख्या	–डॉ॰ विभा सिंह	23
आपसी भेदभाव भूलकर एक हों मुसलमान	–विद्या प्रकाश	24
इन्सान की आर्थिक समस्याएं	–डॉ॰ सैयद फ़रहत हुसैन	26-27
आर्थिक जगत के क्रान्तिदूत : हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	29
टीपू सुल्तान : भ्रम और यथार्थ	–डॉ॰ राम बहादुर वर्मा	31
क्या हम अपने युवाओं को महज़ डिग्री बेच रहे हैं ? (कैरियर)	–कौशलेन्द्र प्रपन्न	35
कल जो बहू थी (कहानी)	–भावसिंह हिरवानी	37
खेलों में घपलों की भरमार	–ए॰ एन॰ शिब्ली	39
भ्रष्टाचार (लघुकथा)	–दिनेश कुमार छाजेड़	40
मुस्लिम वैज्ञानिकों का योगदान	–इरफ़ान अहमद सिद्दीक़ी	41
स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं का योगदान	–नरेश सिहाग 'बाहल'	43
परदेसी परिन्दे (पर्यावरण)	–विद्या प्रकाश	46
स्त्री-पुरुष के दायित्व (पुस्तक समीक्षा)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	48
ग़ज़ल	–प्रो॰ शरद नारायण खरे	49
मानव शरीर की कुछ रोचक जानकारी	–(बालवीथी)	50



(98) इन बद्दुओं में ऐसे-ऐसे लोग मौजूद हैं जो अल्लाह के रास्ते में कुछ ख़र्च करते हैं तो उसे अपने ऊपर ज़बरदस्ती की चट्टी (जुर्माना) समझते हैं[96] और तुम्हारे हक़ में कालचक्रों की प्रतीक्षा कर रहे हैं (कि तुम किसी चक्कर में फंसो तो वे अपनी गरदन से इस व्यवस्था के पालन का पट्टा उतार फेंकें जिसमें तुमने उन्हें कस दिया है) हालांकि बुराई के चक्कर ने स्वयं उनको अपनी लपेट में ले लिया है और अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है। (99) और इन्हीं बद्दुओं में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहां समीपता का और रसूल की ओर से रहमत की दुआएं लेने का साधन बनाते हैं। हां, वह अवश्य उनके लिए समीपता का साधन है और अल्लाह अवश्य ही उनको अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, निश्चय ही अल्लाह क्षमाशील और दयावान है।

(100) वे मुहाजिर और अंसार जिन्होंने सबसे पहले ईमान के संदेश को स्वीकार करने में पहल की, साथ ही वे जो बाद में सच्चाई के साथ उनके पीछे आए, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए, अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वे उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी महान सफलता है।

(101) तुम्हारे पास-पड़ोस में जो बद्दू रहते हैं उनमें बहुत-से मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) हैं और इसी तरह स्वयं मदीना के निवासियों में भी मुनाफ़िक़ मौजूद हैं जो निफ़ाक़ में पक्के हो गये हैं। तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं।[97] क़रीब है वह समय जब हम उनको दोहरी सज़ा देंगे[98], फिर वे और अधिक बड़ी सज़ा के लिए वापस लाए जाएंगे। —क़ुरआन, 9 : 98-101

---

96. अर्थ यह है कि जो ज़कात इनसे वुसूल की जाती है, उसे ये एक जुर्माना समझते हैं। यात्रियों के सत्कार और आतिथ्य का जो दायित्व इन पर डाला गया है, वह इनको बुरी तरह खलता है और अगर किसी युद्ध के मौक़े पर ये कोई चन्दा देते हैं तो अपनी हार्दिक भावना से अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए नहीं देते, बल्कि अनचाहे मन से अपनी वफ़ादारी का भरोसा दिलाने के लिए देते हैं।

97. अर्थात अपने निफ़ाक़ को छिपाने में वे इतने अभ्यस्त हो गये हैं कि स्वयं नबी (सल्ल॰) भी अपनी उच्च श्रेणी की बुद्धिमत्ता और सूझबूझ के बावजूद उनको नहीं पहचान सकते थे।

98. दोहरी सज़ा से तात्पर्य यह है कि एक ओर तो वह दुनिया, जिसके मोह में पड़कर उन्होंने ईमान और निष्ठा के स्थान पर निफ़ाक़ और द्रोह का रवैया अपनाया है, उनके हाथ से जाएगी और यह धन और प्रतिष्ठा और आदर प्राप्त करने के स्थान पर उलटे अपमान और असफलता पाएंगे। दूसरी ओर जिस मिशन को ये विफल देखना और अपनी चालबाज़ियों से असफल करना चाहते हैं, वे उनकी कामनाओं और कोशिशों के बाद भी उनकी आंखों के सामने पलेगा-बढ़ेगा।

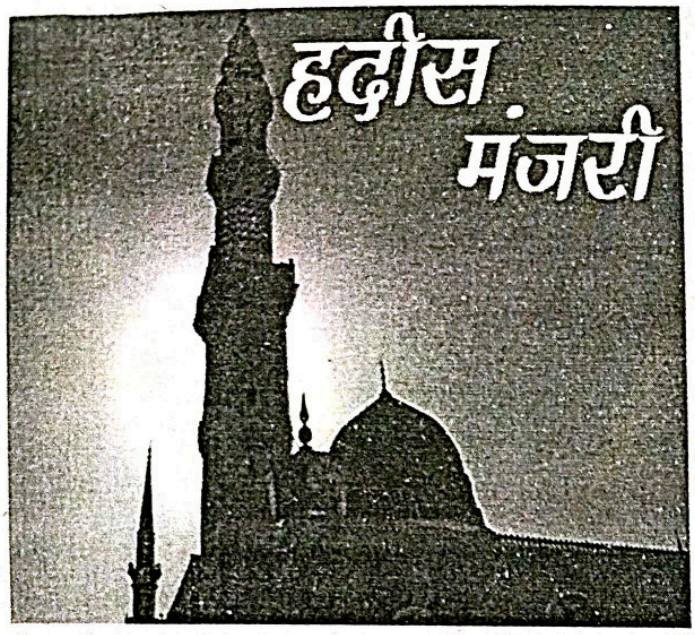

पति का हक़ पत्नी पर

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जब पुरुष अपनी स्त्री को अपने बिस्तर की तरफ़ बुलाये और वह उसके पास न आये और पुरुष रात उस पर गुस्से में गुज़ारे, तो फ़रिश्ते प्रात:काल तक उस स्त्री पर लानत भेजते रहते हैं ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

बुख़ारी और मुस्लिम की ही एक रिवायत में है : "जब स्त्री अपने पति का बिस्तर छोड़कर रात गुज़ारती है, तो फ़रिश्ते उस स्त्री पर प्रात:काल तक उस पर लानत भेजते रहते हैं ।"

और एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "उस (अल्लाह) की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, कोई पुरुष अपनी स्त्री को अपने बिस्तर की ओर बुलाये और वह इन्कार कर दे, तो अनिवार्यत: जो आसमान में है वह उस स्त्री से अप्रसन्न रहता है जब तक कि उसका पति उससे राज़ी न हो जाए ।"

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "किसी स्त्री के लिए उसके अपने पति की मौजूदगी में उसकी अनुमति के बिना रोज़ा (रमज़ान के अतिरिक्त) रखना जायज़ नहीं है । और न उसके लिए यह जायज़ है कि पति की अनुमति के बिना पति के घर में किसी को आने की इजाज़त दे ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

ये शब्द बुख़ारी के हैं ।

● हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "तुममें से प्रत्येक व्यक्ति ज़िम्मेदार है और तुममें से हर एक व्यक्ति से जो भी कुछ उसकी ज़िम्मेदारी में है उसके विषय में उससे पूछा जाएगा । शासक ज़िम्मेदार है । पुरुष अपने घर वालों पर ज़िम्मेदार है और स्त्री अपने पति के घर और उसकी संतान पर ज़िम्मेदार है । इस प्रकार तुममें से प्रत्येक ज़िम्मेदार है और तुममें से प्रत्येक से जो कुछ उसकी ज़िम्मेदारी में है उसके विषय में उससे पूछा जाएगा ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "यदि मैं किसी व्यक्ति को यह आदेश देता कि वह दूसरे व्यक्ति को सजदा करे, तो मैं स्त्री को यह आदेश देता कि वह अपने पति को सजदा करे ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा है कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

बिहार में शराबबन्दी–आधी हक़ीक़त, आधा फ़साना

बिहार में अप्रैल 2015 से शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लागू हो जाएगा, ऐसा कहना जल्दबाज़ी होगी । अब इस घोषणा पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार यू-टर्न ले सकते हैं, क्योंकि राजस्व विभाग के अधिकारियों ने उन्हें सलाह दी है कि शराबबंदी का दायरा देसी शराब तक ही सीमित रखना संभव है । राजस्व विभाग के अधिकारी इसके पीछे 5,500 करोड़ रुपये के राजस्व घाटे का तर्क दे रहे हैं । मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विगत वर्ष मद्य निषेध दिवस के मौक़े पर पटना में आयोजित एक समारोह में घोषणा की थी कि एक अप्रैल 2016 से पूरे राज्य में शराबबंदी लागू कर दी जाएगी । मीडिया में यह रिपोर्ट भी आयी कि इस बाबत अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दे दिया गया है । साथ ही इसके लिए अधिकारियों को विस्तृत नीति तैयार करने को कहा गया है । मुख्यमंत्री ने कहा था कि राज्य में एक अप्रैल 2016 से नयी उत्पाद एवं मद्य निषेध नीति लागू कर शराब पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया जाएगा । मद्य निषेध नीति के लागू होने से राजस्व पर 4000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा और इसकी भरपाई के लिए अलग से उपाय किये जाएंगे । मुख्यमंत्री ने यह बड़ी अच्छी बात कही कि शराब से विशेषकर ग़रीब लोगों का जीवन जहां प्रभावित होता है, वहीं महिलाएं भी इससे परेशान रहतीं है । ग़रीबों को इससे काफ़ी आर्थिक क्षति होती है । नीतीश कुमार ने कहा कि उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग में उत्पाद पर तो ज़ोर होता है, लेकिन मद्य निषेध पर नहीं, इसलिए मद्य निषेध पर ज़ोर दिया गया है । केरल में शराब पर आंशिक प्रतिबंध के साथ ही गुजरात के बाद बिहार तीसरा राज्य होगा, जहां शराब की बिक्री पर प्रतिबंध रहेगा, चाहे वह सीमित-सिर्फ़ देसी दारू तक ही क्यों न हो । गुजरात पूरे देश का एकमात्र सूबा है, जहां शराबबंदी लागू है । लेकिन यह शराबबंदी सिर्फ़ काग़ज़ों तक सीमित है । ज़मीनी हक़ीक़त बिल्कुल अलग है । वास्तव में गांधी जी की जन्मभूमि गुजरात में 1960 से ही दिखावटी तौर पर शराबबंदी लागू है, लेकिन शराबबंदी की सच्चाई कुछ और हैं । अभी पिछले वर्ष अंतिम महीनों में गुजरात की राजधानी अहमदाबाद में आने वाली एक ट्रेन के टॉयलेट से शराब की बड़ी खेप प्राप्त हुई थी । इतना ही नहीं एक घर से भी शराब का जख़ीरा बरामद हुआ । वहां टैंकर का इस्तेमाल भी शराब की तस्करी के लिए किया जाता है । पहले वहां एक टैंकर से भी लाखों रुपये की शराब ज़ब्त की गयी । वहां ऐसा अक्सर होता रहता है । यह तथ्य है कि गुजरात में राजस्थान, दमणदीव और हरियाणा से बड़े पैमाने पर शराब की तस्करी की जाती है । आंकड़ों के मुताबिक़, गुजरात में हर साल 100 करोड़ से ज़्यादा की अवैध शराब पकड़ी जाती है । यह किंचित प्रसन्नता की बात है कि केरल सरकार ने 10 वर्षों में राज्य में पूरी तरह से शराबबंदी लागू करने के तहत जो नीति बनायी थी, उस पर सुप्रीम कोर्ट ने गत 29 दिसम्बर 2015 को मुहर लगा दी । सुप्रीम कोर्ट ने सरकार की इस नीति के तहत केरल के बारों में शराबबंदी को जारी रखा है ।

केवल पांच सितारा होटलों में शराब परोसी जाएगी, जबकि 2, 3 और 4 सितारा बार वालों की याचिका को कोर्ट ने ख़ारिज कर दिया है । सुप्रीम कोर्ट ने केरल सरकार की शराबबंदी क़ानून पर अपनी रज़ामंदी जताते हुए बारों में शराब पर प्रतिबंध को सही बताया है । राज्य सरकार ने नयी नीति के तहत केवल पांच सितारा होटलों के बारों में ही शराब परोसने की अनुमति दी है । केरल में वर्तमान समय में आमतौर पर केरल में प्रत्येक निवासी प्रति वर्ष 8.3 लीटर अल्कोहल पी जाता है । राष्ट्रीय स्तर पर इसकी तुलना करें तो यह दोगुनी मात्रा है । वास्तव में नशा एक धीमा ज़हर है जिसमें दर्दनाक मौत के सिवा कुछ हासिल नहीं होता है, कितने ही परिवारों की ज़िंदगी इस ज़हर की शिकार होकर घर से बेघर हो गयी है तथा न जाने कितनी ज़िंदगियां मौत के मुहं में समा चुकी हैं और न जाने कितनी ज़िंदगियां अंतिम सांसे गिन रही हैं । शराब का नशा सबसे अधिक घातक है । इसीलिए हमारे देश के संविधान निर्माताओं ने शराबबंदी की ओर भी ध्यान दिया और मद्य निषेध विभाग भी बनाया गया आबकारी विभाग भी अस्तित्व में आया और आरंभिक कुछ समय के बाद यह धड़ल्ले से शराबबंदी का मखौल उड़ाने लगा । सरकारें शराब माफ़िया के आगे झुकती गयीं और आबकारी विभाग निरंकुश ढंग से शराब की नयी दुकानें खोलने का लाइसेंस बांटने लगा । अब हालत यह है कि इस सूरतेहाल पर सरकार से कुछ ख़ास स्वेच्छिक क़दम की अपेक्षा नहीं की जा सकती, क्योंकि सरकार को नशे के कारोबार से करोड़ो-अरबों का मुनाफ़ा होता है और शराब माफ़िया से राजनेताओं की निरंतर बंदरबांट चलती रहती है । जनस्वास्थ्य की किसी को चिंता नहीं है । योग से शराबबंदी होने से रहीं । अत: इस ज़हर को रोकने के लिए सरकार के साथ जनता को भी खुलकर आगे आना होगा । देखा गया है कि ऐसे कुछ मामलों में महिलाएं विरोध जताती हैं । मगर यह केवल महिलाओं का काम नहीं होना चाहिए । सच्चाई यह है कि अगर जनता नशा मुक्ति के पक्ष में एकजुट हो जाए तो ये मौत की फैक्टरियां अपने आप बंद हो जाएंगी, और अन्य राज्य सरकारों को मजबूर होक़र शराब और अन्य मादक पदार्थों पर प्रतिबंध लगाना पड़ेगा । वास्तव में शराबनोशी ने भारतीयों की बड़ी संख्या का जीवन दुष्कर बना डाला है । कुछ समय पहले एक अंग्रेज़ी दैनिक में शराब के इस्तेमाल पर एक सर्वेक्षणात्मक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, जिसमें बताया गया कि भारतीय समाज के विशेषकर अभिजात्य वर्ग के युवक और युवतियां शराब के प्रति तेज़ी से आकर्षित हो रहे हैं । यह वर्ग फ़ैशन के तौर पर भी शराब का इस्तेमाल करता है ।

कहने का मतलब यह कि इस ज़हरीले पदार्थ का इस्तेमाल पढ़े-लिखे मूर्ख तो पहले से करते रहे हैं, यह दुर्व्यसन अपनी पीढ़ी की ओर भी स्थानांतरित कर रहे हैं । इसकी बुरी आदत और लत ने ख़ासकर कमज़ोर वर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर कल्पनातीत कुप्रभाव डाला है । यह भी सच है कि पुरातनकाल से ही कुछ लोगों की सामाजिक व्यवस्था और जीवनशैली में शराब का प्रवेश था, जिसे पूंजीपतियों ने अपनी धन बढ़ाऊ घिनौनी मानसिकता के फेर में हवा दी है । ये लोग हर त्योहार पर, जन्म और विवाह के अवसरों पर शराब का इस्तेमाल अनिवार्य रूप से करते हैं । दैनिक दिनचर्या में भी इस्तेमाल करते हैं । फिर न तो शराब के उपयोग की मात्रा की कोई सीमा है और न ही उनके समाज के किसी सदस्य पर इसके सेवन पर रोक है ! हालत यह है कि शराब पीने वालों का शरीर और मन-मस्तिष्क सभी अपाहिज हो चुके हैं ! नतीजा यह है कि अच्छे और बुरे की पहचान करने के योग्य नहीं रहे और न ही वे किसी मामले में सही निर्णय कर सकते हैं । कुरआन में शराब के लिए "ख़म्र" शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसकी व्याख्या हज़रत उमर (रज़ि॰) ने

(शेष पृष्ठ 16 पर)

सच्चा लोकतंत्र

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का दिसम्बर 2015 अंक पढ़ा । 'दृष्टिकोण' के अंतर्गत आलेख 'बढ़ती असहिष्णुता', सिकुड़ता लोकतंत्र, रचयिता एल०एस० हरदेनिया का मैंने गहन अध्ययन किया । श्री हरदेनिया जी के विचारों का मैं पूर्णतया समर्थक हूं । अड़सठ वर्ष से अधिक हो गये अपने देश को स्वतंत्र हुए । स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रमुख उद्देश्य यही है कि सच्चा लोकतंत्र प्रस्तुत करना है ।

दुख के साथ यह लिखना पड़ रहा है । परिभाषा विपरीत हो गयी है । अब तो यह हो गया है कि अधि नायकवाद का बोलबाला हो गया है । बाहुबल, धनबल व शक्तिबल का बोलबाला हो गया है । वोटों की राजनीति जाति-पाति का भेदभाव व आरक्षण का प्रचलन दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । लोकतंत्र नाच दिखा रहा है । नेवले, नाग बीन बजा रहे हैं ।

भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद राजगुरु, बहादुरशाह ज़फ़र, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद आदि स्वतंत्रता सेनानियों का देश के प्रति बलिदान निरर्थक प्रतीत हो रहा है । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, संसद का वर्षाकालीन अधिवेशन हो रहा है । कोई ठोस कार्य नहीं होकर आये दिन संसद के दोनों सदन की कार्यवाही स्थगित हो रही है । जनता का पैसा व्यर्थ बर्बाद हो रहा है । बुद्धिजीवी चुनाव नहीं लड़ सकता है । राष्ट्रीय राजनैतिक दल विभक्त होते जा रहे हैं । क्षेत्रीय दलों की डुगडुगी बज रही है । लोकतंत्र खोखला प्रतीत हो रहा है । अपराधीगण सत्ता का सुख भोग रहे हैं । राम राज्य व शांति का वातावरण रसातल की ओर जा रहा है ।

लोकतंत्र में 'मूर्खों' का दावानल बढ़ता जा रहा है । योग्यता व आर्थिक आधार नकारात्मक होता जा रहा है । सकारात्मक सोच की कमी बढ़ती जा रही है । नैतिकता, ईमानदारी, सदाचार आदि क्षीण होते जा रहे हैं । तस्करी, भ्रष्टाचार बेईमानीं आदि के प्रकोप में वृद्धि हो रही है । सत्ता का सुख भोगने हेतु अपराधीकरण की प्रवृत्ति प्रबल हो रही है ।

बेकारी व ग़रीबी, महंगाई आदि में वृद्धि होती जा रही है । इनमें ह्रास होने का प्रश्न नहीं उठ रहा है । आये दिन सच्चे लोकतंत्र का मज़ाक़ हो रहा है ।

अब समय का तक़ाज़ा है अब देर मत करो, संभल जाओ यदि लोकतंत्र को बचाना है तो आतंकवाद के ज़ाल को पूर्णतया नष्ट करना है । अब समय पुकार रहा है, उन स्वतंत्रता सेनानियों के त्यागमय जीवन लिखने का है । सच्चे लोकतंत्र की परिभाषा परिभाषित करनी है । संकल्प देशवासियों को देश की रक्षा करने का है, सच्चे लोकतंत्र का अर्थ भ्रष्टाचार, ग़रीबी व बेरोज़गारी से मुक्त कराना है ।

रामस्वरूप झैवर
9-10 शास्त्रीनगर-विस्तार,
भीलवाड़ा (राज०)

शराब और ईंट

हालांकि कुरआन शराब पीने की इजाज़त नहीं देता, फिर भी बहुत से लोग बेधड़क शराब पीते हैं । इस बारे में एक क़िस्सा है कि एक फ़क़ीर कहीं जा रहे थे, रास्ते में उन्हें एक शराबी मिला । शराबी फ़क़ीर को रोककर बोला–आप लोग शराब पीने से क्यों मना करते हैं, जबकि यह अंगूर से बनती है, क्या अंगूर कोई ऐसी चीज़ है, जिससे मना किया जाए ?

फ़क़ीर ने उससे कहा कि अगर तुम पर कोई मुट्ठी भर मिट्टी फेंक दे या कोई एक कटोरी पानी डाल दे तो क्या तुम्हें चोट लगेगी ?

शराबी ने उत्तर दिया–नहीं !

फ़क़ीर ने फिर कहा–लेकिन अगर उसी मिट्टी में पानी मिलाकर ईंट बना दी जाए और तुम पर फेंक दी जाए तो ? तो ज़ाहिर है मैं उससे घायल हो जाऊंगा, शराबी बोला । फ़क़ीर बोला–

जब मिट्टी में पानी मिलाने से तुम घायल हो जाओगे। इसी तरह अंगूर बुरी चीज़ नहीं है, लेकिन जब उसी अंगूर में कुछ चीज़ें मिलाकर शराब बना ली जाए तो वह हानिकारक है । उससे स्वास्थ्य तो ख़राब होता ही है बुद्धि और आचरण भी ख़राब होता है । सोचने-समझने की क्षमता भी प्रभावित होती है और इसके कारण परिवार नष्ट हो जाते हैं ।

शराबी ने फ़क़ीर की बातें ध्यान से सुनीं और वह बहुत प्रभावित हुआ । उसने फ़ैसला कर लिया कि अब से वह शराब नहीं पिएगा ।

क्या ही अच्छा हो यदि सरकार शराब बनाने पर ही पाबन्दी लगा दे, तो ''न रहे बांस न बजे बांसुरी''।

घेवरचन्द गोदीका

किशनपोल बाज़ार, जयपुर

सुझाव एवं प्रश्न

नवम्बर की 'कान्ति' पढ़ी तथा पढ़कर अनेक सुझाव एवं प्रश्न मिले । कुरआन का अनुवाद, बलात्कार, छेड़ख़ानी, ब्याज का औचित्य, पुनर्जन्म पर तर्क, आरक्षण की अवधि, अवतारवाद, पौराणिक कुरीतियां जिसमें छुआछूत का भेद, अंधविश्वास ब्रह्मावादी विचार आदि विषयों पर अच्छी सामग्री मिली । अब्दुर्रहमान की फांसी अवैध हुई यह सत्य है ।

इसके बाद मैंने अपना नाम 'कान्ति' में अंकित पाया इससे मैं प्रसन्न तो ज़रूर हूं मगर मैंने बिहार के एक भी लेखक का लेख नहीं पाया ।

मैं अपना गांव छोड़ पीरो में बच्चों को पढ़ाने हेतु मुसलमान एवं ईसाइयों के मुहल्ले में रहता हूं । वहां कुरआन एवं बाइबल का अध्ययन चल रहा है, उसमें 'कान्ति' का पूर्ण सहयोग मिला । मैं जातिवाद का पक्षधर नहीं हूं । मैं एक इन्सान के रूप में रहा और रहना चाहा । कभी-कभी तो हिन्दू से नफ़रत करता रहा । हंसी मज़ाक़ में हिन्दू पर कुठाराघात करता रहता हूं । हिन्दू के पुस्तक 4 वेद, छ:धाम 18 पुरान 4 दर्शन को देखा जिसमें ब्रह्मावादी बू आती है । हिन्दी की तरफ़ ध्यान नहीं दिया और भोजपुरी के दायरा में बंध गया । भोजपुरी में हर विद्या लिखी–छन्द का ज्ञान कुछ रखा ।

आज मासिक, वार्षिक छन्द विलुप्त होते जा रहे हैं रबर छन्द का प्रयोग चल रहा है । ''मिसाल बने मिसाइलमैन ।''

यह छन्द रबर छन्द में उल्लेख मिला । इस छन्द का लोगों ने याद नहीं किया उसका भाव जानकर रज जाएंगे ।

निराला का यह पूर्ण कामयाब नहीं होगा । तुकान्त छन्छ कण्ठाग्र नहीं होते हैं । आज छन्दहीन कविता का प्रचार-प्रसार चल रहा है ।

हरिद्वार प्रसाद किस्लय

भोजपुर, बिहार

बन्द हो मदरसों को लेकर दुष्प्रचार

मदरसों में केवल धार्मिक शिक्षा दी जाती है । यहां तक कि उन्हें राजनीतिक गतिविधियों से भी दूर रखा जाता है । ग़रीब और पिछड़े वर्गों के बच्चे देश के विभिन्न राज्यों से शिक्षा लेने के लिए इन मदरसों में आते हैं । पूरे देश में सभी धर्मों के मानने वाले अपने बच्चों को उनके धर्म की शिक्षा देते हैं ।

भारत लाकतांत्रिक देश है, यहां की नीति धर्मनिरपेक्षता पर आधारित है हमारे देश की मिसाल ऐसे बगीचे से है जहां पर सैकड़ों प्रकार के रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं, यहां पर हर फूल को फूलने की पूरी आज़ादी है, उसी प्रकार भारत के संविधान में सभी धर्मों के मानने वालों को उनके धर्म के सिद्धांतों के अनुसार शिक्षा लेने, अपनी धार्मिक शिक्षा के लिए मंदिर, गिर्जाघर, गुरुद्वारा और मदरसे बनाने का अधिकार दिया गया है । यहां बहुसंख्यकों और अल्पसंख्यकों को बराबरी के अधिकार हैं । धार्मिक शिक्षा से उस समाज की संस्कृति की पहचान होती है, इस देश में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध समुदाय के लोग रहते हैं इन्हें अपनी भाषा और संस्कृति से प्रेम होता है । इसी लिए सभी देशवासियों को अपनी भाषा और संस्कृति की सुरक्षा और उन्नति का समान अवसर मिलना चाहिए । इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए ।

मदरसों में सभी विद्यार्थियों के खाने और रहने की व्यवस्था होती है । वहां पर कुरआन और हदीस की शिक्षा दी जाती है । देश के सभी बड़े-छोटे मदरसों का ख़र्च मुस्लिम समाज अपनी ओर से पूरा करता है । वह कभी सरकार से आर्थिक सहायता नहीं लेते । ऐसा कहना कि मदरसों को सरकार आर्थिक सहायता देती है यह दुष्प्रचार है, मदरसों में 5-6 साल तक शिक्षा दी जाती है । उसके बाद वह विद्यार्थी अपनी रोज़ी-रोटी के लिए किसी मस्जिद या मदरसे में नौकरी करते हैं । इस प्रकार वह अपना जीवन सीधे-साधे तरीक़े से गुज़ारते हैं । वह इस्लाम की प्रेम और भाईचारे की शिक्षा को देश के सभी वर्गों के लोगों तक पहुंचाते हैं । मदरसों के विद्यार्थी शराबी, जुआरी, नहीं होते, उन्हें बुरे लोगों से दूर रखा जाता है, इसी लिए उनके विचार आध्यात्मिक होते हैं । संविधान में अपने धर्म के प्रचार और प्रसार की पूरी आज़ादी दी गयी है, मगर सरकार अल्पसंख्यकों के अधिकारों को पूरा करने में विभिन्न प्रकार से अड़चन

पैदा करती रहती है । एक तरफ़ तो वह शिक्षा को नागरिकों का मौलिक अधिकार कहती है, मगर दूसरी ओर उस पर अमल करते समय हज़ारों प्रकार से परेशान किया जाता है, कुछ फासीवादी शक्तियां मुसलमानों में फूट डालना और इस्लामी पहचान मिटाने का षड्यंत्र करती रहती हैं ।

सरकारी पक्ष किस तरह मुस्लिम छात्रों की उन्नति और प्रगति की राहों में अवरोध खड़ा करता है यह बात किसी भी नागरिक से छिपी नहीं है । आज़ादी के बाद से कुछ वर्षों तक तो ठीक ढंग से काम चलता रहा मगर बाद में साम्प्रदायिक शक्तियों द्वारा सभी बड़े-बड़े मुस्लिम शिक्षा संस्थाओं में अशांति पैदा करने के षड्यंत्र किये गये । स्कूल, कॉलेज को बंद करवायागया । वे नहीं चाहते कि मुसलमान पढ़-लिखकर सुख-चैन की ज़िन्दगी गुज़ारे ।

कुछ वर्ष पूर्व सी॰बी॰आई॰ द्वारा देश के हज़ारों मदरसों में छापे मारे गये । इनमें दारुल उलूम नदवातुल उलमा लखनऊ, दारुल उलूम देवबंद शामिल हैं । इसका उद्देश्य यह बताना है कि इन्हें आई॰एस॰आई॰ से मुस्लिम विद्यार्थियों को जोड़ा जा सके । मगर आश्चर्य की बात यह है कि सी॰बी॰आई॰ को पूरे देश में किसी मदरसे से एक भी कोई ठोस सबूत नहीं मिला, उस समय अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी परिसर में अकारण पुलिस बलों का प्रवेश और छात्रों की गिरफ़्तारी जैसी घटनाएं शैक्षिक माहौल को प्रभावित करती रही हैं । फिर भी पुलिस वालों पर कोई कार्रवाई नहीं की गयी ।

जब से भाजपा सत्ता में आयी है मुस्लिम संगठनों और मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं पर हाथ डालने के लिए आई॰एस॰आई॰ का बहाना ढूंढ़ा जाने का कार्यक्रम शुरू है । क्या ही अच्छा होता, के सरकार मुसलमानों को अनेक प्रकार से प्रताड़ित करने से बाज़ आती और उनकी उन्नति और प्रगति की राह में रुकावटें खड़ी न करती । किसी भी देश में जब तक वहां के अल्पसंख्यकों की पूरी तौर से उन्नति व प्रगति नहीं होती वहां अमन व शांति नहीं आ सकती । आई॰एस॰आई॰ के नाम पर जो देश में गिरफ़्तारियां की जा रही हैं और उस पर जुल्म-ज़्यादतियां सरकार की ग़लतियों और अक्षमता को कदापि छिपा नहीं पाएंगे । जनता की समस्याओं की ओर ध्यान देने के बजाय जनता का ध्यान दूसरी ओर उलझाकर सरकारें अपनी मुख्य ज़िम्मेदारियों से बचना चाहती हैं ।

हिंसा दमन और धौंस-पट्टी से न तो जनता की समस्या सुलझी है और न साफ़-सुथरे समाज का निर्माण संभव है । क्या सरकार समाज को भुखमरी भ्रष्टाचार और हिंसा युक्त नहीं बना रही है ? मैं केन्द्र सरकार के ज़िम्मेदार अधिकारियों, प्रेस व मीडिया के लोगों और देश के बुद्धिजीवियों से अनुरोध करूंगा कि वह देश के मदरसों में जाकर मदरसों के ज़िम्मेदार लोगों से मिलें और संपूर्ण मालूमात हासिल करें कि वहां विद्यार्थियों को क्या पढ़ाया जाता है । वह आप लोगों का समाधानपूर्वक मार्गदर्शन करेंगे । यह वही मदरसे हैं जहां पर मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, डॉ॰ ज़ाकिर हुसैन, डॉ॰ हिदायतुल्लाह, सर सैयद अहमद ख़ान, अल्लामा इक़बाल, मौलाना अलताफ़ हुसैन हाली, मौलाना शिब्ली नोमानी, मौलाना अलीमियां, मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान, मौलाना असद मदनी, मौलाना सैयद सुलैमान नदवी, मौलाना मुहम्मद अली, मौलाना शौकत अली जैसे हज़ारों लोग हैं जिन्होंने जंगे आज़ादी में और देश आज़ाद होने के बाद देश की एकता व अखंडता के लिए बड़ी क़ुरबानियां दीं हैं । यह ऐसे देश भक्त थे, जिन्होंने ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए काम करते रहे ।

वह शक्तियां जिनका देश की आज़ादी में कोई योगदान नहीं रहा है, आज उन मदरसों की ओर उंगलियां उठा रहे हैं, जिन मदरसों के विद्यार्थियों ने देश की आज़ादी के लिए अपना तन-मन-धन सब क़ुरबान कर दिया था ।

अब्दुल रशीद ख़ान
काजीपुरा, गंजीपेठ, नागपुर

बधाई

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन व मुसलमान विशेषांक पठनीय व संग्रहणीय बना है, हार्दिक बधाई । शुभकामना नववर्ष की करिएगा स्वीकार ।

नव उमंग उल्लास से भरा रहे ।

डॉ॰ अनिल शर्मा 'अनिल'
धामपुर, बिजनौर

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

हमारी पाठ्य पुस्तकें

आसान कहानियाँ	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 1	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 2	अफ़ज़ल हुसैन		10.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 3	अफ़ज़ल हुसैन		12.00
अख़लाक़ी कहानियाँ – 4	अफ़ज़ल हुसैन	[set 44.00]	12.00
क़ुरआन की बातें – 1(बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी		20.00
क़ुरआन की बातें – 2(बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी	[set 38.00]	18.00
नेक औरतें – 1	मतीन तरिक़ बाग़पती		15.00
नेक औरतें – 2	मतीन तरिक़ बाग़पती	[set 27.00]	12.00
नवीन सरल गणित – 1	सम्पादन समिति		30.00
नवीन सरल गणित – 2	सम्पादन समिति		35.00
नवीन सरल गणित – 3	सम्पादन समिति		50.00
नवीन सरल गणित – 4	सम्पादन समिति		50.00
नवीन सरल गणित – 5	सम्पादन समिति	[set 279.00]	114.00
प्यारे रसूल (सल्ल0)	अफ़ज़ल हुसैन		14.00
सामान्य ज्ञान (भाग – 1)	अफ़ज़ल हुसैन		08.00
सामान्य ज्ञान (भाग – 2)	अफ़ज़ल हुसैन	[set 18.00]	10.00
सच्चा दीन (पहला भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		55.00
सच्चा दीन (दूसरा भाग)	अफ़ज़ल हुसैन		60.00
सच्चा दीन (तीसरा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		75.00
सच्चा दीन (चौथा भाग)	मौलाना मुहम्मद यूसुफ इस्लाही		80.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

मानव-जीवन की सार्थकता और इस्लाम

■ जमीला आली जाफ़री

जब परमात्मा ने मनुष्य को महत्ता प्रदान की है तो उसका कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने स्रष्टा की 'इबादत' (उपासना) करे और उस ऊंचाई पर पहुंचे कि जहां ईश्वर का सच्चा प्रतिनिधित्व करके अपने अस्तित्व को सार्थक बना सके । अत: इस ऊंचाई तक पहुंचने के लिए प्रत्येक मुसलमान निम्नांकित पांच धार्मिक कृत्यों द्वारा अपने लक्ष्य की पूर्ति करता है–

1. तौहीद (एकेश्वरवाद)
2. नमाज़ अथवा सलात
3. रोज़ा (उपवास)
4. ज़कात (दान)
5. हज (तीर्थ)

1. तौहीद (एकेश्वरवाद)

इस्लाम शुद्ध तौहीद (एकेश्वरवाद) का दीन है । वह 'अल्लाह और 'बन्दे' के बीच 'पैग़म्बर' को मार्गदर्शक मानता है । इस्लाम पऱोहितवाद को स्वीकार नहीं करता । वह किसी साकार सत्ता को उपासना का आधार नहीं बनाता जिसको मनुष्य आध्यात्मिक चिंतन के क्षणों में आराध्य की भांति बसाकर अपना सारा ध्यान और शक्ति उस पर केन्द्रित कर दे और उसमें तन्मय हो जाए । इसमें चित्र या मूर्ति जैसे किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं है । 'इस्लाम एक ऐसा दीन है जो विचारों की पवित्रता, चिंतन की ऊंचाई, संकल्प और इच्छा की निर्मलता, ईश्वर के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से विरक्ति, कर्मनिष्ठा तथा चिंतन और विश्वास के उस धरातल पर स्थित है कि उससे उत्तम मानदंड और ऊंचा धरातल सोचा नहीं जा सकता ।

इस्लाम में 'अल्लाह' धरती और आकाश का सम्राट सर्वज्ञाता अत्यंत उदार, क्षमाशील, करुणामय और कृपाशील है । वह सर्वशक्तिमान शासक, स्रष्टा, पालनकर्ता बन्दों के लिए जीवन की सुख-सुविधाएं प्रदान करने वाला और एक है । उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है । 'ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' (नहीं है कोई माबूद मगर अल्लाह, मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं ।) तौहीद की आधारशिला है । यही मुसलमानों के दीन का मूल-मंत्र है । इस्लाम में तौहीद को छोड़ कर 'शिर्क' एवं बहुदेववाद को स्वीकार करना वर्जित है । शिर्क ओर अनेकेश्वरवाद मनुष्यों की कल्पना मात्र के द्योतक है । शिर्क के कारण मनुष्य का ध्यान ईश्वर के संबंध में दुर्बल हो जाता है । अल्लाह और बन्दे का रिश्ता टूट जाता है । इसलिए इस्लाम में शिर्क को बहुत बड़ा गुनाह (पाप) माना गया है ।

2. नमाज़ अथवा 'सलात'

नमाज़ इस्लाम की रीढ़, दीन का स्तंभ, मोक्ष की शर्त, ईमान की रक्षक और पवित्रता की नींव है । दिन में पांच बार नमाज़ पढ़ने का आदेश है । यह निश्चित समय में 'अल्लाह' का स्मरण है । इस व्यवस्था का पालन करते हुए मुसलमान पांच बार खुदा के सामने उपस्थित हो पाप-कर्म से बचने की प्रार्थना और सच्चाई के मार्ग पर अग्रसर होने की सामर्थ्य संचित करता है । यह सफलता की कुंजी है । ईश्वर की 'इबादत' का विधान है । नमाज़ प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह स्वतंत्र हो या दास, धनवान हो या दरिद्र, रोगी हो या निरोग, यात्री हो या स्थायी रूप से रहने वाला सब पर प्रत्येक परिस्थिति में अनिवार्य है । कोई भी वयस्क व्यक्ति किसी भी स्थिति में इससे मुक्त नहीं हो सकता । विशेष परिस्थितियों में 'क़ज़ा' द्वारा नमाज़ पूरी की जा सकती है । ज़कात, रोज़ा हज के संबंध में कुछ शर्तों के उपरांत छूट मिल जाती है या उसमें कुछ रियायत की आज्ञा है, किन्तु नमाज़ के लिए ऐसी कोई गुंजाइश नहीं है । यहां तक कि मैदान-ए-जंग में भी नमाज़ फ़र्ज़ है ।

नमाज़ ऐसा अमल है, जिसमें शरीर, बुद्धि और हृदय सम्मिलित होते हैं और इन तीनों में दर्शन और विवेक का सुन्दर सामंजस्य विद्यमान होता है । शरीर के हिस्से में क़याम, (खड़ा होना), रुकूअ (घुटने पर हाथ रखकर झुकना) और सजदा (ज़मीन पर सर टेकना) आया है । जिह्वा के हिस्से में तिलावत (कुरआन शरीफ़ की आयतें पढ़ना) और तस्बीह (ईश्वर की महानता का वर्णन करना)

आयी है । बुद्धि के हिस्से में चिंतन और हृदय के हिस्से में ईश्वर के प्रति तन्मयता और भक्तिभाव से हृदय का द्रवित होना आया है । दिन में पांच बार की नमाज़ के अतिरिक्त ईद, बक़रीद, सूर्य या चन्द्र ग्रहण, विपत्ति, मरण आदि के समय भी नमाज़ क़ायम की जाती है । रमज़ान के महीने में तरावीह की नमाज़ पढ़ी जाती है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा है–'सबसे पहली चीज़ जिसका क़ियामत के रोज़ बंदे से हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है । अगर यह ठीक रही तो वह कामयाब हुआ और अगर यह ख़राब निकली तो नाकाम और नामुराद हुआ । अगर उसके फ़राइज़ में कुछ कमी नज़र आएगी तो अल्लाह तआला कहेगा कि देखो मेरे बन्दे के नामए-आमाल में कुछ नफ़्ली नमाज़ें हैं । फिर उससे फ़राइज़ की कमी को दूर कर दिया जाएगा और बाक़ी आमाल के साथ भी यही मामला होगा ।



इस प्रकार इस्लाम में नमाज़ की महत्ता अन्य सिद्धांतों की अपेक्षा अधिक है ।

3. रोज़ा (उपवास)

मनुष्य ईश्वर की विलक्षण रचना है । वह शरीर और आत्मा का समन्वित रूप है । यदि आत्मा का प्रभाव शरीर की अपेक्षा अधिक हुआ तो मनुष्य सांसारिक जीवन से कटकर भगवद् भक्ति में लीन हो जाता है और यदि शरीर को आत्मा की तुलना में अधिक महत्व दिया जाए तो मनुष्य ऐश्वर्य प्रेमी बन जाता है । अत: इस्लाम ने मनुष्य को इस दलदल से बचाने के लिए 'रमज़ान' माह के रोज़े अनिवार्य कर दिये हैं । क़ुरआन शरीफ़ में मुसलमानों पर 'रोज़ा' फ़र्ज़ किया गया है ।

इसका उद्देश्य मनुष्य के आध्यात्मिक और नैतिक विकास के साथ हृदय और आत्मा की शुद्धि है । यह मनुष्य को धर्मपरायण और संयमी बनाता है । 'रोज़े' की स्थिति में वह बहुत-सी बुराइयों और अवज्ञाओं से बच जाता है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की हदीस के अनुसार रोज़ा (जीवन संघर्ष में) एक ढाल है ।

सूर्योदय से आधा घंटा पूर्व 'सहर' के समय से सूर्यास्त तक अन्न जल आदि त्याज्य है । इस स्थिति में पांच वक़्त की नमाज़ के अतिरिक्त ध्यान, ज्ञान और क़ुरआन की तिलावत पर विशेष बल दिया गया है । इस प्रकार शरीर और हृदय को विभिन्न प्रकार की बुराइयों से मुक्त रखने का विधान है । सूर्यास्त होने पर रोज़ा खोलते या 'इफ़्तार' करते हैं । प्रत्येक वयस्क पर रोज़ा फ़र्ज़ है । विशेष परिस्थितियों में धार्मिक शर्तों के साथ 'रोज़े' के स्थान पर अन्य अनुष्ठानों का आदेश दिया गया है, जिनकी पूर्ति के उपरांत मनुष्य अपने 'फ़र्ज़' से उऋण हो सकता है ।

4. ज़कात (दान)

इस विश्व में मनुष्य की सुख-सुविधाओं के लिए ईश्वर ने विविध प्रकार की वस्तुएं निर्मित की है । विश्व की संपूर्ण वस्तुएं केवल मुट्ठी भर लोगों के अधिकार में न रहें इसलिए उसने ऐसे नियम बना दिये हैं जिनका पालन करते हुए प्रत्येक मनुष्य आवश्यक और जीवनोपयोगी वस्तुओं को दूसरों तक पहुंचा सके । यह विधि मनुष्यों में परस्पर प्रेम और त्याग की भावना को बल प्रदान करती है । इसके लिए इस्लाम में ज़कात ख़ुम्स, ख़ैर-ख़ैरात और सदक़े का विधान है । इसके द्वारा मनुष्य का इहलोक और परलोक दोनों में उद्धार होता है । इनमें से ख़ैर-ख़ैरात नेकी की अलामत होते हुए भी अनिवार्य नहीं है, किन्तु क़ुरआन में धन-संपत्ति पर ख़ुम्स (5वें हिस्से) और ज़कात (40वें हिस्से) की अनिवार्यता घोषित की गयी है । यह ईश्वर प्रदत्त वस्तुओं के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति, विभिन्न प्रकार की बुराइयों से मुक्ति एवं मन-मस्तिष्क की शुद्धि का साधन है । ईश्वर की कृपापात्र बनने के लिए ज़कात देना आवश्यक है ।

वर्ष में एक बार 'ज़कात' देना आर्थिक दृष्टि से संपन्न (साहिबे निसाब) मुसलमान के लिए 'फ़र्ज़' है । इसकी मात्रा विभिन्न प्रकार की वस्तुओं (कृषि और उपवन, पशु,

बहुमूल्य वस्तुएं, व्यापार, नौकरी आदि) पर निर्धारित कर दी गयी है । कृषि और उपवन से संबंधित ज़कात उत्पत्ति के उपरांत दी जाती है । अचानक प्राप्त होने वाले लाभ पर वर्ष व्यतीत होने की प्रतीक्षा किये बिना तुरंत खुम्स अर्थात पांचवां हिस्सा देना आवश्यक है । जिस उपलब्धि के लिए मनुष्य स्वयं परिश्रम करता है उस पर उश्र या दसवां हिस्सा दिया जाता है ।

5. हज

'हज' का अर्थ है तीर्थ-दर्शन करना । 'हज' एक 'इबादत' है, जिसमें मनुष्य अल्लाह के घर अर्थात काबा के दर्शन करने की इच्छा से मक्के जाता है । 'हज-ए-बैतुल्लाह' ईश्वर के प्रति अपार श्रद्धा, प्रेम, बंदगी और ईश-प्रशंसा का द्योतक है । काबा अल्लाह की इबादत का केन्द्र और शांति का स्थान है । परिस्थति, अर्थ और स्वास्थ्य की दृष्टि से संपन्न व्यक्ति पर हज फ़र्ज़ है । कुरआन में हज के महत्व की व्यापक चर्चा की गयी है । काबा दर्शन से अल्लाह के स्मरण के साथ बहुत-सी विस्मृत घटनाएं जीवन के साथ पुनः जुड़ जाती हैं ।

यह अल्लाह की बहुमूल्य देन, धरोहर और निशानी–तौहीद और रसूलों के जिहाद और सब्र-का द्योतक है । हज इस्लामी राष्ट्रीयता की विजय का प्रतीक है जहां सारे भेद मिटकर केवल एकता शेष रहती है । यहां पहुंच कर समस्त इस्लामी जातियां अपनी जातीय और राष्ट्रीय वेशभूषा को जो उनकी विशेष पहचान है, जिससे जातिगत विषमता उत्पन्न होती है त्याग कर एक-सा लिबास धारण करती हैं जिसे 'अहराम' कहा जाता है । सब मिलकर बड़ी नम्रता और विनय के साथ एक भाषा में एक तराना और एक नारा लगाते हैं–'अल्लाहुम्मा लब्बैक-लब्बैक ला शरीक लका लब्बैक-इन्नल हम्द वन्नेमता लका वल मुल्क ला शरीक लका ।'

(हाज़िर हूं, ऐ अल्लाह ! मैं तेरे हुज़ूर हाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं । मैं तेरे हुज़ूर हाज़िर हूं । निश्चय ही प्रशंसा तेरे ही लिए है । सारे उपकार तेरे ही हैं । बादशाही सर्वथा तेरी है । तेरा कोई शरीक नहीं ।)

अस्तु, उक्त पांच धार्मिक अनुष्ठानों पर इस्लाम की बुनियाद निर्भर है । इसके द्वारा व्यक्ति अंतर्जगत और बहिर्जगत दोनों में संतुलन स्थापित करने की अपूर्व क्षमता उत्पन्न कर लेता है ।

राजनीतिक और आर्थिक परिवेश

कुरआन में इस्लाम का राजनीति विषयक मौलिक दृष्टिकोण क़ानून और आज्ञापालन, ख़िलाफ़त, मंत्रणा परिषद, संविधान के मूल सिद्धांत, राज्य का उद्देश्य, मूल अधिकार, विदेश नीति और जिहाद संबंधी व्यापक निर्देश विद्यमान हैं । इस्लाम ईश्वर और मनुष्य तथा संसार में मनुष्य के पारस्परिक संबंध की व्याख्या का नाम है । वह मनुष्य को इन्हीं दुहरे संबंधों के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चलने का निर्देश देता है । मनुष्य के मन, वचन और कर्म का प्रत्येक क्षेत्र इस्लाम की दृष्टि में है । ऐसे कार्य जो मनुष्य और ईश्वर के संबंध को दुर्बल बना दें या उसके पारस्परिक संबंधों को तोड़ दें, इस्लाम उनको अनुचित मानता है तथा उनकी अपेक्षा ऐसे आचरण पर बल देता है जो मनुष्य और ईश्वर तथा मनुष्यों के पारस्परिक संबंध को दृढ़ बनाए ।

ईश्वर सृष्टि का निर्माता भी है, शासक और अधिकारी भी । मनुष्य उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है । विश्व की समग्र वस्तुएं उसी (मनुष्य) के प्रयोग एवं सुख-सुविधा के लिए है । मनुष्य द्वारा इन वस्तुओं का प्रयोग विविध प्रकार की कला और विज्ञान का मूल स्रोत है । इसकी नींव इस्लाम में प्रतिपादित दुहरे संबंध पर आधारित है । यही स्थिति इस्लाम में निर्देशित अर्थव्यवस्था की है । इस संबंध में कुरआ और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने विविध प्रकार के सिद्धांत और नियमों पर प्रकाश डाला है । इसी पूर्व निर्धारित आर्थिक व्यवस्था के कारण इस्लामी अर्थशास्त्र गूढ़ और जटिल न होकर अत्यंत स्पष्ट और सीधा है ।

ईश्वर ने मनुष्य को जीविका निर्वाह के साधन प्रदान किये । इसकी ज़िम्मेदारी ईश्वर पर है । अतः ईश्वर से संबंध बनाए रखना मनुष्य का परम कर्तव्य है । जो मनुष्य ईश्वर से संबंध बनाए रखता है निश्चित है कि वह अन्य मनुष्यों से भी संबंध बनाए रखेगा और इस संबंध की रक्षा के लिए वह बहुत-सी दोषपूर्ण स्थितियों से बच सकेगा । परस्पर संबंधों के प्रति यह जागरूकता वर्गगत विषमताओं से जीवन और राष्ट्र को मुक्त करती है ।

संपत्ति एकत्र करना और उसे ख़र्च न करना अनुचित है । इस्लाम इसका विरोधी है । पूंजी एकत्र करना, छिपाना आदि कृत्य इस्लामी सिद्धांतों के प्रतिकूल हैं । इससे जीवन की समुचित व्यवस्था में विघ्न पड़ता है, ईश्वर और मनुष्य के आध्यात्मिक संबंध तथा मनुष्य-मनुष्य के सांसारिक

संबंधों का तारतम्य समाप्त होता है । इस्लाम परिश्रम द्वारा धनोपार्जन ही को मान्यता प्रदान करता है । यही कारण है कि उसमें ब्याज, जुआ आदि का भी निषेध है । धनोपार्जन एवं व्यय के औचित्य के संबंध में हदीस की यह पंक्ति उल्लेखनीय है–

'आदमी से पूछा जाएगा कि माल किन ज़राए से उसने हासिल किया और किन राहों पर ख़र्च किया ।' यह पहले कहा जा चुका है कि ईश्वर स्रष्टा और शासक है । संपूर्ण सृष्टि का विस्तार मनुष्य के लिए है । ईश्वर प्रदत्त वस्तुओं के प्रयोग में ऊंच-नीच, अमीर-ग़रीब, जाति-पाति जैसी विषमताओं का प्रश्न ही नहीं उठता । इस्लाम में प्रतिपादित भ्रातृत्व भावना इसी आर्थिक सिद्धांत पर आधारित है ।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य

कुरआन में इस्लामी सामाजिक व्यवस्था और सदाचार संबंधी शिक्षा का मूल स्रोत निहित है । उसमें भ्रातृत्व भावना, प्रेम-त्याग, उचित-अनुचित, कर्तव्य-अकर्तव्य तथा सामाजिक व्यवस्था संबंधी व्यापक निर्देश उपलब्ध होते हैं । मनुष्य को दुर्गुणों से मुक्त करना, उनमें नैतिक गुणों का विकास करना, माता-पिता तथा अन्य संबंधी, अनाथ अपाहिज और पड़ोसियों के प्रति कर्तव्य, दंपत्ति का उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन और आदर्श, रहन-सहन तथा शिष्टाचार के तौर-तरीक़े सिखाना कुरआन के उपदेशों का लक्ष्य है जिसके अभाव में जीवन और समाज की व्यवस्था परिपूर्ण नहीं होती । एक उन्नत और सुगठित जीवन तथा सामाजिक व्यवस्था के लिए उक्त आदेशों का पालन करना अनिवार्य हो जाता है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तथा उनके उत्तराधिकारी जो चार ख़लीफ़ा हुए हैं उनके युग में सामाजिक जीवन का स्वरूप इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर सुगठित हुआ था ।

अत: संक्षेप में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा प्रस्तुत की गयी आध्यात्मिक एवं नैतिक विचारधारा 'इस्लाम' उसके अनुयायी 'मुसलमान' और उसकी संस्कृति 'इस्लामी संस्कृति' कहलाती है । इस्लामी संस्कृति से तात्पर्य ऐसे समाज की जीवन पद्धति से है जिसका रहन-सहन, खान-पान, वेष-भूषा, आचार-विचार, रीति-नीति, धर्मदर्शन, राजनीति, अर्थव्यवस्था, साहित्य, कला, विज्ञान आदि कुरआन और हदीस द्वारा निर्दिष्ट हों । विश्व में इस्लाम एक ऐसा प्रवृत्तिमूलक धर्म प्रमाणित हुआ कि जिसके अंतर्गत जीवन के आध्यात्मिक परिष्कार के साथ-साथ सांसारिक जीवन में संतुलित सुरुचिपूर्ण आचरण पर बल दिया गया है । इस्लाम ऐहिक एवं आध्यात्मिक जीवन के बीच संतुलन स्थापित करता है । वह न तो हमें निवृत्ति मार्ग को अपना कर एकांतवास करते हुए देवता तुल्य बनने की प्रेरणा देता है और न वह इसका प्रशंसक है कि कोई व्यक्ति सांसारिक भोग में संलग्न होकर दैत्य तुल्य आचरण करने लग जाए । संयमित और संतुलित जीवन ही इस्लामी जीवन का आधार है ।

बिहार में शराबबन्दी

(पृष्ठ 8 का शेष)

इन शब्दों में की है, ''ख़म्र उस चीज़ को कहते हैं जो बुद्धि पर परदा डाल दे ।'' शराब मन-मस्तिष्क को सर्वाधिक प्रभावित करती है और बुद्धि को नष्ट कर डालती है । डॉ० ई० मैक्डोवेल कासग्रेव (एम०डी०) के अनुसार,''अल्कोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देती है ।'' इस्लाम ने हर प्रकार की शराब ही को हराम नहीं किया है, बल्कि इसके अन्तर्गत हर वह चीज़ आ जाती है जो नशावर हो और मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति को नष्ट करे या उसे क्षति पहुंचाए । इस अवसर पर इस बात का भी ध्यान में रखने की ज़रूरत है कि मनुष्य का जिस चीज़ के कारण समस्त प्राणियों में विशिष्ट और प्रतिष्ठित एवं केन्द्रीय स्थान दिया गया है, वह वास्तव में उसकी सोचने-समझने और सत्य-असत्य और भले-बुरे में अन्तर करने की क्षमता है । अब यह स्वाभाविक बात है कि जिस चीज़ या काम से मनुष्य की इस क्षमता और योग्यता को आघात पहुंचा हो या उसके पूर्ण रूप से क्रियाशील होने में बाधा उत्पन्न होती हो, उसको मनुष्य का निकृष्टतम शत्रु समझा जाए । शराब चूंकि मस्तिष्क को स्वाभाविक रूप से कार्य करने में रुकावट डालती है और उसकी तर्कशक्ति को शिथिल करके मनुष्य को मानवता से ही वंचित कर देती है, इसलिए उसे मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु घोषित करना बिल्कुल उचित ही है । कुरआन मजीद में शराब के विषय में जो कुछ कहा गया है उसका स्पष्टीकरण अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०), के बहुत से कथनों से भी होता है । आपने कहा है, 'प्रत्येक मादक चीज़ 'ख़म्र' है और प्रत्येक मादक चीज़ हराम है ।' 'वह हर पेय जो नशा पैदा करे, हराम है और मैं हर मादक चीज़ से वर्जित करता हूं ।'

अल्लाह की राह में माल ख़र्च करना

■ श्याम नारायण चौहान
(चंदौली, उ०प्र०)

जब हम क़ुरआन पाक की तिलावत शुरू करते हैं तो पहली सूरह "अल-फ़ातिहा (प्रार्थना) के बाद वाली सूरह में पहले ही यह आयत सामने पड़ती है–

(1) अलिफ़-लाम-मीम (यह अल्लाह की किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं । हिदायत है उन परहेज़गार लोगों के लिए (3) जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं जो रोज़ी हमने उनको दी है उसमें से ख़र्च करते हैं ।

दुनिया की ज़िन्दगी में सीधे रास्ते पर चलने के लिए आवश्यक तीन शर्तें हैं–

1. ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाना ।
2. नमाज़ क़ायम करना ।
3. जो रोज़ी अल्लाह ने दिया है उसमें से उसकी राह में ख़र्च करना ।

दूसरी जगह है–"तुम नेकी के मक़ाम को नहीं पहुंच सकते जब तक कि अपनी वे चीज़ें (अल्लाह की राह में) ख़र्च न करो जिन्हें तुम प्रिय रखते हो और जो माल तुम ख़र्च करोगे अल्लाह उससे बेख़बर न होगा ।" (3:92)

दुनिया में इन्सान के लिए ज़िन्दगी बसर करने के दो रास्ते हैं । एक रास्ता ख़ुदा का है जिसमें नेकी और भलाई और फ़लाह और कामयाबी है इस रास्ते का क़ायदा यह है कि आदमी का दिल खुला हो जो रिज़्क़ भी थोड़ी या बहुत अल्लाह ने दिया हो उससे ख़ुद अपनी ज़रूरतें भी पूरी करे और अपने भाइयों की भी मदद करे और अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने के लिए भी ख़र्च करे । दूसरा रास्ता शैतान का है जिसमें बज़ाहिर तो आदमी को फ़ायदा ही फ़ायदा नज़र आता है, लेकिन हक़ीक़त में हलाकत और बरबादी के सिवा कुछ नहीं और उस रास्ते का क़ायदा यह है कि आदमी दौलत समेटने की कोशिश करे पैसे-पैसे पर जान दे और उसे दांतों के बल पकड़कर रखे कि ख़र्च न होने पाये और ख़र्च हो भी तो बस अपने व्यक्तिगत फ़ायदों और अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात पर हो ।

ख़ुदा की राह पर चलने वालों के लिए ख़ुदा की राह में ख़र्च करने के निम्न तरीक़े हैं–

1. अल्लाह की ख़ुशनुदी के लिए

अपने माल ख़र्च करने में ख़ुदा की प्रसन्नता और उसकी ख़ुशनुदी मतलूब हो । किसी को एहसानमन्द बनाने या अपने नाम निहाद के लिए नहीं देना चाहिए । जैसा कि क़ुरआन में है–

"और भलाई के रास्ते में जो माल तुम लोग ख़र्च करते हो वह तुम्हारे अपने लिए भला है आख़िर तुम इसी लिए तो ख़र्च करते हो कि अल्लाह की प्रसन्नता मिल जाए । तो जो कुछ माल भलाई के रास्ते में ख़र्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जाएगा और तुम्हारा हक़ कदापि न मारा जाएगा ।" (2:272)

2. एहसान न जताया जाए

किसी ज़रूरतमन्द आदमी को पैसा देकर, रोटी खिलाकर कपड़ा पहनाकर उस पर अपना एहसान न जताना चाहिए और ऐसा बर्ताव भी न किया जाए कि उसके दिल को तकलीफ़ पहुंचे । जैसा कि क़ुरआन पाक में है–

"जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं और ख़र्च करके फिर एहसान नहीं जताते न दुख देते हैं, उनका बदला उनके रब के पास है और उनके लिए किसी रंज और भय का मौक़ा नहीं ।" (2:262)

3. बेहतर माल दिया जाए

ख़ुदा की राह में अच्छा माल दिया जाए बल्कि अपनी प्रिय चीज़ को बिना हिचक दान कर दी जाए । जो तुम कपड़ा पहनते हो जो तुम खाते हो उसी तरह का माल दिया करो न कि ग़रीब समझकर उन्हें पुराने कपड़े या घटिया माल छांटकर दो । जैसा कि क़ुरआन मजीद में है–

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो जो माल तुमने कमाये हैं और जो कुछ हमने धरती से तुम्हारे लिए निकाला है उसमें

से बेहतर हिस्सा अल्लाह की राह में ख़र्च करो ऐसा न हो कि उसकी राह में देने के लिए बुरी से बुरी चीज़ छांटने की कोशिश करने लगो हालांकि वही चीज़ अगर तुम्हें कोई दे तो तुम कदापि उसे लेना पसन्द न करोगे ।

(कुरआन, 2:267)

4. जहां तक संभव हो छुपाकर दिया जाए

जहां तक संभव हो कोई चीज़ छुपाकर देना चाहिए लोगों को दिखाकर देने में समाज में लोग उसे हकीर व कमतर समझने लगेंगे जिससे उसके व्यक्तित्व पर बुरा असर पड़ेगा इसलिए अगर छुपाकर दिया जाए तो यह उससे बेहतर है । जैसा कि कुरआन में है–

"अगर अपने सदक़े एलानियां दो तो वह भी अच्छा है लेकिन अगर छुपाकर ज़रूरतमन्दों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है । तुम्हारी बहुत-सी बुराइयां इस तरह मिट जाती हैं और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को बहरहाल उसकी ख़बर है । (2:271)

5. नादान लोगों को ज़रूरत से ज़्यादा न दिया जाए

अल्पबुद्धि और नादान लोगों को ज़्यादा माल देने पर बिगड़ जाएंगे, उनकी आदतें ख़राब हो जाएंगी इसलिए उनकी हैसियत के अनुसार ही दिया जाए । अल्लाह यह चाहता है कि उनका पेट भरने के लिएउ खाना तथा पहनने के लिए वस्त्र बुरे से बुरे और बदकार से बदकार को भी मिलना चाहिए, मगर शराबनोशी, गांजा एवं जुए खेलने के लिए उन्हें पैसा न दिया जाना चाहिए । जैसा कुरआन में है–

"और अपने वे माल जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़िन्दगी बाक़ी रखने का साधन बनाया है नासमझ लोगों के हवाले न करो । हां उन्हें खाने और पहनने के लिए दो और उनकी अच्छी रहनुमाई करो ।" (4:5)

6. क़र्ज़दार को परेशान न किया जाए

किसी ग़रीब आदमी को क़र्ज़ देकर उससे अपने पैसे वापस लेने के लिए तक़ाज़े पर तक़ाज़े करके उसे परेशान नहीं करना चाहिए जिससे उसे सदमा और उसका दिल दुखित न हो । जैसा कि कुरआन पाक़ में है–

"तुम्हारा क़र्ज़दार तंगदस्त हो तो हाथ खुलने तक उसे मोहलत दो और जो सदक़ा कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है अगर तुम समझो ।" (2:280)

7. दान में मध्य मार्ग

आदमी को ख़ैरात (दान) करने में भी हद से नहीं गुज़रना चाहिए । अल्लाह तआला नहीं चाहता कि तुम अपने बाल बच्चों का पेट काटकर सब कुछ दान दे डालो बल्कि उसकी मंशा यह है कि सादा जीवन बिताने के लिए जितनी ज़रूरत इन्सान को होती है उतना अपनी जात पर और बाल बच्चों की परवरिश पर ख़र्च किया जाए और उससे जो बचे उसे अल्लाह की राह में ख़र्च किया जाए । जैसा कि कुरआन पाक में है–"पूछते हैं हम अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करें ? कहो जो कुछ तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा हो । इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ आदेश देता है शायद कि तुम दुनिया और आख़िरत (लोक और परलोक) दोनों की चिंता करो । (2:219)

पैग़म्बर (सल्ल०) की शान में गुस्ताख़ी करने वाला गिरफ़्तार

सियासी संरक्षण के कारण देश में सक्रिय फासीवादी आतंकी उग्रवादी समूहों के हौसले बुलंद हैं । पिछले दिनों एक आतंकी संगठन के नेता ने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में अपमानजनक शब्द कहे थे । नया मामला एक और उग्रवादी के बयान के रूप में सामने आया है । एक युवती गुमशुदगी पर हुई कांधला महापंचायत में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शान के ख़िलाफ़ आपत्तिजनक टिप्पणी करने के आरोपी स्वामी यशवीर को पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया । पुलिस ने उसे कोट में पेश किया ।

दिसम्बर को कांधला में महापंचायत में आतंकी स्वामी यशवीर ने पैग़म्बर पर तल्ख़ टिप्पणी कर दी थी । इसके बाद से हंगामा खड़ा हो गया था । कांधला थाने में स्वामी यशवीर के ख़िलाफ़ रिपोर्ट दर्ज की गयी । इसके बाद वह भूमिगत हो गया । इस बीच, पुलिस ने स्वामी यशवीर के भतीजे को गिरफ़्तार कर जेल भेज दिया था । स्वामी यशवीर को जाट कॉलोनी स्थित उग्रवादियों की राजनीतिक शाखा भाजपा नेता उमेश मलिक के आवास से गिरफ़्तार कर लिया । पुलिस ने रिमांड मजिस्ट्रेट जितेंद्र कुमार के समक्ष स्वामी यशवीर को पेश किया । कोर्ट ने स्वामी यशवीर को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया ।

प्राकृतिक आपदाओं से शिक्षा

❖ ज़हीर ललितपुरी

अल्लाह ने इन्सानियत को पैदा करने से पहले से ही उसकी सुविधा और ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए उसकी हर तरह की ज़रूरत को पूरा करने के लिए कायनात को पैदा कर दिया था जो इस बात का सबूत है कि अल्लाह इन्सानियत से बेपनाह मुहब्बत करता है । लेकिन वह जिस मख़लूक़ को उसने पैदा किया, उसकी आज़माइश के लिए उसे सही रास्ते पर चलाने के लिए और उसकी कामयाब ज़िन्दगी के लिए कभी सुख देता है, कभी दुख भी । वह आसमानी आफ़तों, दैवीय आपदाओं, कुदरत के कहर, जैसे बाढ़, सूखा, ओलावृष्टि, बज्रपात, अकाल, महामारी, ज्वालामुखी, ज़लज़लों, आंधी-तूफ़ान, सुनामी आदि को अपनी मख़लूक़ की भलाई का ज़रिया भी बनाता है । इसलिए इन्सान को इन आफ़तों के दौर में डरना और घबराना नहीं चाहिए । इस्लाम धर्म में जिस तरह सुख के अच्छे दिनों में अल्लाह का शुक्र अदा करने व उसकी इबादत करने का हुक्म में दिया गया है उसी तरह मुसीबत के बुरे दिनों में भी अल्लाह को याद करने, उसकी इबादत करने और मुसीबतों से निजात के लिए उससे दुआ करने का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है ।

आसमानी, आफ़तें, दैवीय आपदाएं, कुदरत के क़हर, जैसे बाढ़, सूखा, अकाल, महामारी, ज्वालामुखी, भूकंप, आंधी-तूफ़ान, सुनामी आदि हर दौर में इन्सानियत के सामने नयी-नयी चुनौतियां पेश करते रहे हैं । जब से इन्सानियत वजूद में आयी है, तभी तो उसे इन मुसीबतों से मुक़ाबला करना पड़ा । इनसे बचना या इनको रोकना इन्सान के लिए हमेशा मुश्किल रहा है । उसने कभी रोकर तो कभी मुस्करा कर इनका सामना किया है । उसने अपनी बुद्धि और ज्ञान के आधार पर इनके नतीजे में उत्पन्न प्रभावों से बचने के रास्ते भी खोजे हैं । भारत जैसे आध्यात्मिक व धर्म प्रेमी देश के नागरिक अपनी-अपनी आस्थाओं, विश्वास एवं परंपराओं के अनुसार अनुष्ठान व प्रार्थनाएं करके इनके प्रभावों से



मुक्ति पाने की कामना करते हैं । आख़िरी ईश्वरीय धर्म इस्लाम की शिक्षाओं, आस्थाओं और विश्वास के अनुसार यह बताया गया है कि आसमानी आफ़तों से डरने व घबराने के बजाय इनसे सबक़ और नसीहत हासिल करना चाहिए तथा ईश्वर की इबादत व इन्सानी सूझबूझ के ज़रिये इन मुसीबतों से उत्पन्न प्रभावों को रोकना या उनका मुक़ाबला करना चाहिए ।

हालांकि एक इन्सान आसमानी आफ़तों को कभी अच्छा नहीं मान सकता और उनका हंस कर स्वागत नहीं कर सकता । क्योंकि जब भी कोई आसमानी आफ़त किसी इलाक़े में बसने वाले इन्सानों को तबाह और बर्बाद करती है, उससे सिर्फ़ उस इलाक़े के लोग ही नहीं बल्कि सारी इन्सानियत प्रभावित होती है । हमारे मुल्क भारत में हर साल किसी न किसी आसमानी आफ़त से नागरिकों को दो-चार होना पड़ता है । इस साल भी कुछ राज्यों में ख़ूब बरसात होने के बावजूद कई राज्यों में कमज़ोर मानसून के कारण सूखा पड़ने की आशंका पैदा हो गयी है । उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और आंध्र प्रदेश में मानसून की आंख-मिचोली की ख़बरों का प्रभाव खाद्य वस्तुओं की क़ीमतों पर दिखने लगा है । हालांकि मंहगाई पहले से चरम सीमा पर है लेकिन सूखे की आशंकाओं की

वजह से अनाज, दाल, खाद्य तेल, चीनी और हरी सब्ज़ियों के दाम और तेज़ी से बढ़ गये । सूखे की आशंकाओं की वजह से भारत की जनता बहुत परेशानी व तनाव महसूस कर रही है क्योंकि इस वजह से ग़रीबी और बेरोज़गारी बढ़ सकी है और बीमारियां इन्सान को परेशान कर सकती हैं । हालांकि अमेरिका जैसे विकसित व सुविधा सम्पन्न देश को भी इस मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है ।

ख़बरों के मुताबिक़ इस साल अमेरिका सदी के सबसे भीषण सूखे की चपेट में है । बी॰बी॰सी॰ की एक रिपोर्ट के अनुसार एन॰ओ॰ ए॰ए॰ ने 16.07.12 को बताया कि जून के अंत तक अमेरिकी महाद्वीप का 55 फ़ीसदी हिस्सा औसत से गंभीर सूखे की चपेट में था । अमेरिका के कृषि विभाग के अनुसार 26 राज्यों की 1000 काउंटी यानी स्थानीय निकायों ने सूखे की वजह से आपदा घोषित कर दी है ।

सूखे का असर फ़सलों पर पड़ा है । कई जगहों पर दावानल यानी जंगल की आग के प्रकोप से जंगल तबाह हो गये हैं । अमेरिकी मौसम विज्ञान नेशनल ओसियानिक एंड एडमिनिस्ट्रेशन (एन॰ओ॰ए॰ए॰) के अनुसार वर्ष 1956 के बाद से यह सबसे बड़ा सूखा है । इस सूखे की वजह से मक्के और सोयाबीन की फ़सल बुरी तरह प्रभावित हुई । यहां तक कि कई राज्यों में स्थित जंगलों में आग लगी हुई है रिपोर्ट के अनुसार पिछले दिनों ख़बर थी कि नौ राज्यों में 19 स्थानों पर भीषण आग लगी हुई है । अमेरिका गेहूं, सोयाबीन और मक्के का सबसे बड़ा निर्यातक देश है, इसलिए इस सूखे से दुनिया भर में अनाज उपलब्धता पर असर पड़ सकता है । इस संबंध में पहले ही चिंता ज़ाहिर की जा चुकी है । अतः जनता का घबराना स्वाभाविक है क्योंकि दुनिया के दो बड़े देशों का सूखा मौसम दुनिया के तमाम देशों में अपना असर छोड़ सकता है । अमेरिका वैज्ञानिक रूप से उन्नतिशील व आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न देश है । उसके पास आसमानी आफ़तों से निबटने के लिए तरह-तरह के संसाधन मौजूद हैं । लेकिन सूखे का शिकार होने पर वह भी प्रभावित हो रहा है और उसके साथ-साथ दुनिया के दूसरे मुल्क के लोग भी उसके प्रभाव से अछूते नहीं हैं ।

उसके सूखे के चपेट में आने पर या दुनिया में किसी भी इलाक़े में कोई आसमानी आफ़त आने पर अल्लाह की तरफ़ क़दम बढ़ाने और उसके दीन के इस सिलसिले में दी गयी रहनुमाई को समझ कर उससे फ़ायदा उठाने की ज़रूरत है । क्योंकि दुनिया के हर इन्सान को अल्लाह ने पैदा किया है, हर इन्सान अल्लाह का बन्दा है और वह अपने हर बन्दे की सच्ची भलाई चाहता है । वह सुख देकर भी इन्सान का भला करता है और मुसीबत में डालकर भी । ताहम आसमानी आफ़तें उन्हीं चीज़ों से आती हैं जिन्हें इन्सान की भलाई के लिये पैदा किया गया है । जो ज़िन्दगी के सामान, ज़मीन और आसमान, हवा और पानी वग़ैरह इन्सान की ख़िदमत के लिये बनाये गये हैं, वे अक्सर आसमानी आफ़तों का ज़रिया बनकर इन्सानों का जीना मुहाल कर देते हैं । अगर अल्लाह ने कायनात में सारी चीज़े इन्सान की भलाई के लिये पैदा की हैं और वे इन्सान की मुसीबत का ज़रिया बनती हैं तो यह समझना चाहिये कि इन मुसीबतों के पीछे भी कोई न कोई भलाई छिपी हुयी है । क़ुरआन में अल्लाह तआला ने बेशुमार आयतों के ज़रिये इस बात को ज़ाहिर किया है और हम प्रेक्टीकल ज़िन्दगी में भी देखते हैं कि कायनात में जो भी चीज़ दिखायी देती है, उसे अल्लाह ने इन्सान की भलाई के लिये बनाया है । क़ुरआन में है–

"और वही है जो अपनी रहमत के आगे-आगे हवाओं को बशारत बनाकर भेजता है । फिर आसमान से पाक पानी नाज़िल करता है ताकि एक मुर्दा इलाक़े को इसके ज़रिये ज़िन्दगी बख़्शे और अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से जानवरों और इन्सानों को सैराब करें । इस करिश्मे को हम बार-बार उनके सामने लाते हैं ताकि वो कुछ सबक़ लें, मगर अक्सर लोग कुफ़्र और नाशुक्री के सिवा कोई दूसरा रवैया इख़्तियार करने से इन्कार कर देते हैं ।"

(क़ुरआन, 25: 48-50)

"वही तो है जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन का फ़र्श बिछाया और उसमें तुम्हारे चलने के रास्ते बनाये और ऊपर से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिये से तरह-तरह की पैदावार निकाली, खाओ और अपने जानवरों को भी चराओ । यक़ीनन इसमें बहुत सारी निशानियां हैं अक़्ल रखने वालों के लिये । (क़ुरआन, 20: 53,54)

"और आसमान से हमने ठीक हिसाब के मुताबिक़ एक ख़ास मिक़्दार में पानी उतारा और उसको ज़मीन में ठहरा दिया हम उसे जिस तरह चाहें ग़ायब कर सकते हैं । फिर उस पानी के ज़रिये से हमने तुम्हारे लिये खजूर और अंगूर के बाग़ पैदा कर दिये । तुम्हारे बहुत से लज़ीज़ फल हैं और

उनसे तुम सेज़ी हासिल करते हो ।''

(कुरआन, 23: 18-19)

''क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह बादल को आहिस्ता-आहिस्ता चलाता है, फिर उसके टुकड़ों को बाहम जोड़ता है, फिर उसे समेटकर एक कश्फ अब्र बना देता है फिर तुम देखते हो कि इस के खोल से बारिश के कतरे चलते चले आते हैं और वह आसमान से उन पहाड़ों की बदौलत जो इस में बुलन्द हैं, ओले बरसाता है । फिर जिसे चाहता है उनका नुक़्सान पहुंचाता है और जिसे चाहता है उनसे बचा लेता है । इसकी बिजली की चमक़ निगाहों को ख़ैरा किये देती है ।'' (कुरआन, 24: 43)



इन आयतों से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह ने सिर्फ़ इन्सानों के लिये ही नहीं बल्कि उन जानवरों तक के लिये, जो इन्सान की सेवा करते हैं, खाने-पीने का सामान मुहैया कर दिया है और उसने कायनात में इन्सानों की ज़रूरतों को पूरा करने वाली पैदावार को फलने-फूलने में मदद करने के लिये इन्तिज़ाम किया ताकि इन्सान की हर तरह की ज़रूरतें पूरी हों ।

इन्सान की खुराक के लिये जो बनस्पति, अनाज, दालें, फल, मेवे वग़ैरह, तन ढकने और उसकी ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिये सूती, ऊनी व रेशमी कपड़े बनाने के लिये कपास, रेशम के कीड़े और ऊन देने वाले जानवर पैदा किये, सोना, चांदी, हीरे जवाहरात बनाये, सवारी और उसका सामान ढोने के लिये जानवर पैदा किये नदियों, समुद्रों, ज़मीन और आसमानों का ऐसा मिजाज़ बनाया कि वे उनके सफ़र के लिये रास्ते भी देते हैं और खुराक, पानी और रोशनी भी देते हैं ।

लेकिन ऊपर लिखी सूरा अल-मोमिनून की आयतों में भी फ़रमा दिया गया है कि और आसमान से अल्लाह ने ठीक हिसाब के मुताबिक़ एक ख़ास मिक़्दार में जो पानी उतारा और उसको ज़मीन में ठहरा दिया वह उसे जिस तरह चाहें ग़ायब भी कर सकता है । इसी तरह अन्नूर की ऊपर लिखी आयतों के ज़रिये यह भी मालूम होता है कि जिन बादलों से पानी के क़तरे बरसा सकता है उन्हीं से ओले भी बरसा सकता है व बिजली भी गिरा सकता है और वह जिसे चाहता है नुक़सान पहुंचाता है और जिसे चाहता है बचा लेता है । ताहम ये सूखा हो या बाढ़, ओलावृष्टि हो बज्रपात यानी अल्लाह हर मुसीबत को लाने वाला है और मुसीबत से बचाने वाला भी है । दरअस्ल अल्लाह ने जिस दिन इन्सानियत को पैदा किया उसी दिन से वह उसकी सबसे प्यारी मख़्लूक़ (श्रेष्ठ जीव) है । पहले इन्सान आदम अलैहिस्सलाम वजूद में आते ही वो अल्लाह के प्यारे और महबूब बन्दे बन गये । इसीलिये उसने आदम को ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा और नायब बनाया ।

अत: अगर वह मुसीबत लाता है या आसमानी आफ़तें लाता है तो अपनी प्यारी इन्सानियत, आदम की औलाद की भलाई के लिये ही लाता है ।

ताहम इस्लाम धर्म में हर तरह की परेशानी से निजात पाने के लिये अल्लाह से दुआ करने और उसके बताये हुये तरीक़े से उनका मुक़ाबला करने की शिक्षा दी गयी है । इसी तरह जब आसमानी आफ़तें, दैवीय आपदाएं, क़ुदरत के क़हर, जैसे बाढ़, सूखा ओलावृष्टि, बज्रपात, अकाल, महामारी, ज्वाला मुखी, ज़लज़ले, आंधी-तूफ़ान, सुनामी आदि किसी इलाक़े के इन्सानों के जान और माल का नुक़सान करके तबाही और बर्बादी फैलाते हैं तो ऐसे हालात में भी अल्लाह से दुआ करने और धैर्य व समझदारी से उनका मुक़ाबला करने का हुक्म दिया गया है । अल्लाह इन्सानों का इम्तिहान लेने के लिये जब इन्सानों को परेशानी में डालता है तो उससे निजात देने का रास्ता भी निकालता है ।

طبقات دوزخ سات ہیں۔ سقر۔ سعیر۔ فطی۔ حطمہ۔ جحیم۔ جہنم اور ہاویہ۔

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

قادری قبض روجن ®

گیسٹک کے درد میں؟



بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

زعفرانی تیل ®

گٹھیا کے درد میں؟



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشتک چورن ®



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی ®

شوگر کی کامیاب دوا

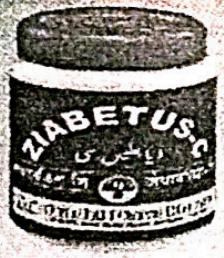

مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے



دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا مسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

کیسر فورٹ

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



اگر مرد کی قوت میں مردانگی میں کمزوری واقع ہو تو اس کو ضعف باہ کہتے ہیں اور اگر وظیفہ زوجیت ادا کرنے کے بالکل قابل نہ ہو تو اس کو نامردی کہتے ہیں۔ ان کا تکالیف کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے قیمتی یونانی جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کر لی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سوتے وقت دودھ کے ہمراہ

Qadri Dawakhana ™
13-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph. No. 2469-3173-2489-3539 (M) 9830009616 / 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana80@yahoo.co.in

STOCKIST

Qadimi Dawakhana
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

M/s. Shifa Clinic
A-280, Moti Masjid Road,
P.O. Chikamberpur, Shaheed Nagar,
Ghaziabad. Ph : 0120 - 2621286

महिलाओं की कम होती संख्या एक ज्वलंत समस्या

❖ डॉ॰ विभा सिंह
(झांसी, उ॰प्र॰)

'न्यूयार्क टाइम्स' में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में महिलाओं की संख्या पुरुषों के अनुपात में घट रही है। इसी प्रकार, चीन में वर्षों से महिलाओं और पुरुषों के अनुपात में भारी अंतर है। समाज में जीने का अधिकार सभी को है। इसके लिए संविधान में अनेक मौलिक अधिकार सुनिश्चित हैं जिसके तहत देश का कोई भी नागरिक बिना लिंग, जाति, धर्म भेद के आधार पर, देश के किसी कोने में रह सकता है, रोज़गार प्राप्त कर सकता है। यानी, भारतीय समाज में किसी भी व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार है।

लेकिन इन मौलिक अधिकारों पर प्रश्नचिह्न गहराते जा रहे हैं। भारतीय समाज में लिंग के आधार पर महिलाओं से जीने का अधिकार लगभग छीना जा रहा है। चीन सहित भारत में महिलाओं की संख्या घटने का ख़ास कारण है कि गर्भ में भी लिंग का पता लगते ही गर्भपात करा लिया जाता है। ज़ाहिर है कि आज के सभ्य समाज में जंगलीपन समाया हुआ है तभी तो कन्या के जन्म के पूर्व से ही ख़तरे मंडराने लगते हैं। समूचे विश्व में, पुरुषों के अनुपात में महिलाओं की जो संख्या होनी चाहिए, उसमें क़रीब दस करोड़ की कमी आयी है। यह कमी स्वाभाविक भ्रूण हत्या, बालिका वध, दहेज हत्या, शोषण एवं ज़ुल्म से महिलाओं की संख्या पुरुषों के मुक़ाबले कम होने की बात, अब किसी से छुपी नहीं है। यदि इसी प्रकार महिलाओं की आबादी घटती रही तो इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक तक पुरुषों के अनुपात में महिलाओं की संख्या आधी रह जाएगी, ख़ासकर विकासशील देशों में महिलाओं की संख्या घट रही है जहां बच्चे को जन्म देने में ही हर वर्ष लगभग पांच लाख महिलाओं की मौत हो जाती है।

गृह कलह शोषण, दहेज, हिंसा, अपहरण, बलात्कार, छेड़ख़ानी आदि आपराधिक वारदातों से लगभग सभी देशों की महिलाएं त्रस्त हैं। 'न्यूयार्क टाइम्स' में प्रकाशित एक



रिपोर्ट के अनुसार भारत की लगभग 90 करोड़ आबादी में हर सौ लड़कियों पर 133 लड़के हैं। इसी प्रकार चीन में 1990 की जनगणना के अनुसार 1.2 अरब आबादी थी। उस समय जहां 15 साल के तीन लड़कों की तुलना में इसी उम्र की दो लड़कियों का अनुपात बैठता था। 30 साल से अधिक उम्र के पुरुषों के आंकड़े और चौंकाने वाले हैं। चीन में 30 साल से अधिक उम्र के 80 लाख लोग हैं, जो अविवाहित पुरुष हैं। यानी, इसी उम्र की अविवाहित एक महिला की तुलना में ऐसे पुरुषों की संख्या दस निकलती है। रिपोर्ट के अनुसार चीन में लाखों लड़कियां जवानी की दहलीज़ पार करने के पहले ही दम तोड़ देती हैं। वे भुखमरी से मरती हैं या फिर बीमारी से। पुरुषों के मुक़ाबले जवान महिलाओं की मौतें अधिक हो रही हैं।

विकासशील देशों में गर्भधारण करने के उपरांत संतुलित आहार न मिल पाने की वजह से भी जीर्णकाय महिलाओं की मृत्यु बड़े पैमाने पर होती है। इन देशों में गर्भ के दौरान होने वाली पेचीदगियों से हर एक मिनट में एक महिला काल-कवलित होती है। हालांकि इस प्रकार की मौतें रोकी जा सकती हैं। संतुलित आहार, दवाओं और इलाज के ज़रिये गर्भवती महिलाओं की मौत पर क़ाबू पाया जा सकता है। लेकिन विकासशील देशों की सरकारों की ख़स्ताहाल आर्थिक स्थिति होती है। अतः वे गर्भवती महिलाओं को

बचाने में सक्षम नहीं । एक रिपोर्ट के अनुसार औद्योगिक देशों यानी, विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में गर्भ के दौरान मृत्यु की संभावना तेरह गुना अधिक होती है । भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति काफ़ी शोचनीय है । देश के सभी ज़िलों, सभी शहरों, सभी क़स्बों, सभी गांवों में स्त्रियों के ऊपर जो अत्याचार हो रहा है, वह सभ्य समाज के लिए शर्मनाक बात है । आज नारी दोहरी ज़िन्दगी जीती हुई समाज के खोखले एवं रूढ़िगत रिवाजों को ढोती आ रही है । यद्यपि देश की जनसंख्या में महिलाएं क़रीब 40 फ़ीसदी हैं, लेकिन शिक्षा, रोज़गार के क्षेत्र में वे अल्पसंख्यक सी दिखायी पड़ती हैं । इसकी वजह यह है कि शुरू से ही महिलाओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और शिक्षा आदि से वंचित रखा गया है ।

आंकड़ों के अनुसार भारत में महिलाओं की संख्या सन 1901 से ही घट रही है । 1901 की जनगणना से 1000 पुरुषों की अनुपात में 972 महिलाएं थीं । 20 वर्ष उपरांत यानी, 1921 की जनगणना में 1000 पुरुषों पर 955 महिलाएं थीं । 40 वर्ष उपरांत यानी, 1961 में 1000 पुरुषों के अनुपात में 934 महिलाएं थीं । जनसंख्या विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस वक़्त 1000 पुरुषों पर 900 के आसपास महिलाओं का औसत बैठ रहा है । ये आंकड़े निश्चित रूप से समाज के मुंह पर करारा तमाचा है, क्योंकि कोई भी समाज लिंग भेद करके स्वस्थ रूप से विकास नहीं कर सकता है ।

आपसी भेदभाव भूलकर एक हों मुसलमान

■ विद्या प्रकाश

दीन इस्लाम की गणना विश्व में प्रचलित प्रमुख धर्मों में की जाती है तथा संसार के विभिन्न देशों में उसके अनुयायी विपुल संख्या में निवास करते हैं । ईरान, इराक़, पाकिस्तान और सऊदी अरब जैसे अनेकानेक मुस्लिम देशों के अलावा भारतवर्ष, बंगलादेश, इंडोनेशिया सहित विभिन्न देशों में उनकी अच्छी आबादी है । विश्व की जनसंख्या का एक बड़ा भाग इस्लाम धर्मावलंबियों का है जो एक ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर यानी परवरदिगारे आलम के बन्दे हैं और जिनकी रब्बुल आलमीन और ताजदार-ए अंबिया हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तथा उनकी शिक्षाओं में गहरी आस्था है ।

मगर अफ़सोसनाक बात यह है कि दुनिया के सर्वप्रमुख इस्लाम धर्म के अनुयायी हज़रत मुहम्मद साहब की अनमोल शिक्षाओं और नसीहतों के वारिस और महान इस्लामी गौरवशाली परंपराओं के अलमबरदार होकर भी वे अलग-अलग फ़िरक़ों में परस्पर बंटे हुए हैं ।

आज मुसलमानों में शिया, सुन्नी, वहाबी, देवबन्दी, सलफ़ी तथा बरैलवी जैसे अनेकानेक फ़िरक़े हैं तथा उनमें भेदभाव प्रचलित है । उनके क़ब्रिस्तान भी अलग हैं जहां वे अपने परिजन तथा सगे-संबंधियों का देहावसान हो जाने पर शव को दफ़्न करते हैं । उनकी अपनी अलग इबादतगाह और मस्जिदें हैं जहां जाकर वे अल्लाह की इबादत करते तथा नमाज़ पढ़ते हैं । उनके अपने अलग तीज त्योहार हैं ।

विडम्बना यह है कि मुसलमानों में जितने फ़िरक़े हैं, वे सारे केवल ख़ुद को सही तथा दूसरे फ़िरक़े के मतावलंबियों को दिग्भ्रांत यानी भटका हुआ मानते हैं । आर्थिक आधार पर भी मुसलमान आज अशराफ़ अज़लाफ़ और अरज़ल में विभक्त हैं तथा उनमें ऊंच-नीच का भेदभाव है । एक ही अल्लाह के बन्दे और एक ही मज़हब के अनुयायी होकर भी मुसलमानों में आपसदारी की कमी और भेदभाव क्यों ? छोटी-छोटी बातों को लेकर आपस में भेदभाव तफ़रक़ा की दीवार क़ायम करना कहां तक उचित कहा जा सकता है ?

यदि सभी फ़िरक़ों के मुसलमान पूर्वाग्रह, दुराग्रह तथा ऊंच-नीच का भेदभाव भूलकर एक हो जाएं तो दुनिया की कोई ताक़त उन्हें विकास से नहीं रोक सकती और वे दुनिया के नक़्शे में मज़बूत ताक़तवर ख़ुशहाल तरक़्क़ीयाफ़्ता क़ौम की शक्ल में उभर सकते हैं ।

इस्लाम से ताल्लुक़ रखने वाले मौलानाओं, इमामों और हाफ़िज़ों द्वारा यदि आपसी भेदभाव दूर कर मुसलमानों में एकता की स्थापना की दिशा में मिल-जुलकर प्रयास किया जाए तो यह मुसलमानों के बेहतर ख़ुशहाल मुस्तक़बिल की तामीर के लिहाज़ व नज़रिये से क़ाबिले तारीफ़ क़दम साबित होगा ।

इसके साथ ही मुसलमानों में प्रचलित मज़ार पर सालाना उर्स मुबारक, चादरपोशी जैसी कुप्रथाओं के निराकरण का भी प्रयास किया जाना चाहिए ।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Chairman
Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

इन्सान की आर्थिक समस्याएं

■ डॉ॰ सैयद फ़रहत हुसैन

आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ ने 18 सदी ईसवी में 'आर्थिक इन्सान' की धारणा पेश की थी, जिसके अनुसार इन्सान आर्थिक अथवा भौतिक दृष्टिकोण से सोचता और अमल करता है । उस समय एडम स्मिथ के दृष्टिकोण की कटु आलोचना की गयी थी, मगर ऐसा अनुभव होता है कि दुनिया ने आज इस दृष्टिकोण को व्यवहार में अपना लिया है । मानव-जीवन के लिए भैतिक आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति के महत्व से कोई व्यक्ति भी इन्कार नहीं कर सकता, लेकिन आदमी केवल आर्थिक इन्सान ही है, यह ग़लत है ।

इन्सान केवल रोटी खाकर जीवित नहीं रह सकता । अगर ऐसा होता तो खाते-पीते ख़ुशहाल लोग कभी आत्महत्या नहीं करते । आर्थिक पहलू बहुत-ही महत्वपूर्ण है, मगर नैतिक व आध्यात्मिक पहलू उससे अधिक महत्वपूर्ण हैं । आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि रोटी-रोटी की रट लगाने वालों ने ही आम आदमी की रोटी छीनी है ।

पिछली दो सदियों में मानव-जीवन में ज़बरदस्त आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन दिखायी दे रहे हैं । इसमें कोई संदेह नहीं कि इन्सान ने ज़बरदस्त प्रगति की है । गगनचुम्बी भवन, बड़ी-बड़ी फैक्टरियां सूचना प्रौद्योगिकी, बैंक और बीमा कंपनियां-सब भौतिकतावादी प्रगति वे प्रतीक हैं । सामग्री और सेवाओं के अवसरों में असाधारण वृद्धि हुई है । लोगों का जीवन-स्तर ऊंचा हो गया है, मगर तस्वीर का दूसरा रुख़ यह हैं कि ज़बरदस्त भौतिक प्रगति के बावजूद इन्सान की आर्थिक समस्याएं अभी तक हल नहीं की जा सकी हैं । आर्थिक प्रगति का लाभ कुछ गिने-चुने लोगों तक ही पहुंचा है । आम आदमी आज और ज़्यादा परेशान है । ग़रीबी, कंगाली और बेरोज़गारी से मुक्ति नहीं मिल पा रही है । धन के अन्यायपूर्ण विभाजन के कारण बुरी तरह का असंतुलन पैदा हो गया है । ग़लत नीतियों के कारण इसमें विस्तार ही हो रहा है ।



अमीर और ज़्यादा अमीर हो रहा है और ग़रीब और अधिक ग़रीबी की ओर अग्रसर हो रहा है । आर्थिक समस्याओं के कारण से मानसिक रोगों में वृद्धि हो रही है । परिणामस्वरूप नशाख़ोरी, आत्महत्या, तलाक़ और अपराध बढ़ रहे हैं । आर्थिक समस्याएं केवल पिछड़े और ग़रीब देशों में ही नहीं हैं, बल्कि प्रगतिशील देश भी इन समस्याओं से जूझ रहे हैं । ग़रीबी और बेरोज़गारी की समस्याएं अमेरिका में भी मौजूद हैं । ग़रीबी को दूर करने और आर्थिक असंतुलन को ठीक करने के लिए जो भी क़दम उठाए जा रहे हैं उनसे रोग घटा नहीं, अपितु बढ़ा ही है ।

प्रत्येक देश अपने को कल्याणकारी राज्य (Welfare State) कहता है जिसका मतलब है कि उसकी नीतियों और कार्यक्रमों की प्राथमिकता जनता की ख़ुशहाली होगी । दुर्भाग्य यह है कि यह ख़ुशहाली भी कोई देश अपनी जनता को नहीं दे सका, जबकि यह विशुद्ध भौतिक या आर्थिक ख़ुशहाली थी । इसमें आध्यात्मिक ख़ुशहाली और मानसिक संतोष की कोई धारणा नहीं पायी जाती है । यह आधी-अधूरी ख़ुशहाली भी क्यों प्राप्त न हो सकी ? इस पर सोच-विचार की ज़रूरत है ।

सही हल की ज़रूरत



वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में नैतिकता को अर्धशास्त्र से अलग कर दिया गया है । उपभोक्तावाद को बढ़ावा दिया गया और लोगों के जीवन को नयी-नयी ज़रूरतों से भर दिया गया ताकि उनकी मांग हो और प्रोडक्शन करके लाभ कमाया जा सके । फिर ब्याजपरक व्यवस्था के द्वारा समाज के लोगों से ख़ून चूस-चूसकर पूंजीपतियों की तिजोरियां भरी जाएं । आर्थिक गतिविधियों को नैतिक सीमाओं से आज़ाद होने का अर्थ होगा कि आदमी बेलगाम घोड़े पर सवार है । मानव मूल्य मानवता का अभीष्ट गुण हैं । इनका इन्कार, इन्सानियत का इन्कार है । यही चीज़ इन्सान व पशु में विभेद करती है । यह अजीब विडंबना है कि समाज में हम नैतिकता, सुचरित और ईमानदारी की बात करें और आर्थिक मामलों में या तो उन्हें ताक़ के ऊपर रख दें या फिर नाम व दिखावे के लिए इस्तेमाल करें, जैसे कि ईमानदारी बेहतरीन नीति है । अर्थात ईमानदारी नीति की सीमा तक ही अच्छी है । यह अक़ीदे और ईमान का हिस्सा नहीं है । नीति बदलेगी तो वह भी बदल जाएगी ।

जब किसी ताक़तवर ने नैतिक मूल्यों से हटना चाहा तो कहा कि, ''प्रेम और युद्ध में सब जायज़ हैं'' ऐसे ही स्वार्थियों ने अर्थशास्त्र को मूल्य निरपेक्ष ठहराकर समाज को ख़ूब लूटा । उसकी मजबूरियों से लाभ उठाया । प्रसाधन के बाज़ार में शेयर मार्केट में और आर्थिक संस्थाओं के द्वारा हर जगह और हर तरह लूट-खसोट और शोषण किया ।

विभिन्न तरीक़ों से लोगों की आवश्यकताएं बेतहाशा बढ़ा दी गयीं, मगर बुनियादी आवश्यकताएं, रोटी, कपड़ा, मकान, चिकित्सा, शिक्षा के बजाय भोग-विलास के सामानों पर ध्यान दिया गया । आर्थिक समस्याएं निरंतर बढ़ रही हैं । नयी टेक्नॉलोजी के द्वारा उत्पादन में बराबर वृद्धि हो रही है, फिर भी दुनिया की चालीस प्रतिशत आबादी निर्धनता की शिकार है । इसका कारण यह है कि संसाधनों का इस्तेमाल सही तरीक़े पर नहीं हो पा रहा है । संसाधनों के इस्तेमाल से जो उत्पादन हो रहा है, उसका विभाजन जनता के बीच न्यायपूर्ण ढंग से नहीं हो पा रहा है । कारीगरों का पूरा ज़ोर अमीरज़ादों की पसन्द का ख़याल रखना है । लग्ज़री अपार्टमेंट्स के अनगिनत प्रोजेक्ट हैं, ग़रीबों के सिर छिपाने के लिए झोपड़ पट्टी ही है । मज़दूर और कारीगर बिल्डिंगें बना रहे हैं, मगर उनको छत नसीब नहीं ।

शराब के कारख़ाने ख़ूब फल-फूल रहे हैं, मगर पीने का साफ़ पानी आम आदमी को मिल जाए इसकी कोई योजना किसी पूंजीपति के पास नहीं । बड़े-बड़े हार्ट सेन्टर और प्राइवेट नर्सिंग होम चल रहे हैं, मगर आम आदमी इलाज के लिए परेशान है । रोटी के लिए अन्न उगाने वाला किसान आत्महत्या के लिए विवश है । उसकी पैदावार को जमा करने वाले, उसने गन्ने से चीनी कम, अल्कोहल और शराब ज़्यादा बनाने वाले दिन दूनी-रात चौगुनी तरक़्क़ी कर रहे हैं । क्या वास्तव में यह आर्थिक प्रगति है ? वास्तव में यह अन्याय और शोषण पर आधारित व्यवस्था है ।

साम्यवाद ने इसके विरुद्ध एक संगठित रूप से कोशिश की थी, मगर उसके कुछ अप्राकृतिक नियमों और आंतरिक विरोधाभासों के कारण वह सिस्टम ख़ुद धराशाई हो गया । कुछ देशों ने पूंजीवाद और साम्यवाद के मिश्रण को आज़माया जिसे मिली-जुली अर्थव्यवस्था के नाम से पुकारा

गया । इसने आर्थिक क्षेत्र में सुधारों का बीड़ा उठाया, मगर ग़रीबी का निवारण संभव न हुआ । धन का असंतुलन स्थिर रहा, भ्रष्टाचार में और अधिक वृद्धि हो गयी ।

शिकारी के बिछाये जाल में फंसकर जिस तरह परिंदे फड़फड़ाते हैं, ठीक उसी तरह पूंजीपतियों के जाल में पूरी इन्सानियत तड़प रही है । मुक्ति की कोई न राह है, न ज़ख़्मों पर मरहम लगाने वाला कोई मसीहा है ? इतिहास के पन्ने जवाब दे रहे हैं कि इस्लाम ही इन्सानियत को मुक्ति देने वाला मसीहा है । आज से साढ़े चौदह सौ वर्ष पहले अत्याचार व अन्याय था । यही महाजनी अंदाज़ था, गुलामी का दौर था, ठेकेदारी थी, भूखे भी थे और ऐशोआराम की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले भी थे । मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कुरआन की शिक्षाओं की रोशनी में 23 वर्षीय अल्प अवधि में आर्थिक समस्याओं को जिस तरह हल किया, उसका उदाहरण पेश करने में इतिहास असमर्थ है । आप (सल्ल॰) ने आर्थिक मामलों को नैतिकता और आख़िरत (परलोक) की जवाबदेही से जोड़ दिया । आर्थिक समस्याओं को मानव-जीवन के प्रबंध के हिस्से के रूप में हल किया । एक ऐसे आदर्श समाज का निर्माण किया, जहां अमीर-ग़रीब, दास-स्वामी, मुहाजिर-अंसार, मज़दूर और मालिक सब एक ख़ुदा के बन्दे हैं । सारे इन्सान अल्लाह का परिवार है । सारे इन्सान आपस में भाई-भाई हैं । उनकी भूख उसकी अपनी भूख है । उनकी मुस्कराहट उसका अपना दिली सकून है । वह ज़कात और सदक़ों के द्वारा आर्थिक दौड़ में पीछे रह जाने वालों की मदद करता है ।

वह हमेशा ध्यान रखता है कि उसका पड़ोसी भूख तो नहीं । यह व्यवस्था ब्याज का घोर विरोधी है, क्योंकि यह अत्याचार है, अन्याय है । इस स्कीम में आर्थिक सरगर्मियों को पूंजीवादी व्यवस्था की तरह छूट नहीं दी गयी, ताकि इस आज़ादी का लाभ उठाकर वह शोषण कर सकें और न साम्यवाद की तरह पूर्णतया सरकारी नियंत्रण में रखा गया, बल्कि बहुत ही ख़ूबसूरती से कुछ सीमाएं और बंदिशें निर्धारित करके आज़ादी दे दी गयी ।

इतना संतुलित और मध्यमार्गी व्यवस्था है किसी के पास ? आप ख़ूब कमाएं, मगर शराब, जुआ, व्यभिचार और आचरण को बिगाड़ने वाले कामों से नहीं कमा सकते । ख़ूब ख़र्च करें, मगर अपव्यय जायज़ नहीं । आप खुद व्यापार कर सकते हैं, या दूसरों के साथ शरीक हो सकते हैं, मगर लाभ-हानि की शर्तों पर न कि ब्याज के द्वारा । आप आर्थिक सरगर्मियों में हिस्सा ले सकेंगे, मगर हर समय 99 के चक्कर में नहीं पड़ेंगे, क्योंकि जीविकादाता केवल अल्लाह है । उस पर भरोसा ज़रूरी है ।

ECONOMICS IN ISLAM.net

This site in which we consider how economic problems and the social troubles stemming from them will be resolved when people come to live by Islamic moral values, contains a wide range of information on the subject. You may come to think about events in a way you never have before and to experience a major change in your mental perspective. This knowledge is of the greatest importance for true believers who think along the lines of the Qur'an and submit to the destiny ordained by Allah in His sublime wisdom.

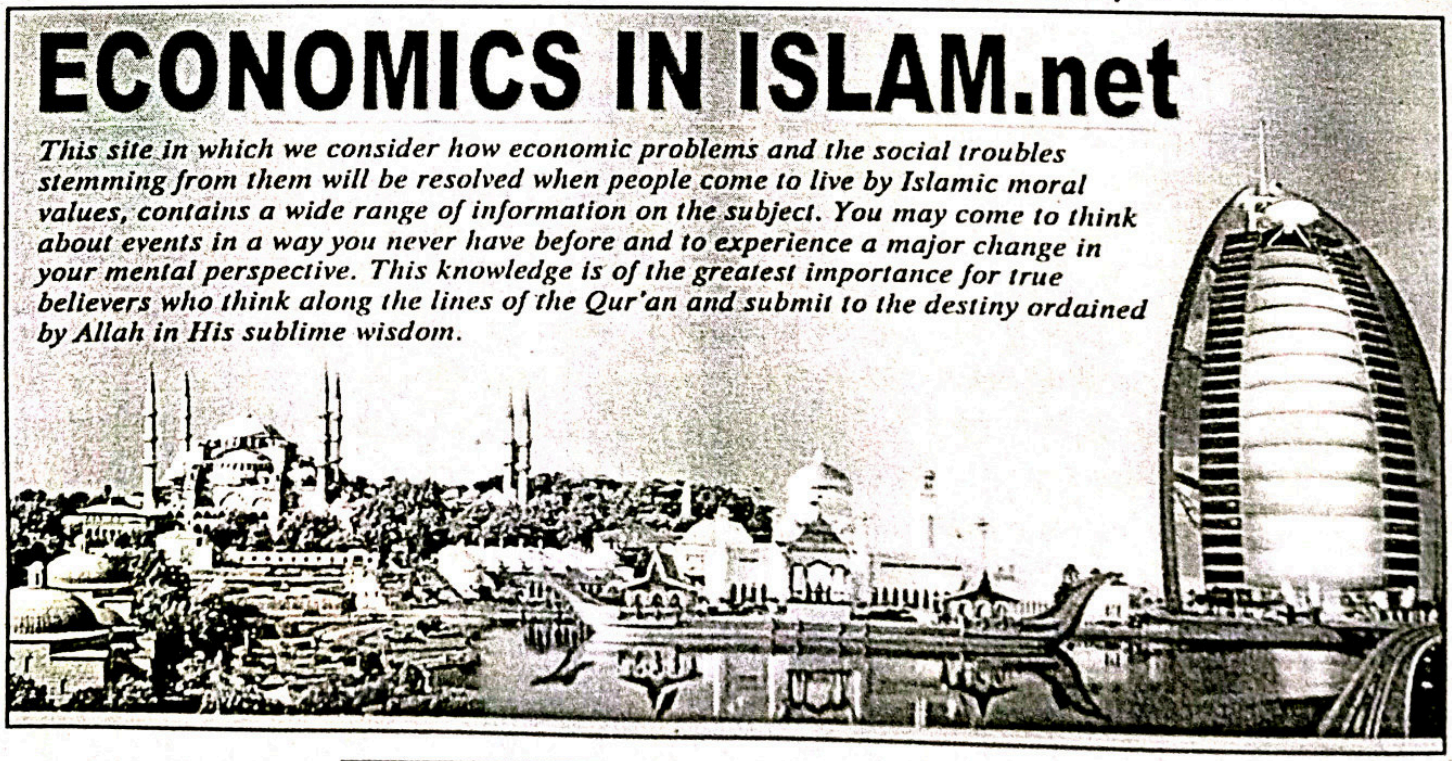

आर्थिक जगत के क्रान्तिदूत : हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

■ डॉ० फ़रहत हुसैन
रामनगर (नैनीताल)

ग़ैर मुस्लिम विद्वान 'माइकल हार्ट' ने अपनी पुस्तक 'द हन्ड्रेड में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को विश्व इतिहास की सबसे प्रभावशाली हस्ती के रूप में उल्लिखित करके ईमानदारी का सुबूत दिया । वास्तव में सम्पूर्ण एवं समग्र कान्ति के दूत के रूप आप (सल्ल०) एक मात्र विश्व नायक हैं, जिन्होंने 23 वर्ष की छोटी-सी अवधि में बिल्कुल निराला समाज खड़ा क़र दिया । आपके आह्वान पर विचार बदले, धारणाएं बदलीं, स्त्री-पुरुष, बच्चे और गुलाम बदले, वर्षों से रचे-बसे संस्कार और रीति-रिवाज बदल गये । इस बदलाव के पीछे थी वह मानसिक क्रान्ति जिसका मूलाधार था–'एकेश्वरवाद' तथा 'परलोक में जवाबदेही का एहसास' ।

आप (सल्ल०) की सीरत पर अगर विशुद्ध आर्थिक पहलू से निगाह डालें तो हम पाते हैं कि ईश्वरीय विधान पवित्र कुरआन के प्रकाश में अपनी तत्वदर्शिता के साथ आप (सल्ल०) ने एक अत्यंत संतुलित आर्थिक व्यवस्था लागू की जिसमें मानव-कल्याण, आर्थिक विकास एवं स्थायित्व पाया जाता है तथा जिसमें नैतिकता, विश्व सहकारिता, ग़रीबी उन्मूलन, समता, न्याय, आर्थिक खुशहाली सब कुछ मौजूद है । इस संक्षिप्त चर्चा में आप (सल्ल०) द्वारा लागू की गयी आर्थिक व्यवस्था (Economic System) के कतिपय बिन्दुओं पर निम्न पंक्तियों में प्रकाश डाला गया है–

(1) नैतिकता : मानवीय व्यवहार सामाजिक मान्यताओं एवं मूल्यों से नियंत्रित होता है । आर्थिक क्रियाओं को इससे अलग करके अध्ययन करना उचित नहीं है । दुर्भाग्यवश आधुनिक अर्थशास्त्र ने नैतिक मूल्यों के प्रति 'उदासीन' रहने का सिद्धांत अपनाया, परिणामतः आर्थिक क्षेत्र में स्वार्थपरता, शोषण तथा अन्याय को बढ़ावा मिला । पाश्चात्य अर्थशास्त्रियों को भी अब नैतिक मूल्यों के महत्व का आभास होने लगा है । यह अलग बात है कि परलोक की अवधारणा के अभाव में ईमानदारी (Honesty) मात्र एक नीति (Policy) बनकर रह गयी है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने नैतिक तथा ईमानदारी को आस्था से जोड़ दिया ।

(2) सामाजिक न्याय : हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा लागू की गयी आर्थिक स्कीम सामाजिक समता एवं न्याय पर आधारित है । इसमें प्रत्येक प्रकार का ज़ुल्म, अत्याचार और शोषण समाप्त हो जाता है और लोग स्वेच्छा से एक-दूसरे के साथ हमदर्दी का व्यवहार करते हैं । आवश्यकता पड़ने पर न्याय स्थापना के लिए जनहित में आदेशों को बल-पूर्वक भी लागू किया जा सकता है।

(3) साधनों पर विशेषाधिकार नहीं : धरती तथा उस पर उपलब्ध समस्त संसाधन ईश्वर ने मानव-जाति के लिए बनायी हैं, इसलिए उनसे लाभ उठाना प्रत्येक मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है । इस अधिकार से सभी लोग समान रूप से भागीदार हैं । किसी व्यक्ति को इस अधिकार से न तो वंचित किया जा सकता है और न ही किसी को दूसरे पर वरीयता दी जा सकती है । इस प्रणाली में व्यक्तिगत, वर्गीय, क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय विशेषाधिकार को कोई स्थान नहीं है । अल्लाह की धरती पर मानव-जाति को जीविकोपार्जन के अधिक से अधिक अवसर प्राप्त होने चाहिए ।

(4) संपत्ति पर स्वामित्व : इस प्रणाली में लोगों के सम्पत्ति पर स्वामित्व के अधिकार को मान्यता दी गयी है, साथ ही इस अधिकार पर अन्य लोगों तथा समाज के हित में कुछ प्रतिबंध भी लगाये गये हैं । प्रत्येक व्यक्ति के माल में उसके नातेदारों, पड़ोसियों, मित्रों तथा अन्य असहाय व ग़रीबों बल्कि संपूर्ण समाज का हक़ भी रखा गया है । संपत्ति का अधिकार व्यक्तियों में आर्थिक क्रियाओं के लिए

प्रेरणादायक होता है तथा दूसरी ओर उस पर लगाये गये प्रतिबंधों के कारण समाज पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव के प्रति कवछ का कार्य करता है ।

(5) धनोपार्जन : धन कमाने के तरीक़ों में इस्लाम ने जितनी बारीकी से उचित-अनुचित का वर्गीकरण किया है उतना विश्व के किसी अन्य क़ानून ने नहीं किया । वह चुन-चुनकर ऐसे सभी साधनों को अवैध घोषित करता है जिनके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों अथवा पूरे समाज को नैतिक अथवा आर्थिक हानि पहुंचा कर अपनी रोज़ी कमाता है । शराब तथा अन्य नशीली वस्तुओं का उत्पादन व विक्रय, अश्लीलता और नाच गाने का धंधा, जुआ, सट्टा, लॉटरी, पूर्वानुमान और धोखे पर आधारित सौदे, ऐसे समस्त व्यापारिक तरीक़े जिनमें एक पक्ष का लाभ निश्चित तथा दूसरे का संदिग्ध हो, जीवन की आवश्यक वस्तुओं की ब्लैक मार्केटिंग, ब्याज, चाहे उसकी दर कम हो या अधिक और चाहे वह व्यक्तिगत ऋणों पर हो या व्यापारिक ऋणों पर, पूर्ण रोक लगायी गयी ।

(6) उपार्जित धन के अनुचित व्यय पर भी रोक : इस व्यवस्था में मनुष्य को पाबन्द किया गया है कि वह अपनी वैध कमाई को उचित ढंग से ख़र्च करे । एक ओर तो कंजूसी और संन्यास की मनाही है दूसरी ओर अपव्यय व फ़िज़ूलख़र्ची करने वालों को शैतान का भाई कहा गया है । दोनों अतियों के बीच एक संतुलित (Balanced and moderate) जीवनशैली का सुन्दर नक़्शा पेश किया गया है । धनवानों को आदेश दिया गया कि उनके धन में वंचित लोगों का विधिवत हक़ (Right) है । संपन्न और असंपन्न के बीच की खाई को पाटने का सूत्र प्रस्तुत कर दिया गया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने जीवन काल में इसे पूर्णरूपेण लागू किया जिसका अनुसरण ख़लीफ़ाओं ने भी किया ।

(7) ज़कात की अनिवार्यता : इस्लाम का एक क्रान्तिकारी क़दम ज़कात (Poor Due) को अनिवार्य घोषित करता है जो ईश्वरीय विधान द्वारा किया गया । यह संपन्न लोगों के संचित माल पर एक वर्ष में 2.5 प्रतिशत है । कुछ मामलों में 5 प्रतिशत था 10 प्रतिशत भी है । यह धन निर्धनों, अनाथों तथा आर्थिक दौड़ में पिछड़ गये लोगों की सहायतार्थ ख़र्च किया जाता है । यह एक ऐसा सामूहिक बीमा है जिसके होते हुए कोई व्यक्ति जीवन की मूल आवश्यकताओं (Basic Wants) से कभी भी वंचित नहीं रह सकता । ज़कात में 'टैक्स' की भावना नहीं होती, वरन इसमें इबादत और ईश भक्ति होती है । इसके द्वारा अमीर और ग़रीब के बीच की दूरी–आर्थिक-मानसिक-सामाजिक, कम हो जाती है । इस अनिवार्य अंशदान के अतिरिक्त ऐच्छिक दान पुण्य करने के लिए भी धनवानों को उभारा गया है ।

(8) ब्याज पर पूर्ण रोक : ईश्वरीय आदेशों के तहत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने प्रत्येक प्रकार के सूदी लेन-देन को समूल समाप्त किया । व्यक्तिगत ऋण ब्याजरहित होंगे । व्यापार व्यवसाय में धन लगाया जा सकता है परन्तु व्यापार के लाभहानि में भागीदार होना पड़ेगा । ब्याज पूंजीवादी व्यवस्था का ऐसा हथियार है जिससे ग़रीबों, मेहनतकशों तथा आम जनमानस का ख़ून 'जोंक' की भांति चूसा है । यह मानवता विरोधी है । स्वार्थ, कंजूसी, पत्थर दिली इसी से आती है । सूद खाने वाला मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाता है । ब्याज आधारित व्यवस्था में सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों का पतन हो जाता है । विशुद्ध आर्थिक दृष्टिकोण से भी ब्याज, अर्थव्यवस्था के लिए 'विष' है ।

(9) सबसे बड़ा कारनामा : इन्सानियत के 'मुक्तिदाता' हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का सबसे बड़ा कारनामा यह है कि आपने प्रवचन और उपदेश देकर ही इतिश्री नहीं की, बल्कि उन सिद्धांतों को धरती पर पूरी तरह लागू कर दिया । दुख से बेचैन कराहती दुनिया को इस्लाम की शीतल छाया में सुख-शान्ति और अमन के साथ बैठा दिया । इतिहास साक्षी है कि उस समय की दो सुपर पॉवरों के पैरों तले सिसकती इन्सानियत के पास जब 'रहमते आलम' (सल्ल०) के चेले पहुंचे तो उन्होंने रोम और ईरान के आक़ाओं के झंडे फेंक कर मदीने से आने वाली रहमत की घटाओं का स्वागत किया । लड़ाई और जंग तो बादशाहों के किराये के सिपाहियों ने लड़ी थीं । जनमानस ने तो बिना लड़े ही अपने शहरों के दरवाज़े खोल दिये थे । आज भी रहमते आलम की पुकार सुनी जा सकती है । काश हम अपने मन-मस्तिष्क को उस ओर मोड़ लें ।

टीपू सुल्तान : भ्रम और यथार्थ

■ डॉ॰ राम बहादुर वर्मा

कर्नाटक की कांग्रेस सरकार द्वारा अठारहवी शताब्दी के मैसूर के शासक टीपू सुल्तान की जयंती मनाने के विरोध में आर॰एस॰एस॰ के अनुषांगिक संगठन विश्व हिन्दू परिषद तथा बजरंग दल ने कर्नाटक बंद का आह्वान किया तथा मुख्यमंत्री सिद्दारमैया का पुतला फूंका एवं कर्नाटक सरकार के ख़िलाफ़ नारेबाज़ी की । विहिप का आरोप है कि टीपू सुल्तान असहिष्णु और हिन्दू विरोधी था तथा उसने हिन्दुओं का क़त्लेआम किया था । टीपू सुल्तान को हिन्दू विरोधी कहने का उनका एकमात्र उद्देश्य साम्प्रदायिक आधार पर ध्रुवीकरण पैदा करना है, जिससे कि भाजपा कर्नाटक में पुन: सत्ता हासिल कर सके ।

टीपू सुल्तान ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ लड़ने वाले एक महान शहीद थे । वे 1799 में 49 वर्ष की उम्र में शहीद हुए । श्रीरंगपट्टम की लड़ाई में मारे गये टीपू सुल्तान फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित थे । 1789 में हुई फ्रांसीसी क्रांति के 'स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व के नारे से वे प्रभावित थे । राजा होने के बावजूद वे स्वयं को नागरिक कहते थे । वे एक बड़े फ़ौजी व कवि थे । अंग्रेज़ों के भारत आगमन से लेकर 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तक भारतीय इतिहास में जिन दो राजाओं ने देशों राजाओं के विरुद्ध कभी अंग्रेज़ों का साथ नहीं दिया वे थे टीपू सुल्तान तथा उसके पिता हैदर अली । यहां तक कि अनेक हिन्दू राजाओं ने अपने प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध अंग्रेज़ों का साथ दिया । टीपू की देशभक्ति को देखते हुए नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने जब कांग्रेस से अलग होकर नये दल 'फारवर्ड ब्लाक' का गठन किया, तो टीपू सुल्तान के बाघ वाले झंडे को अपना झंडा बनाया ।

टीपू सुल्तान वैसे नहीं थे जैसा कि आर॰एस॰एस॰ व विश्व हिन्दू परिषद के लोग प्रचारित कर रहे हैं । उनका काम ही इतिहास के पुनर्लेखन के नाम पर तथ्यों को तोड़ना मरोड़ना है । वे हिटलर के प्रचार मंत्री गोयवेल्स के इस



कथन में विश्वास करते हैं कि एक झूठ को सौ बार दोहराओ, वह सत्य बन जाएगा । इसलिए यह ज़रूरी है कि हम टीपू सुल्तान के बारे में विहिप द्वारा फैलाये जा रहे भ्रम को चीर कर यथार्थ तक पहुंचे तथा उस महान देशभक्त को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करे ।

टीपू सुल्तान का पिता हैदर अली, जो कि 1755 से 1782 तक मैसूर का शासक रहा, ये धार्मिक पक्षपात का निशान नहीं था । अपने हिन्दू व मुसलमान पूजा के साथ वह एक समान उदार व्यवहार करता था । मैसूर के जिन बागी समिति को उसने पराजित किया, उनकी गद्दियां या तो उन्हीं को वापस कर दी या दूसरे हिन्दू नरेशों को उनकी जगह बैठा दिया । सने अनेक हिन्दू मंदिर बनवाये और अनेक मंदिरों को जागीरे अता की । हैदर अली ने अपनी सल्तनत में गोरक्षा पर रोक लगा रखी थी । उसके राज भर में यदि कोई मनुष्य गोवध का अपराधी होता था, तो उसके हाथ काट लिए जाते थे ।

आदि शंकराचार्य के चार मुख्य मठों में शृंगेरी का मठ मैसूर राज मे थो । शृंगेरी मठ के स्वामी उस समय के शंकराचार्य के साथ हैदर अली का विशेष प्रेम था । दोनों में पत्र व्यवहार होता था । हैदर अली जगद् गुरु का आदर करता था तथा राज्य के गंभीर मामलों में उनसे सलाह लेकर काम करता था । अपने दरबार में हैदर अली हिन्दू त्योहारों को बड़े समारोह के साथ मनाया करता था । विशेषकर दशहरे पर उसके दरबार में दस दिन तक लगातार जश्न रहता था । हैदर अली की सारी प्रजा उससे खुश थी । उसके राज में चारो तरफ़ खुशहाली थी । यदि कोई सरकारी कर्मचारी प्रजा के ऊपर किसी तरह का अत्याचार करता था तो हैदर अली सदा उसे कड़ी से कड़ी सज़ा देता था । उसके राजभर में इस बात की सख़्त मनाही थी कि किसानों से उनकी नियत मालगुज़ारी के अलावा एक कौड़ी भी किसी बहाने न ली जाए ।

7 दिसम्बर 1782 को हैदर अली की मृत्यु के बाद टीपू सुल्तान मैसूर का शासक बना । 1792 में अंग्रेज़ों, निज़ाम तथा मराठों की संयुक्त फ़ौज ने टीपू को पराजित कर दिया । श्रीरंगपट्टन की संधि के अनुसार टीपू का आधा राज लेकर कम्पनी, निज़ाम और मराठों ने आपस में बांट लिया । 1799 में अंग्रेज़ों ने दोबारा मैसूर राज पर हमला किया । अपने विश्वस्त ब्राह्मण मंत्री और सेनापति पूर्निया तथा कमरुद्दीन तथा मुख्य सलाहकार मीर सादिक़ के विश्वासघात के कारण उसे पराजय का सामना करना पड़ा ।

अंग्रेज़ इस बात को जानते थे कि टीपू की ताक़त ही अंग्रेज़ों का मुक़ाबला कर सकती थी । इसलिए टीपू की मौत पर बंगाल के अंग्रेज़ चीफ़ जस्टिस सर जान एनसट्रथर ने कहा था, "भारत में हमारा साम्राज्य अब से पक्का और महफ़ूज़ हो गया ।" टीपू की मौत पर अंग्रेज़ों ने खुशियां मनायी, जलसे किये, जुलूस निकाले । वे पहले किसी देशी नरेश का राज्य छीनते हैं और फिर उस पर तथा उसका उत्तराधिकारी बनने वाले पर झूठे कलंक लगाकर उसे बदनाम करते हैं ।" अंग्रेज़ इतिहासकारों ने टीपू को बदनाम करने के लिए झूठ का सहारा लिया । इसका उद्देश्य टीपू को बदनाम करना तथा हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य बढ़ाना था ।

अंग्रेज़ इतिहासकारों में अनेक ने टीपू पर धर्मांध मुसलमान होने का आरोप लगाया । टीपू धार्मिक व्यक्ति था तथा ईश्वर के अस्तित्व में उसका गहरा विश्वास था । पर वह धर्मांध नहीं था और उसने ग़ैर-मुसलमानों के साथ अनुचित व्यवहार नहीं किया । मैसूर की अधिकांश आबादी हिन्दू थी और हिन्दुओं के साथ टीपू के किसी तरह के अनुचित व्यवहार का एक भी प्रमाणिक उल्लेख नहीं है । इसके विपरीत अपनी हिन्दू प्रजा के साथ टीपू के उदार और प्रेम भरे व्यवहार के अनेक उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं ।

टीपू के दरबार में ऊंची से ऊंची पदवियां हिन्दुओं को मिली हुई थी । उसके दो प्रमुख मंत्री पूर्निया और कृष्णाराव ब्राह्मण थे, जिनमें पूर्निया उसका प्रधानमंत्री था । इन दोनों मंत्रियों का प्रभाव उस समय अत्यंत बढ़ा हुआ था । इसके अलावा बड़ी संख्या में ब्राह्मण टीपू के दरबार में विशेषकर राजदूतों का काम करने और दरबार में लोगों का परिचय कराने पर नियुक्त थे ।

एक बार मालाबार तट की हिन्दू नय्यर जाति के कुछ लोगों ने ईसाई मत स्वीकार करने या न करने के विषय में टीपू सुल्तान से सलाह मांगी । टीपू ने उत्तर दिया-"राजा प्रजा का पिता होता है । इस हैसियत से मेरी आपको यह सलाह है कि आप लोग अपने पूर्व पुरुषों के मज़हब (यानी हिन्दू मज़हब) पर क़ायम रहे । और यदि आपको अपना मज़हब बदलने की इच्छा है तो आप (ईसाई होने की जगह) अपने पिता तुल्य राजा का मज़हब स्वीकार करें ।

टीपू उस समय के शृंगेरी स्वामी 'जगद् गुरु' शंकराचार्य श्री साच्चेदानंद भारती का बहुत अधिक आदर करता था । जगद् गुरु के नाम टीपू सुल्तान के समय-समय पर भेजे गये तीस से ऊपर पत्र इस समय उपलब्ध है, जो अत्यंत मानसूचक शब्दों में लिखे गये हैं । उदाहरणार्थ एक पत्र में टीपू ने लिखा था-"आप जैसे महापुरुष जिस देश में निवास करते हैं, उस देश में वर्षा अच्छी होती है, कृषि फलती-फूलती है और सदा सुभिक्ष रहता है । आप इतने अधिक दिनों तक परदेश में क्या रह रहे हैं ? जिस उद्देश्य से श्री महाराज वहां गये है, उसे शीघ्र अपने अनुकूल सिद्ध करके अपने स्थान पर वापस आने की कृपा कीजिए । यह पत्र सन 1793 का है, जब जगद् गुरु किसी कार्यवस कुछ समय के लिए पूना की ओर गये हुए थे ।

टीपू के महल के अन्दर अनेक हिन्दू पुरोहित व

ज्योतिषी रहा करते थे और टीपू की ओर से यज्ञ हवन जप इत्यादि करते रहते थे । मरते दम तक टीपू ने ब्राह्मणों को दान दिये और हिन्दू ज्योतिषियों के आदेशानुसार यज्ञ हवन किये । टीपू ने अपने ख़र्च से जगद्गुरु से 'शतचंडी सहस्रपाठ' की व्यवस्था करने की प्रार्थना की थी । नेजुनगुंड, श्रीरंगपट्टन और मेल कोट इत्यादि के अनेक हिन्दू मंदिरों को टीपू ने अनेक बार नज़रे और जागीरें दी । वह 156 मंदिरों को दान दिया करता था । बंगलोर में टीपू के जनाने महल के ठीक सामने श्री वेकटारमन्न स्वामी का मंदिर, महल से मिला हुआ श्रीनिवास का मंदिर, श्री रंगपट्टम के महल के पास श्रीरंगनाथ स्वामी का मंदिर और अन्य अनेक मंदिर टीपू की धार्मिक उदारता के साक्षी हैं ।

टीपू एक अत्यंत योग्य शासक और अपनी प्रजा का सच्चा हिताचेतक था । उसकी सारी प्रजा उससे खुश और प्रसन्न थी । किसानों से उसे विशेष लगाव था । उसने अपने राज्य भरी में यह आज्ञा दे रखी थी कि कोई सरकारी कर्मचारी प्रजा के किसी मनुष्य से किसी तरह की 'बेगार न ले । लगान की वसूली में भी कड़ाई की इजाज़त नहीं थी । टीपू स्वयं विद्वान था तथा विद्वानों की इज़्ज़त करता था । विद्वान पंडितों और मौलवियों दोनों का उसके दरबार में जमघट रहता था । उसका विशाल पुस्तकालय असंख्य, अमूल्य और अलभ्य पुस्तकों से भरा हुआ था ।

टीपू का व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सरल, शुद्ध और संयमी था । उसका आहार अधिकतर दूध, फल और बादाम थे । शराब और अन्य मादक द्रव्यों से उसे सख़्त परहेज़ था । यहां तक कि उसने अपने राज्य भर में हर तरह की मदिरा और मादक द्रव्यों का बनना बिकना बन्द कर रखा था । महिलाओं के सतीत्व की रक्षा का विशेष ध्यान रखता था । अपनी लड़ाइयों में वह इस बात का विशेष ध्यान रखता था कि उसके सिपाही इस विषय में कोई ग़लती न कर बैठे । यदि कभी किसी को विपरीत आचरण हो जाता था तो टीपू अपराधी को कड़े से कड़ा दंड देता था । मराठों के साथ उसके संग्रामों में कम से कम दो बार अनेक मराठा स्त्रियां, जिनमें कुछ सरदारों की पत्नियां भी थी, उसकी सेना के हाथों में आ गयी । दोनों बार टीपू ने उन स्त्रियों को बड़े आदर के साथ अलग ख़ेमों में रखा और फिर उन्हें पालकियों में बैठाकर अपनी सेना की सुरक्षा में मराठों के ख़ेमों तक पहुंचवा दिया ।

टीपू की धार्मिक संकीर्णता का उदाहरण दिया जाता है जो कि उसे वास्तव में अनुचित नहीं कहा जा सकता । टीपू के पिता हैदर अली ने उदारतावस अपने राज में यूरोप के ईसाई पादरियों को अपने मत के प्रचार की इजाज़त दी थी जिसके कारण समुद्र तट के कुछ लोगों ने ईसाई मत स्वीकार कर लिया था । किन्तु अंग्रेज़ों तथा हैदर अली के संग्रामों में इन्हीं यूरोपियन तथा भारतीय ईसाइयों ने हैदर अली के विरुद्ध अंग्रेज़ों का साथ दिया । अपनी ईसाई प्रजा की ओर से कई बार टीपू सुल्तान को भी कटु अनुभव हुआ । ये भारतीय ईसाई वास्तव में यूरोपियन पादरियों के हाथ में खेल रहे थे । बाध्य होकर टीपू को उनके विरुद्ध उपाय करना पड़ा । टीपू ने आदेश किया कि भारतीय ईसाई या तो मैसूर राज्य छोड़कर चले जाए या मुसलमान बन जाए । पर कितने भारतीय ईसाई मुसलमान बने इसका प्रमाणिक आंकड़ें नहीं मिलते ।

टीपू सुल्तान स्वतंत्रता प्रेमी था तथा अंग्रेज़ों द्वारा भारत पर क़ब्ज़ा करने का पक्का विरोधी था अपने समय में वही एकमात्र भारतीय नरेश था जिसके पास विदेशियों के मुक़ाबले के लिए प्रबल जल सेना थी, क्योंकि मराठों की जल सेना उस समय तक काफ़ी घट चुकी थी । वास्तव में अंग्रेज़ों को भारत में हैदर अली व टीपू सुल्तान से बढ़कर कोई भी शत्रु नहीं मिला, इसी लिए अंग्रेज़ इतिहास लेखकों के विष उगलने का सबसे बड़ा कारण यही है । 1857 के संग्राम तक कोई ऐसा हिन्द या मुसलमान राजा या नोतिज्ञ नहीं मिलता जिसका चरित्र अंग्रेज़ों के संदर्भ में इतना निष्कलंक हो जितना टीपू का था । टीपू ने अपने किसी देशवासी के विरुद्ध विदेशियों से कोई समझौता नहीं किया । अंग्रेज़ों द्वारा किये गये कुप्रचार के आधार पर आर॰एस॰एस॰ व विहिप के लोग टीपू के ख़िलाफ़ दुष्प्रचार कर रहे हैं ।

टीपू हिन्दू विरोधी नहीं था इसका सबसे बड़ा प्रमाण लंदन में मिली टीपू की अंगूठी है जिस पर "श्रीराम" लिखा हुआ है । अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के नाम पर साम्प्रदायिकता व दंगे फैलाने वाले आज टीपू सुल्तान के विरुद्ध जो अभियान चला रहे हैं उससे देशवासियों को सावधान हो जाना चाहिए ।

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़



HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

A/c Rooms & Non A/c Rooms
With
Attatch Bath Rooms

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माक़ूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

क्या हम अपने युवाओं को महज़ डिग्री बेच रहे हैं ?

■ कौशलेन्द्र प्रपन्न

यह कौन-सा देश है, जहां कहावत प्रसिद्ध है 'पढ़े फ़ारसी बेचे तेल' कुछ चरितार्थ होता-सा लग रहा है । यह अनुमान नहीं है बल्कि उत्तर प्रदेश के सचिवालय में 368 चपरासी पद के लिए आवेदन मांगे गये थे, जिसमें पाया गया कि 255 निवेदकों ने पी॰एच॰डी॰ कर रखी है । इतना ही नहीं, एम॰ए॰, एम॰एस॰सी॰ वालों की संख्या भी कुछ कम नहीं है । 25 हज़ार ऐसे आवेदकों की संख्या है, जो पोस्ट ग्रेजुएट हैं । वहीं डेढ़ लाख ऐसे आवेदक हैं, जिन्होंने स्नातक किया हुआ है ।

ग़ौरतलब है कि इस पद के लिए निम्न अर्हता पांचवीं कक्षा तक की शिक्षा रखी गयी है । यह एक बड़े विघटन और शिक्षा की असफलता की कहानी भी कहती है । कहानी सिर्फ़ शिक्षा की दयनीय स्थिति को ही बयान नहीं करती बल्कि हमारी नीति और दिशा को भी रेखांकित करती है ।

सच यह है कि नब्बे फ़ीसद अध्यापकों को उर्दू में यह वाक्य लिखना नहीं आया । जब डिग्री पर नज़र गयी तो उनकी डिग्री दिल्ली के प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थानों की थी मगर यह स्थिति केवल उर्दू की ही नहीं बल्कि तमाम डिग्रीधारी इस तरह के मिल जाएंगे । शैक्षिक स्थिति ऐसी है तो यह एक बड़ा गंभीर मामला है । क्या हम प्रशिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों में ऐसी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं ? यदि वे अपने विषय में इतने कमज़ोर हैं तो इसमें जितना दोष पढ़ने वालों का है, उससे ज़रा भी कम संस्थानों में पढ़ाने वालों का नहीं मान सकते ।

यह तो उत्तर प्रदेश की हालत है । अमूमन राज्यों में बेरोज़गारी की स्थिति यह है कि एम॰ए॰, बी॰एड॰ आदि किये हुए भी नौकरी से बाहर हैं । दूसरे शब्दों में वे नौकरी से बाहर हैं व इस योग्य ही नहीं हैं कि वे नौकरी पा सकें । दूसरा सवाल यह भी उठता है कि सरकार की नीतियों में ऐसे लाखों युवाओं के लिए घोषणाएं तो हैं किन्तु उन्हें अमलीजामा पहनाने की प्रतिबद्धता नहीं है । यह एक गंभीर परिघटना है कि हमारे पढ़े-लिखे तथाकथित युवा नौकरी से बाहर हैं और विकल्पहीनता की स्थिति में अपने शैक्षिक स्तर से नीचे उतर कर नौकरी के लिए आवेदन कर रहे हैं ।

यहां यह सवाल उठना भी लाज़िमी है कि क्या हमारी शिक्षा युवाओं को दक्षता व कौशल प्रदान करने में विफल रही है कि स्नातक और परास्नातक अपनी शैक्षिक योग्यता के अनुरूप नौकरी नहीं कर पा रहे हैं । क्या हमारी शिक्षा में ही कहीं कमी है, जो इस तरह की घटनाओं को जन्म दे रही है । यदि हमारे स्नातक और परास्नातक चपरासी की नौकरी करने पर विवश हैं तो हमारे नीति नियंताओं को नींद से जल्द जाग जाना चाहिए ।

यहां यह न मान लिया जाए कि चपरासी के काम व किसी भी काम को कमतर आंकने व हेय दृष्टि से देखने की कोशिश की गयी है । काम कोई भी ख़राब व निम्न नहीं होता । इससे किसी को गुरेज नहीं है. लेकिन सवाल उठता है कि यदि पी॰एच॰डी॰, एम॰ए॰, एम॰एस॰सी॰ डिग्रीधारी चपरासी के पद पर काम करेगा तो क्या उसकी क्षमता और योग्यता का भरपूर इस्तमाल बेहतर के लिए किया जा सकता है । अंतत: चपरासी का काम वैज्ञानिक

शोध, अकादमिक विमर्श के साथ तालमेल नहीं बैठा सकता । दोनों ही कामों की दक्षता, पात्रता और शैक्षिक समझ अपने काम की प्रकृति के अनुरूप होती हैं । पहले स्तर पर अत्यधिक पढ़े-लिखे होने की आवश्यकता ही नहीं है । वहीं दूसरे स्तर पर बिना शैक्षिक गुणवत्ता और पात्रता के अकादमिक काम नहीं हो सकता ।

एक सवाल यह भी पैदा होता है कि आज की तारीख़ में हम अपने युवाओं को क्या शिक्षा दे रहे हैं और किस स्तर की शैक्षिक दक्षता प्रदान कर रहे हैं ? क्या हम उन्हें महज डिग्री वेच रहे हैं व डिग्री के साथ उन्हें जीवन कौशल और दक्षता भी मुहैया करा रहे हैं, ताकि अपना जीवन भी चला सकें । सामान्यत: देखा यह भी गया है कि फ़लां के पास बी०ए०, एम०ए० व प्रोफेशनल डिग्रियां तो होती हैं लेकिन डिग्री के अनुरूप उनके पास समझ और कौशल नहीं होता ।

हाल ही में इस लेखक को पूर्वी दिल्ली नगर निगम की ओर नये टीचर की नियुक्ति प्रपत्र के दौरान प्रमाण पत्र सत्यापन में बैठने का मौक़ा मिला । जब यह जानने की कोशिश की कि आप बतौर उर्दू के अध्यापक बनने वाले हैं, आप आने वाले दिनों में उर्दू पढ़ाएंगे, एक वाक्य लिखें कि आप उर्दू पढ़ाते हैं ।

सच यह है कि नब्बे फ़ीसद अध्यापकों को उर्दू में यह वाक्य लिखना नहीं आया । जब डिग्री पर नज़र गयी तो उनकी डिग्री दिल्ली के प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थानों की थी मगर यह स्थिति केवल उर्दू की ही नहीं, बल्कि तमाम डिग्रीधारी इस तरह के मिल जाएंगे । शैक्षिक स्थिति ऐसी है तो यह एक बड़ा गंभीर मामला है । क्या हम प्रशिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों में ऐसी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं ? यदि वे अपने विषय में इतने कमज़ोर हैं तो इसमें जितना दोष पढ़ने वालों का है, उससे ज़रा भी कम संस्थानों में पढ़ाने वालों का नहीं मान सकते ।

विश्वविद्यालयों से भी निकलने वाले डिग्रीधारी अपनी डिग्री के अनुरूप ज्ञान और समझ नहीं रखते । यह किसी से भी छुपा नहीं है कि कई संस्थाएं महज़ डिग्री दिया करती हैं, जहां न कक्षा में उपस्थिति होती है और न पढ़ने पढ़ाने के प्रति गंभीरता । इसमें बी०एड० से लेकर एम०एड० और अन्य डिग्रियां भी शामिल हैं ।

वर्तमान सरकार ज़ोर-शोर से कौशल विकास योजना पर काम कर रही है। इसे इस संदर्भ में देखने-समझने की कोशिश करें तो पाएंगे कि यदि यह योजना सही तरीक़े से काम करती है तो बच्चे दसवीं, बारहवीं के बाद अपना काम शुरू कर सकते हैं ।

उन्हें बोर्ड पास करने के बाद किसी के पास जॉब मांगने जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी । वे बच्चे अपना काम स्वयं शुरू कर सकते हैं । इस बाबत उन्हें कुछ आर्थिक सहायता की ज़रूरत पड़ेगी तो सरकार अपनी योजनानुसार उन्हें आर्थिक मदद भी कर सकती है ।

दरअस्ल कौशल विकास योजना अपने आप में नया कन्सेप्ट नहीं है क्योंकि गांधी जी ने 1937 के वर्धा शिक्षा सम्मेलन में ही इस बात पर ज़ोर दिया था । उन्होंने वकालत की थी कि हर बच्चे को शिक्षा और हर बच्चे को हाथ का काम देना चाहिए । यहां पर हाथ का काम से अर्थ जीवन कौशल ही था ।

दूसरे शब्दों में कहें तो बच्चे को कोई ऐसा काम, ऐसी दक्षता प्रदान की जाए, जिससे वो अपना जीवनयापन कर सके । इस काम में बिजली, लकड़ी, मैकेनिक आदि के काम शामिल थे । वर्तमान सरकार भी इस पर गंभीरता से काम कर रही है लेकिन ग़ौरतलब है कि यह विकल्प कहीं न कहीं शिक्षा की परत को छिछला ही करता है क्योंकि हम एक ओर उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और संख्या कम होने का रोना रोते हैं, वहीं उच्च शिक्षा में संख्या और गुणवत्ता बढ़े, इसके लिए हम गंभीर नज़र नहीं आते ।

जैसे ही हम बच्चों को शिक्षा का विकल्प यानी कौशल विकास योजना की डोर हाथों में पकड़ाते हैं, वैसे ही वे बच्चे व उनके अभिभावक उन्हें उच्च शिक्षा में भेजने के बजाय अपनी आर्थिक स्थिति ठीक करने में इस्तेमाल करने लगते हैं । यही वजह है कि आज उच्च शिक्षा व शोध पाठ्यक्रमों में जाने वालों की संख्या तेज़ी से घटी है ।

सवाल यह भी उठता है कि शोध की गुणवत्ता में गिरावट के लिए भी हमारी शिक्षा-नीति और अन्य कारक भी कहीं न कहीं और काफ़ी हद तक ज़िम्मेदार हैं । इसमें सरकारी नीतियां, योजनाएं और शैक्षिक आयोगों की सिफ़ारिशों को नज़रअंदाज़ करना एक तरह से हमारे युवाओं के भविष्य से खेलना ही है । (एम०सी०एन०)

कल जो बहू थी

● भावसिंह हिरवानी

रोज़ की तरह मेरी पत्नी आज भी सवेरे से ही बड़बड़ा रही थी–''अजी सुनते हो...बहूरानी अभी तक खाट में पड़ी है, पता नहीं इनको इतनी देर तक नींद कैसे आती है ? आठ बज जाते हैं, घर का सारा काम-काज ज्यों-का-त्यों पड़ा रहता है । न किसी तरह की लाज शर्म न किसी का डर-भय...। मुझे पत्नी की बुद्धि पर हंसी भी आती है और तरस भी । वह मुंह अंधेरे ही उठकर बड़बड़ाने लगती है । मैं कई बार खीझकर कह चुका हूं ''तुम्हें नींद नहीं आती तो चुपचाप खाट पर पड़ी क्यों नहीं रहती, बेवजह चिल्लाती फिरती हो...।'' परन्तु वह मेरी बात को अनसुना कर बहू के पीछे पड़ी रहती है । जब बहू नहीं होती तब भिनसारे ही उठकर चाय बना लेती है, पर बहू के होते केवल मुंह चलाती है । शायद मुंह चलाना और कुछ न करना अपना अधिकार समझती है ।

पत्नी की आवाज़ सुनते ही बहू प्रतिदिन उठ जाती है और ज़ोर से भड़भड़ाकर दरवाज़ा खोल देती है, ताकि आवाज़ हम लोगों को सुनाई दे और पत्नी बड़बड़ाना छोड़कर चुप हो जाये । परन्तु आज दरवाज़ा खोलने की आवाज़ सुनाई नहीं दी । पत्नी एक क्षण को भौंचक हो चुप हो गयी है । मैं भी अचंभित हूं । पहले ऐसा कभी नहीं हुआ । बहू अस्वस्थ होती तो भी किवाड़ खोलती, और कांखती-कराहती घर के काम में जुट जाती, परन्तु आज रोज़ का क्रम टूट गया है । घर में सन्नाटा छा गया मानो किसी अप्रत्याशित घटना की पूर्व सूचना दे रहा हो । मैं पत्नी को संकेत से पास बुलाता हूं । वह हकबका गयी है । बहू के न उठने पर झल्लाई हुई भी है । उसकी बेटी होती, तो अब तक वह अपने हृदय का सारा प्यार उड़ेलते हुए मधुर स्वर में उठने को कह चुकी होती । परन्तु बहू के लिए प्यार का यह स्रोत न जाने एकबारगी सूख क्यों जाता है ? पत्नी सामने पड़ी है । वह समझती है कि मैं क्या कहना चाहता हूं पर वह झुकना नहीं चाहती । सास भला बहू के आगे कब झुकी है, जो अब झुकेगी । झुकना भी नहीं चाहिए । झुक गयी तो फिर सास बहू का रिश्ता कहां रह जायेगा, मां-बेटी नहीं हो जायेगी । और अगर वहू भी बेटी बन गयी तो बंटवारा लेकर स्वच्छन्दतापूर्वक रहने को कहां मिलेगा ? ''परंपरा'' का तो निर्वाह होना ही चाहिए । मेरी पत्नी भी इसी ''परंपरा'' का निर्वाह कर रही है–बेटी का पक्ष लेकर और बहू को यंत्रणा देकर ।

इसीलिए वह एक अस्त्र ढूंढ़ रही है ताकि बाद में कह सकेगी, ''आप ही के कहने से तो गयी थी, नहीं तो मैं इसकी नस-नस पहचानती हूं...।'' मैं एक अजीब लाचारी की स्थिति से उबरना चाहता हूं । कभी-कभी पत्नी का यह व्यवहार मुझे भीतर तक बेंधता चला जाता है । फिर भी सामान्य होता हुआ कहता हूं, ''देखो तो बहू को क्या हो गया है, पहले तो वह इतनी देर नहीं सोती थी...।'' पत्नी भभूका होकर कहती है, ''हां । अब तो मैं इस घर की नौकरानी बन गयी हूं । कल जो इस घर में आयी है वह महारानी बन गयी मैं उसकी खुशामद करूंगी और पांव भी धोऊंगी तभी तो भली कहाऊंगी । आजकल की बहुएं तो केवल बेटों के लिए आती हैं । उन्हें सास-ससुर से क्या लेना-देना ! सारा ढोंग-ढचला किस लिए है । मैं अच्छी तरह समझती हूं । सूरज के आते ही काना-फूसी शुरू हो जाती है । अरे, जब अपना ही बेटा अपने कहे में नहीं है तो किसको दोष दिया जाये ? लेकिन मैं कहे देती हूं चाहे जो हो जाये, पर मैं कल की इस छोकरी के आगे गिड़गिड़ाने नहीं जाऊंगी...।'' पत्नी का यह हठ दुर्भेध दीवाल की भांति है, जिसे बेधना या लांघ पाना मेरे लिए ही नहीं, मेरी तरह अनेक पतियों के लिए भी असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन अवश्य है ।

मैं अजीब उलझन में फंस गया हूं । समझ में नहीं आता, क्या कहूं ? क्या करूं ? और भीतर का अन्तर्द्वन्द्व मुझे पीछे ढकेलता चला गया, दूर बहुत दूर...कई वर्ष पीछे–तब मेरी पत्नी को इस घर में बहू बनकर आये साल भी नहीं हुआ था । मेरी मां सास होने का दायित्व पूरी तरह निभा रही थी और पत्नी भी एक आदर्श बहू बनी हुई थी । किसी में ज़रा भी कहीं खोट नहीं था । दोनों सोना की तरह तप-खरे मालूम होते थे । एक मैं ही था जिसमें दोष मौजूद थे । न तो मां का योग्य बेटा था, न पत्नी का आदर्श पति । त्रिशंकु की

भांति बीच में लटक रहा था । न मां का विरोध कर पाता था न पत्नी का पक्ष ले सकता था । मैं बेरोज़गार था । बेरोज़गार बेटा क़र्ज़ की तरह घर में बोझ होता है । फिर बहू के आते ही बेटा बेटा कहां रहता है ? वहीं मां-बाप जो कुंवारे लड़के की शादी के लिए एकदम उतावले होते हैं, छंट-छांटकर अपनी ही पसंद की बहू लाने को आतुर होते हैं, घर में बहू के आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगते हैं और बेटे भी मां-बाप की ओर से तोते की तरह आंख फेर लेने से नहीं चूकते ।

फिर एक दिन इस घुटन भरी रात में चलते-चलते वह निर्णायक मोड़ भी आ पहुंचा जिसने इस परिवार को दो भागों में बांटकर रख दिया । दिन भर नौकरी की तलाश में भटकते रहने के पश्चात शाम को थका-हारा वापस आया तो देखा पत्नी कमरे में पड़ी है । आवाज़ देने पर भी वह कुछ बोलती न थी । घर में अजीब सन्नाटा छाया हुआ था । मां-बाप दम साधे मेरी प्रतिक्रिया का इंतिज़ार कर रहे थे । निकट जाकर देखा तो पत्नी का शरीर बुख़ार से तप रहा था । बहुत चिरौरी करने पर वह रोते-हिचकते जो कुछ बोली उसका आशय यही था कि अब वह इस घर में नहीं रह सकती और मायके जाना चाहती है । मेरे माता-पिता बिलकुल परवाह नहीं करते । बुख़ार की हालत में भी उसे दवा-पानी को नहीं पूछते और यह कि मैं भी अपने मां-बाप का पक्ष लेता हूं । पत्नी की बातों पर विश्वास कर लेने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई चारा नहीं है । मैं अपने मां-बाप से इस संबंध में कुछ भी नहीं कहता और मेरा उनसे कुछ नहीं कहना उनकी नज़रों में यह स्पष्ट करता है कि पत्नी का पक्ष लेता हूं ।

पत्नी को बहुत समझाने की कोशिश की पर वह नहीं मानी । अन्त में उसने कह दिया, ''मैं अब आपके मां-बाप के साथ नहीं रह सकती । या तो अलग रहूंगी या मायके चली जाऊंगी । निर्णय आपके हाथ में है...।'' पत्नी के इस दो टूक निर्णय से दिल को भारी धक्का लगा । इस तरह तनाव और मानसिक यंत्रणा के दौर से गुज़रते हुए कुछ दिन और बीते और मेरा निर्णय भी पत्नी के पक्ष में ही गया । फिर एक दिन मैं हिम्मत करके माता-पिता के सामने जाकर खड़ा हो गया, बोला, ''पिताजी हम लोग अलग रहना चाहते हैं'' मेरा सिर शर्म से झुका जा रहा था, जैसे कोई अपराध कर रहा हूं । मैं जानता था वे दोनों बहुत-सी बातें कहेंगे– ''हां, भई, अब तो हम बूढ़े और बेकार हो गये हैं– फिर तुम्हें हमारी आवश्यकता भी नहीं है । इसी दिन के लिए मां-बाप बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करते हैं कि बहू के आते ही उन्हें छोड़कर अलग घर बसा ले...।'' परन्तु पिताजी ने कुछ नहीं भी नहीं कहा । निकट आकर कंधे पर हाथ फेरते हुए बोले, ''कोई बात नहीं... लेकिन बहू का ख़्याल रखना, कोई तकलीफ़ हो तो ज़रूर कहना, एकदम घर से नाता मत तोड़ लेना...।'' पिता के इस स्नेह से मेरा सारा दंभ वहीं भरभराकर ढह गया । आंखों से बरबस आंसू गिर पड़े । उन्हें क़तई उम्मीद नहीं थी कि हम लोग उन्हें बुढ़ापे में इस तरह छोड़कर अलग रहने लगेंगे । फिर धीरे-धीरे वे घुल-घुलकर इस संसार से विदा हो गये ।

आज भी मुझे कई बार एहसास होता है कि मेरी स्वार्थांधता और पत्नी की मूर्खता की वजह से ही मेरे मां-बाप ज़िन्दगी के अंतिम दिनों में दुख भोगते रहे और इस संसार से चल बसे और आज एक बार फिर वही स्थिति मेरे सामने खड़ी है । लगता है मेरे मां-बाप, बहू और बेटा के रूप में बदला लेने के लिए हमारे घर में आ गये हैं । अब वे भी हमारी उम्मीदों के विपरीत बंटवारा लेकर अलग रहने लगेंगे और हमें भी अपना बुढ़ापा घुट-घुटकर बिताना होगा । पत्नी की एक ज़िद ने मुझे मां-बाप से अलग कर दिया और आज उसकी यह दूसरी ज़िद शायद मुझे बेटा से भी अलग करने वाली है । मैं बदहवास सा चिल्ला पड़ा, ''नहीं !'' पत्नी चौंककर देखती है अब भी वह उसी तरह सामने खड़ी है । शायद मेरी तरह वह भी सोच में डूबी थी । मैं पत्नी के कंधे पर हाथ रखकर कहता हूं । क्या उस दिन सब कुछ ऐसे ही नहीं था । फ़र्क़ केवल इतना ही था कि हम दोनों की जगह हमारे मां-बाप थे और तुम्हारी एक ज़िद ने हमें कहां-से-कहां पहुंचा दिया और आज हमारी जगह हमारा बेटा और बहू खड़े हैं । क्या तुम भी मेरे मां-बाप की तरह बुढ़ापा में बेसहारा होना चाहती हो ?

पत्नी एकदम ख़ामोश हो गयी है । उसके चेहरे पर अनेक तरह के भाव उभरते और मिटते जा रहे हैं । लगता है भीतर के अन्तर्द्वन्द्व को झेल रही है । वह धीरे-धीरे कमरे से बाहर चली गयी । घर में सन्नाटा छाया हुआ है । मैं ख़ामोशी से पत्नी की प्रतिक्रिया जानना चाहता हूं । मन व्यग्र हो गया है और दिल की धड़कन जैसे बढ़ गयी है । कुछ क्षण पश्चात् पत्नी की-मधुर आवाज़ सुनाई देती है । वह शायद पहली बार बहू को नाम लेकर पुकार रही थी । फिर कुछ क्षण पश्चात सिसकियों के बीच बहू की आवाज़ सुनाई पड़ती है, ''बुख़ार हो गया है, मां...।'' मुझे समझते देर नहीं लगी कि सास-बहू की जगह, मां-बेटी ने ले लिया है और मैं खुशी से गदगद हो गया ।

खेलों में घपलों और घोटालों की भरमार

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

दिल्ली सचिवालय में सी॰बी॰आई॰ की तलाशी के बाद से पूरे देश में एक अजब-सा हंगामा मचा हुआ है । सी॰बी॰आई॰ ने छापा तो किसी और वजह से मारा था मगर इस छापे के बाद ने स्थिति ने कुछ ऐसा मोड़ लिया है कि उसके बाद से केन्द्रीय मंत्री अरुण जेटली के लिए आये दिन नयी-नयी मुसीबतें शुरू हो गयी हैं । सी॰बी॰आई॰ की तलाशी के बाद केजरीवाल और उनके लोगों ने अरुण जेटली पर इल्ज़ाम लगाया कि चूंकि जेटली दिल्ली डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे हैं और दिल्ली सरकार डी॰डी॰सी॰ए॰ में हुए घोटालों की जांच करने का मन बना चुकी है इसलिए जेटली ने सी॰बी॰आई॰ का सहारा लेकर हर उस फ़ाइल को ग़ायब करने की कोशिश की जिसमें जेटली का नाम था या फिर यह कि जिसकी जांच से जेटली पर मुसीबतें आ सकती थीं ।

केजरीवाल के इल्ज़ाम के बाद से भाजपा के ही एक बड़े नेता कीर्ति आज़ाद ने भी डी॰डी॰सी॰ए॰ में घोटाले के आरोप लगाये और चूंकि जेटली इस संस्था में रहे हैं, बल्कि सबसे बड़े पद पर रहे हैं इसलिए हर आरोप से उनका ही नुक़सान होता दिख रहा है । पहले केजरीवाल पर मानहानि का मुक़दमा किया गया और फिर उसके बाद पार्टी ने कीर्ति आज़ाद को भी सस्पेंड कर दिया । कुल मिलाकर इस पूरे आरोप-प्रत्यारोप के बाद एक चीज़ जो खुलकर सामने आयी है वह यह कि दिल्ली के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम फ़िरोज़ शाह कोटला को बनाने में बड़े पैमाने पर घोटाला हुआ और इस घोटाले में जेटली भी शामिल रहे । केजरीवाल का आरोप है कि एक तो क्रिकेट स्टेडियम महंगा बनाया गया और दूसरे मैचों के दौरान जो चीज़ें किराये पर ली गयी उसका किराया जितना दिया गया उससे कम क़ीमत पर वह चीज़ मार्किट में मिल ही जाती है । क़माल की बात तो यह है कि जिस कीर्ति की बात को संजीदगी से लेना चाहिए उसे पार्टी ने सस्पेंड करके एक नया हंगामा खड़ा कर दिया है।

खेलों में घोटाला कोई नयी बात नहीं है । अब चूंकि हर



खेल को कारपोरेट ने अपने क़ब्ज़े में ले लिया है इसलिए उसकी यही कोशिश रहती है कि चाहे खेल का स्तर जैसा भी हो इस खेल में लाभ ज़रूर हो । आई॰पी॰एल॰ में भी ऐसा ही हुआ । पैसा कमाने के चक्कर में आई॰पी॰एल॰ में हम सबने देखा कि यहां खेल कम होता है खेल के नाम पर नाटक ज़्यादा होता है । खिलाड़ी खेलते कम हैं मैच से पहले और मैच के बाद नाच-गाना ज़्यादा करते हैं । अर्द्धनग्न युवतियों को नचाया जाता है । यहां सिर्फ़ यह तो देखा जाता है कि पैसा बनाया जाए मगर यह नहीं देखा जाता कि खेल, खेल की तरह से हो भी रहा है या नहीं ।

यह घपले और घोटालों का ही चक्कर है कि भारत के लगभग हर खेल संगठन पर नेताओं ने क़ब्ज़ा कर रखा है । कहीं लालू का क़ब्ज़ा है तो कहीं शरद पवार का क़ब्ज़ा है तो कहीं फ़ारूक़ अब्दुल्लाह ने क़ब्ज़ा जमाया हुआ है । भरत कॉमनवेल्थ के नाम पर दुनिया का बड़ा घोटाला देख चूका है । वहां भी पैसा बनाने के चक्कर में अपने-अपने लोगों को ठेके दिये गये और हर कोई जो कोई भी उसमें

शामिल था उसने ख़ूब पैसे बनाए । कलमाड़ी साहब ने दुनिया को यह बता दिया कि कैसे खेलों में पैसे बनाए जा सकते हैं और कैसे खेल के नाम पर भी घपला और घोटाला हो सकता है । कलमाड़ी के बाद आई॰पी॰एल॰ में ललित मोदी ने घपला किया । मैचों में स्पॉट फिक्सिंग और सट्टेबाज़ी भी हुई । मामला अब भी चल रहा है बहुत से खिलाड़ियों को सज़ा भी मिली मगर ललित मोदी अब भी विदेशों में मज़ा कर रहे हैं ।

ताज़ा मामले में डी॰डी॰सी॰ए॰ के घोटाले ने हंगामा मचाया हुआ है । इस बार नाम आया है अरुण जेटली का । केजरी के अलावा उन पर खुद उनकी पार्टी के कीर्ति आज़ाद ने भी इल्ज़ाम लगाया है । डी॰डी॰सी॰ए॰ में जो घोटाला सामने आ रहा है वह सच है या नहीं और इसमें जेटली फंसेंगे या नहीं मगर इस पूरे मामले में आयोग का गठण करके केजरीवाल ने एक अच्छा काम किया है । दिल्ली सरकार ने पूर्व सॉलीसिटर जनरल गोपाल सुब्रह्मणियम को जांच आयोग का अध्यक्ष बनाया है । डी॰डी॰सी॰ए॰ में जो ख़ास बातें सामने आ रही हैं उसके अनुसार जिन 14 फर्मों को करोड़ों रुपये की बिलों का भुगतान किया गया उनमें से ज़्यादा तर फ़र्ज़ी हैं । कीर्ति आज़ाद के आरोप के अनुसार इन कंपनियों को 2008-09 के बीच 40 से 50 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया । लेकिन जब जांच किया गया तो इन कंपनियों के पते नक़ली पाये गये ।

यह सही है कि इस पूरे मामले में अरुण जेटली को चेतन चौहान, वीरेंदर सहवाग और गौतम गंभीर जैसे खिलाड़ियों का समर्थन भी मिल रहा है और यह सब कह रहे हैं कि जेटली ने कुछ भीं ग़लत नहीं किया है, मगर जिस तरह जेटली तिलमिलाये हुए हैं और जिस तरह भाजपा ने तुरंत ही कीर्ति आज़ाद को सस्पेंड कर दिया है इससे यह बात साबित होती है कि दाल में कुछ न कुछ काला है और इस मामले में जेटली का रोल भी संदिग्ध है ।

भारत जैसे देश में वैसे तो हर खेल में कुछ न कुछ घपला और घोटाला है । अलबत्ता इस मामले में क्रिकेट पहले नम्बर पर है । चूंकि भारत में क्रिकेट सबसे ज़्यादा लोकप्रिय खेल है इसलिए कॉरपोरेट को सबसे ज़्यादा आशा इसी खेल से है । पहले टेस्ट, एकदिवसीय और अंतर्राष्ट्रीय टी-20 मैच तो हो ही रहे थे अब आई॰पी॰एल॰ जैसे टूर्नामेंट भी होने लगे । इन टूर्नामेंट में खेल से ज़्यादा इधर-उधर की बातों पर ध्यान दिया गया । मैच में मज़ा करने के लिए फ़िल्मी हस्तियां मौजूद रहने लगीं । फ़िल्मी हस्तियों ने टीम को ख़रीदा भी । अब जबकि फ़िल्मी हस्तियों का और बड़ी-बड़ी कंपनियों का पैसा क्रिकेट में लगा हो तो वह वही सब चाहेंगी जिससे उनको भी फ़ायदा हो । फ़ायदा कमाने के चक्कर में अनैतिक कार्यों का भी सहारा लिया गया । फ़िलहाल सबकी ज़बान पर डी॰डी॰सी॰ए॰ का मामला है देखना यह है कि इसमें किसी को सज़ा मिलती है या नहीं, किसी को ज़िम्मेदार ठहराया जाता है या नहीं या फिर हमेशा की तरह यह मामला भी कुछ दिनों तक सुर्ख़ियों में रहने के बाद बंद हो जाएगा ।

लघुकथा

भ्रष्टाचार

नेता जी आम सभा में भाषण दे रहे थे । ''हमें देश को विकास के मार्ग पर ले जाना है । देश में फैले भ्रष्टाचार को जड़ से ख़त्म करना है इसलिए देश का हर नागरिक तन, मन से देश के लिए खुद को समर्पित करे । जीवन में नैतिकता अपनाएं ।'' नेताजी के भाषण पर खूब तालियां बजी । भाषण के पश्चात नेताजी का आम लोगों के मिलने के लिए ''जनता दरबार'' कार्यक्रम था । हर व्यक्ति अपनी समस्या नेताजी को बता रहा था । किसी को ट्रांसफ़र करवाना था, किसी को लाइसेंस लेना था आदि...। नेताजी ने अपनी पी॰ए॰ को कहकर सबकी समस्या नोट करवायी ।

जैसे-तैसे जनता दरबार ख़त्म हुआ । नेताजी ने पी॰ए॰ से पूछा इतने सारे लोग आये, किसी ने कुछ भेंट नहीं दी क्या?

पी॰ए॰ ने कहा, ''सर आपने ही तो भाषण में भ्रष्टाचार ख़त्म करने की बात कही थी । इसलिए मैंने किसी से कुछ भी नहीं लिया ।'' नेताजी ने कहा तुमको इतना भी नहीं मालूम भाषण तो जनता को कहने के लिए होता है । ऐसे कैसे सबका काम होगा ? उस पर सबको अपना-अपना हिस्सा चाहिए । नेताजी का जवाब सुनकर पी॰ए॰ आवाक रह गया । सोचने लगा कि यदि देश में ऐसे ही नेता रहेंगे तो भ्रष्टाचार की विष बेल कभी ख़त्म नहीं हो सकती है ।

दिनेश कुमार छाजेड़

कोटा (राज॰)

मुस्लिम वैज्ञानिकों का योगदान

■ इरफ़ान अहमद सिद्दीक़ी

आज मुसलमान शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पिछड़े हुए हैं, लेकिन एक समय था, जब ये इस क्षेत्र में दुनिया का नेतृत्व करते थे । कला का क्षेत्र हो या विज्ञान का, गणित हो या चिकित्सा शास्त्र मुसलमान सभी क्षेत्र में आगे-आगे थे । यूरोप और अमेरिका में उस समय अज्ञानता का अंधकार फैला हुआ था । ईसाई पादरी वैज्ञानिकों का खुलकर विरोध कर रहे थे । उनकी वैज्ञानिक खोजों का मज़ाक़ उड़ाते थे । उस समय इब्न नफ़ीस, उमर ख़ैयाम, इब्न रुश्द, अलहैशम, जैसे विद्वान पैदा हुए जिन्होंने गणित, खगोलशास्त्र, भौतिकी, रसायनशास्त्र और चिकित्सा के क्षेत्र में जो अविस्मरणीय योगदान दिया वह आज भी संसार के लिए मार्गदर्शन है ।

उनकी किताबों का लैटिन, रोमन, अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, जर्मन आदि भाषाओं में अनुवाद किया गया । इनसे यूरोपीय विद्वानों ने लाभ उठाया और आधुनिक विज्ञान की आधार-शिला रखी । बाद के लोगों ने उन खोजों को यूरोपीय विद्वानों के नाम से जोड़ दिया था । मुस्लिम वैज्ञानिकों के नाम को इस प्रकार लिख गया कि वे मुसलमान नहीं बल्कि यूरोपीय मालूम होते हैं । आज मुस्लिम नवजवानों और छात्रों के पास अपने इन महान पूर्वजों के विषय में जानकारी न होने के बराबर है । मक्तबों और मदरसों के पाठ्यक्रमों में भी इनके विषय में कोई ख़ास जानकारी नहीं है । यह सच है कि अपने पूर्वजों का क़सीदा पढ़ने से कुछ हासिल नहीं है, लेकिन हमें अपने सुनहरे इतिहास से अवगत तो होना ही चाहिए । नहीं तो मुस्लिम नवजवान तो यही समझेंगे कि मुसलमान शुरू से ही एक जाहिल और पिछड़ी हुई क़ौम है ।

वे यह समझने को मजबूर होंगे कि इस्लाम अंधेरे की ओर ले जाता है, जैसा कि पश्चिम का प्रोपगैंडा है । ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पूर्वजों के कारनामे बताकर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि उनकी तरक़्क़ी क़ुरआन और हदीस का सही ज्ञान रखने के कारण ही हुई थी । वे क़ुरआन से ही मार्गदर्शन प्राप्त करते थे । वे केवल वैज्ञानिक, गणितज्ञ या खगोलशास्त्री ही नहीं थे, बल्कि दीनी मामलों के भी वे माहिर थे । वे बाअमल मुसलमान हुआ करते थे । संक्षेप में हम कुछ मुस्लिम विद्वानों की चर्चा करते हैं–

जाबिर बिन हय्यान (मृत्यु-803 ई०) को फादर ऑफ़ केमिस्ट्री कहा जाता है । जाबिर बिन हय्यान ने Sublimation, Calcination जिसमें खनिजों को आक्सीजन की अनुपस्थिति में अधिक तापमान पर गर्म करके धातुओं की सफ़ाई की जाती है आदि विधियों से अवगत कराया । विभिन्न धातुओं के मेटल आक्साइड बनाना, लोहे को ज़ंग लगने से सुरक्षित रखने की विधि, वैक्स कोटिंग, बालों को काला करने का ख़िज़ाब, गंधक अम्ल, अक्वारेजिया अर्थात सोने को गलाने वाला तेज़ाब आदि जाबिर बिन हय्यान की कुछ महत्वपूर्ण खोजें हैं । मुहम्मद बिन अल-ख़ारिज़्मी (मृत्यु-840 ई०) एक महान गणितज्ञ थे । उन्होंने शून्य '0' का प्रयोग बताया और अल्गोरिज़्म से अवगत कराया । बीजगणित भी उन्हीं की देन है । शब्द बीजगणित उनकी महान रचना "अल जब्र वल मुक़ाबला" से लिया गया है । याक़ूब बिन इसहांक़ अलकन्दी (800-873 ई०) गणितज्ञ और वैज्ञानिक के साथ-साथ महान चिंतक भी थे । उन्होंने ज्यामितीय अप्टिक्स में बहुत काम किया, जिससे बाद में रोजर बेकन को प्रेरणा मिली और मार्गदर्शन भी । याक़ूब बिन इसहाक़ ने खगोलशास्त्र, अंकगणित, ज्यामिति, औषधि, भौतिकी, दर्शन- शास्त्र, तर्क और संगीत पर कुल मिलाकर 240 पुस्तकों की रचना की है ।

साबित बिन क़ुर्रह (836-901 ई०) एक महान वैज्ञानिक और दार्शनिक थे । उन्होंने समानुपाती अंकों के जोड़े मालूम करने का नियम बनाया, अंकों के फैक्टर्स की खोज की । उन्हें सांख्यिकी का जन्मदाता समझा जाता है । उन्होंने Condition of Equilibrium भी बतायीं ।

अली बिन रब्बान तबरी (838- 870) महान चिकित्सक राज़ी के उस्ताद थे और स्वयं भी एक महान चिकित्सक थे । "फिरदौसुल हिकमत' उनकी महान पुस्तक है, जिसमें सात अध्याय है । पहले अध्याय में चिकित्साशास्त्र के विचारों एवं दृष्टिकोणों पर प्रकाश डाला गया है । दूसरा अध्याय शरीर के विभिन्न अंगों और स्वस्थ रहने के नियमों पर आधारित है । तीसरे अध्याय में रोग और स्वास्थ्य की अवस्था में लिए जाने वाले आहार की चर्चा की गयी है ।

चौथा अध्याय सबसे बड़ा है और इसमें यह सिर से पांव तक की सभी बीमारियों की चर्चा है । इसमें बीमारी फैलने का कारण, सिर और मस्तिष्क के रोग, आंख, नाक, कान, मुंह और दांत के रोग, मांसपेशियों की बीमारियां जिसमें फ़ालिज भी शामिल है, गले, सीने और फेफड़े के रोग, गुर्दा, पित्ताशय और तिल्ली के रोग, आंतों के रोग और विभिन्न प्रकार के बुख़ार पर इसमें विस्तार से बहस की गयी है । पांचवें अध्याय में स्वाद, गंध और रंग की चर्चा है, छठे में औषधियों और विषों की चर्चा है और सातवें अध्याय में विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की गयी है ।

अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन जाबिर अलबुस्तानी (868-929 ई॰) महान खगोलशास्त्री और गणितज्ञ थे । उन्होंने सौर वर्ष की अवधि 365 दिन 5 घंटे, 46 मिनट और 24 सेकेंड बतायी, जो क़रीब-क़रीब सही है । उन्होंने सूर्य के झुकाव का कोण 23 डिग्री 35 मिनट बताया, जबकि पहले लोग इसे 23½ डिग्री समझते थे । उन्होंने ही यह खोज की कि पृथ्वी अंडाकार पथ पर गमन करती है न कि गोल पथ पर । मुहम्मद बिन ज़करियों राज़ी (864-930 ई॰) महान मुफ़स्सिरे क़ुरआन होने के साथ-साथ चिकित्सा विज्ञान, रसायनशास्त्र और दर्शनशास्त्र के भी माहिर थे । औषधि विज्ञान में राज़ी को इब्ने सीना के समान समझा जाता है । राज़ी का सबसे बड़ा कारनामा चेचक पर खोज है । इन्होंने ही आर्गेनिक (कार्बनिक) और इनार्गेनिक (अकार्बनिक) केमिस्ट्री की आधारशिला रखी ।

अबू नस्र फ़ाराबी (870-950 ई॰) विज्ञान, दर्शन, तर्क, समाज- शास्त्र, गणित और संगीत के माहिर होने के साथ-साथ 70 भाषाओं के जानकार थे । इन्हें द्वितीय गुरु कहा जाता है, प्रथम गुरु अरस्तू थे ।

अबुल क़ासिम ज़हरवी (936- 1013 ई॰) एक महान वैज्ञानिक चिकित्साशास्त्री और सर्जन थे । ज़हरवी ने पित्ते से पथरी निकालने का आपरेशन, आंख-कान और गले का ऑपरेशन और प्रसव आपरेशन सफलतापूर्वक किये । उन्होंने सर्जरी के 200 से अधिक उपकरणों व यंत्रों की खोज की । Endoscopy के प्रारंभिक रूप की खोज ज़हरवी ने ही की थी । नक़ली दांत बनाने और लगाने का काम भी उन्होंने किया । अबू अली हसन बिन हैशम (965-1040 ई॰) ने आंख की बनावट और देखने की प्रक्रिया की वैज्ञानिक व्याख्या की । अलहैशम ने यह खोज की कि बिम्ब से प्रतिबिंबित होने वाला प्रकाश जब आंख में पहुंचता है, तब वह दिखायी पड़ती है । इससे पहले पश्चिम के वैज्ञानिक आंख को प्रकाश का स्रोत मानते थे । अलहैशम ने आवर्तन और परावर्तन का नियम दुनिया को बताया । उन्होंने गैलीलियों से कई सौ वर्ष पूर्व गति का नियम मालूम किया ।

अबू रैहान अलबैरूनी (937- 1048 ई॰) एक महान वैज्ञानिक और खगोलशास्त्री होने के साथ-साथ इतिहासकार और चिंतक भी थे । वे कई भाषाएं जानते थे । उन्होंने भारत आकर संस्कृत भी सीखी थी । भारत के इतिहास, भूगोल और सामाजिक संरचना उन्होंने 'अलहिन्द' नाम की एक पुस्तक भी लिखी । अलबैरूनी ने देशान्तर रेखाओं की जानकारी दी । उन्होंने पृथ्वी का तृज्या और उसका व्यास मालूम किया । अलबैरूनी ने ही पहली बार चन्द्रग्रहण का सचित्र वर्णन किया । उन्होंने धातुओं की Specific gravity मालूम की । बूअली सीना (980-1037 ई॰) एक महान वैज्ञानिक और चिकित्सक थे । उन्होंने फेफड़े की टी॰बी॰ और पानी और धूल मिट्टी से फैलने वाले रोगों का वर्णन किया । उनकी पुस्तक ''अल क़ानून'' के विषय में विलियम ओसलर कहते हैं कि यह चिकित्सा विज्ञान की बाइबल है ।

उमर ख़ैयाम (1044-1123 ई॰) महान फ़ारसी कवि होने के साथ-साथ गणितज्ञ और खगोलशास्त्री भी थे । उन्होंने एक सौर वर्ष की अवधि 365 दिन 5 घंटे और 49 सेकेंड बताया जो नवीनतम खोज से मात्र 10 सेकेंड अधिक है । उमर ख़ैयाम ने वर्ष के महीने के दिनों को 30 और 31 रखने का परामर्श दिया ताकि कुछ वर्षों के बाद दिनों की संख्या में आने वाले बदलाव को कम किया जा सके । उन्होंने ही लीप इयर की परिकल्पना की और हर चौथे वर्ष में एक दिन बढ़ा देने का विचार प्रस्तुत किया ।

इब्ने रुश्द जन्म (1228 ई॰) महान वैज्ञानिक और चिंतक थे । उनकी लिखी पुस्तक ''अल- कुल्लियात फ़िल तिब्ब'', जिसका लैटिन अनुवाद "कौलेजियट" के नाम से प्रकाशित हुआ, आज भी महत्वपूर्ण मानी जाती है । खगोलशास्त्र पर उनकी रचना का नाम ''किताब फ़िल हरकतुल फ़लक'' है । उन्होंने औषधि पर ही बीस से अधिक पुस्तकें लिखी हैं ।

इन महान वैज्ञानिकों और चिंतकों के अलावा इब्ने नफ़ीस, अबू मरवान, इबने ज़ह्र, अब्दुल्लाह बिन इदरीसी, इब्न बैतार, इब्ने फ़रनास, अल- ज़रक़ुल, अबू नसर मंसूर, जमशेद काशानी, अबुल कामिल आदि वैज्ञानिकों, खगोलशास्त्रियों, गणितज्ञों और चिकित्सकों के योगदान को भी दुनिया कभी भुला नहीं पाएगी ।

स्वतंत्रता संग्राम में मुस्लिम महिलाओं का योगदान

■ नरेश सिहाग 'बाहल'
(पटेल नगर, भिवानी, हरियाणा)

भारतवर्ष वर्षों तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा और भारत माता के अनेक पुत्र-पुत्रियां इन गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने के लिए दिन-रात संघर्ष करते रहे, जेल गये, फांसी चढ़े । भारत की स्वतंत्रता के लिए महिलाओं ने भी अपनी शक्ति और सामर्थ्यानुसार प्रत्येक मोर्चे पर अपना योगदान किया । इस संघर्ष में मुस्लिम महिलाएं भी पीछे नहीं रहीं । उन्होंने पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर अनेक कष्टों का सामना करते हुए स्वतंत्रता आन्दोलन को सफल बनाया । स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाली कुछ मुस्लिम महिलाओं का विवरण इस प्रकार है–

बेगम हज़रत महल

बेगम हज़रत महल 1858 के स्वतंत्रता संग्राम की एक वीर देवी के रूप में जानी जाती हैं । अवध अपने समय का एक संपन्न मुस्लिम राज्य था, जिस पर अंग्रेज़ सरकार क़ब्ज़ा करना चाहती थी । सन 1856 में नवाब वाजिद अली शाह पर अंग्रेज़ों ने विलासिता और शासन कार्यों की ओर से लापरवाही बरतने का आरोप लगाकर देश निकाला दे दिया और उन्हें भुटिया ब्रिज, कोलकाता भेज दिया, अवध पर कंपनी सरकार ने क़ब्ज़ा कर लिया ।

17 जनवरी 1857 को नाना साब कानपुर से व मौलवी अहमदुल्लाह शाह आगरा से लखनऊ पहुंचे । आप दोनों ने अवध की बेगमों से क्रांतिकारियों के मार्गदर्शन की विनती की । केवल हज़रत महल ने नेतृत्व संभालने की हामी भरी । आपने अपने पुत्र बिरजीस कद्र को सिंहासन पर बैठाकर अंग्रेज़ों को चुनौती दी । आपने अवध के ताल्लुकेदारों व राजाओं को भी युद्ध में शामिल होने के लिए तैयार किया ।

अंग्रेज़ों को अवध युद्ध में पराजय का मुंह देखना पड़ा । इस पर उन्होंने कई मोर्चों पर युद्ध आरंभ कर दिया जिसका अहमदुल्लाह शाह, बेगम हज़रत महल, राजा जयमल और बेनीमाधव सिंह के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने वीरता से सामना किया । ऐन समय पर नेपाल के महाराजा जंगबहादुर अंग्रेज़ों की सहायता को पहुंच गये जिस कारण लखनऊ पर अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हो गया । अंग्रेज़ों ने संधि का संदेश भेजा पर हज़रत महल हार मानने को तैयार नहीं हुई । सन 1858 में बेगम हज़रत महल नेपाल चली गयी, वहां भी अंग्रेज़ों से मुक़ाबला हुआ । इसमें भी आपकी जीत हुई ।

इस हार से निराश होकर अंग्रेज़ों ने नेपाल के महाराजा को बेगम व उनके साथियों को नेपाल से बाहर निकालने को कहा । आपने अपने साथियों को छोड़ना मंज़ूर नहीं किया और न ही अंग्रेज़ों से समझौता किया । नेपाल के महाराजा ने आप लोगों की रसद रोक ली थी जिस कारण आपकी गतिविधियां धीमी पड़ गयीं । अंग्रेज़ों ने बेगम को प्रलोभन दिया कि वे क्षमा मांग लें, पर बेगम क्षमा के लिए तैयार नहीं

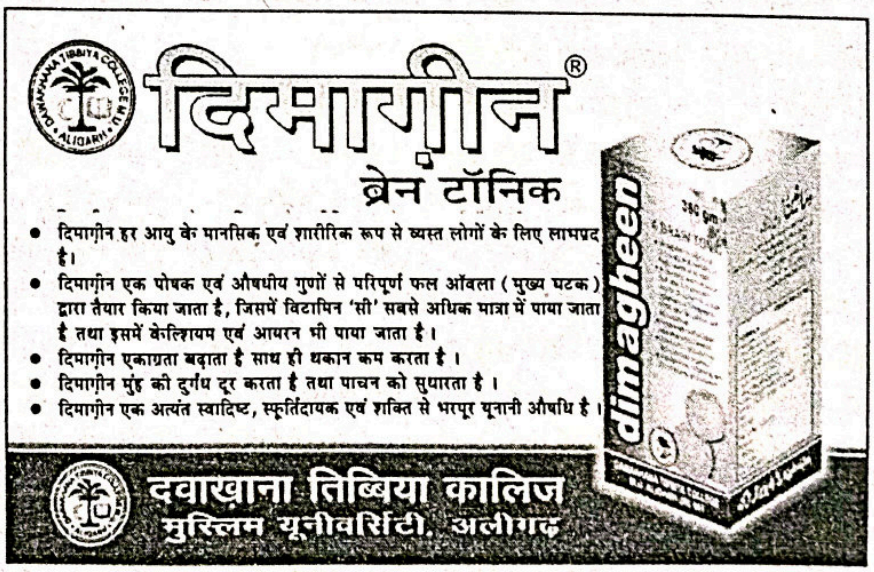

हुईं । उन्होंने सिर झुकाना स्वीकार नहीं किया ।

बेगम ज़ीनत महल

भारत में क्रांति की लहर चल रही थी । बिठूर के नाना साहब पेशवा और अन्य क्रांतिकारियों ने अंतिम मुगल बहादुरशाह ज़फ़र से अंग्रेज़ों के विरुद्ध नेतृत्व करने का आग्रह किया । बहादुरशाह वृद्ध होने के कारण असमंजस्य में थे । यह देख बेगम ज़ीनत महल ने परदे के पीछे से कहा, 'यह समय ग़ज़लें कहकर दिल बहलाने का नहीं है, आज पूरे हिन्दुस्तान की आंखें दिल्ली और आप पर लगी हुई हैं । ख़ानदानी मुग़लिया का ख़ून हिन्द को गुलाम बनने से नहीं रोकेगा तो तारीख़ उसे कभी माफ़ नहीं करेगी ।'

बहादुरशाह ज़ीनत महल की बातों से बहुत प्रभावित हुए और अंग्रेज़ों के विरुद्ध नेतृत्व को तैयार हो गये । ज़ीनत महल ने न केवल बादशाह बल्कि अमीरों और सिपाहियों में भी नये प्राण फूंके । आपने दरबारी कवियों से क्रांति के गीत लिखवाकर सबके मन उत्साह से भर दिये । आप मेरठ, झांसी, लखनऊ, बिठूर के क्रांतिकारियों से संपर्क बनाए रखती थीं । बादशाह को हर मसले पर सुझाव देती थीं ।

कर्नल हुडसन ने 20 सितम्बर 1857 को विद्रोह को कुचल दिया । 21 सितम्बर को बादशाह ने हथियार डाल दिये । बादशाह व बेगम को गिरफ़्तार कर अमानवीय यातनाएं दी गयी । आपके पुत्रों, पौत्रों के कटे हुए सिर आपको पेश किये गये । बादशाह को निष्कासित कर दिया गया । बेगम अपने पति के साथ रंगून में निष्कासित जीवन बिताते हुए इस संसार से विदा हुईं ।

बेगम सुल्तान ज़मानी

बेगम सुल्तान ज़मानी दिल्ली के शहज़ादे फ़ीरोज़शाह की बेगम थीं । आपने पति के साथ 18 वर्ष की आयु में ही स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था । फ़िरोज़शाह व बेगम हज यात्रा पर मक्का-मदीना गये हुए थे । मुंबई लौटने पर उन्हें क्रांति की सूचना मिली । मुंबई से मंदसौर तक आते-आते फ़ीरोज़शाह ने पर्याप्त सेना एकत्र कर ली । फ़ीरोज़शाह युद्ध करते और आप रसद का दायित्व संभालती और घायलों की सेवा करतीं । दिल्ली पर अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हो चुका था । कड़ी नाकाबन्दी की गयी थी । फ़ीरोज़शाह बेगम ने दिल्ली में प्रवेश करने का प्रयत्न किया, इस युद्ध में अनेक सैनिक मारे गये । स्वयं आपको भागकर सिरोज के जंगलों में छिपना पड़ा । जंगल में छिपे हुए ही छापामार युद्ध आरंभ



कर दिया । अंग्रेज़ सेना ने जंगल को तीन ओर से घेरकर आग लगा दी । जंगल जलकर राख हो गया । फ़ीरोज़शाह व आप चौथे रास्ते से निकल भागने में सफल रहे ।

फ़ीरोज़शाह कंधार, अफ़ग़ानिस्तान और बलोचिस्तान जाकर सेना एकत्र करने और दिल्ली वापस लेने का सपना देखते-देखते मक्का पहुंच गये । मक्का में सन 1877 में उनका देहांत हो गया । फ़ीरोज़शाह की मृत्यु के बाद सुल्तान ज़मानी मुंबई वापस आ गयीं । आपको दिल्ली दरबार से 100 रुपया पेंशन निश्चित हुई, पर आपको दिल्ली लौटने की अनुमति नहीं मिली । वहीं पर आपने अंतिम सांस ली ।

बीबी अमतुस्सलाम

सन 1930-31 के मध्य महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में बीबी अमतुस्सलाम स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हुईं । आप पटियाला के एक मुस्लिम परिवार से ताल्लुक़ रखती थीं । आपने गुजराती भाषा सीखकर अपना कार्य क्षेत्र गुजरात राज्य चुना । हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए विशेष काम किया । जहां कहीं साम्प्रदायिक दंगे भड़कने का समाचार सुनतीं, आप तुरंत वहां पहुंच जातीं । दोनों ओर के लोगों को समझा-बुझाकर समझौता करातीं । स्वतंत्रता आन्दोलन में सब धर्मों, जातियों के लोगों को एक बनाए रखने में बीबी अमतुस्सलाम ने महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत की थी ।

बेगम हसरत मोहानी

बेगम हसरत मोहानी उर्दू के प्रसिद्ध क्रांतिकारी शायर हसरत मोहानी की धर्मपत्नी थीं । जब मोहानी साहब को सश्रम कारावास की सज़ा सुनायी गयी तो मित्रों ने सुझाव दिया कि माफ़ी मांग लो, सज़ा से बच जाओगे । आपने अपने पति का साहस बढ़ाया और माफ़ी न मांगने की सलाह दी और आश्वासन दिया कि उनके बाद वह स्वयं उनका काम संभालेंगी । आपने पुरुष वेश धारण कर दिल्ली, देहरादून और अलीगढ़ की यात्राएं कीं और आन्दोलन में सम्मिलित होने के लिए लोगों को प्रेरित किया । आपने काम में बाधक बनने के कारण परदा करना भी छोड़ दिया था । आपने जेल की यातनाएं भी सहन की । सन 1917 में सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं का जो दल 'महिलाओं के अधिकार' की मांग को लेकर वाइसराय से मिला था, उस दल में बेगम हसरत मोहानी भी सम्मिलित थीं ।

नूरुन्निसा इनायत ख़ान

नूरुन्निसा टीपू सुल्तान की पोती के नवासे की बेटी थीं । आपके पिता इनायत ख़ान ने एक फ्रांसीसी महिला से विवाह किया था । नूरुन्निसा उर्दू, फ्रांसीसी, हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषा में निपुण थी । दूसरा महायुद्ध आरंभ होने पर अंग्रेज़ों ने आपको जासूसी का प्रशिक्षण देकर पेरिस भेजा । आप सूटकेस में ट्रांसमीटर लेकर घूमती और संदेश भेजा करतीं । पेरिस में आपके कई जासूस साथी पकड़े गये । जब इसकी सूचना भारत में पहुंची तो बचे हुए जासूसों का वापस भारत लाने के लिए एक जहाज़ भेजा गया पर आपने लौटने से इन्कार कर दिया । उन्होंने कहा, 'मैं अंग्रेज़ शासकों के प्रति वफ़ादारी जताने अथवा उन्हें खुश करने के लिए नहीं अपितु अपने देश को आज़ाद कराने के लिए लड़ रही हूं । मैं काम अधूरा छोड़कर वापस नहीं आऊंगी ।

आप मैडेलियम नामक एक महिला के साथ रह रही थीं । एक दिन उस पर नूरुन्निसा का भेद खुल गया । इनाम के लालच में उसने नूरुन्निसा को गिरफ़्तार करा दिया । आपने भोजन लाने वाली सेविका को घूस देकर लोहा काटने वाली आरी प्राप्त की, साथियों के साथ मिलकर रोशनदान की सलाखें काटकर वह छत पर पहुंच गयीं पर अफ़सोस आप गिरफ़्तार हो गयीं और मुक़दमा चला । सन 1944 में उन्हें बदनाम उशाओं कैंप में भेज दिया । वहां क्षमा मांगने और अपने साथियों के नाम बताने के लिए यातनाएं दी गयी पर आपने ज़बान नहीं खोली । अत: आपको गोली मार दी गयी ।

अरुणा आसफ़ अली

अरुणा का जन्म सन 1904 में बंगाल में हुआ । सन 1930 में नमक सत्याग्रह में इनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी । अदालत ने अरुणा को एक वर्ष तथा अन्य महिलाओं को छह महीने की सज़ा दी । फिर गांधी-इरविन समझौते के बाद सब क़ैदी छोड़ दिये गये पर अरुणा को नहीं छोड़ा गया । अरुणा ने दिल्ली जेल में क़ैदियों के साथ ख़राब व्यवहार किये जाने पर भूख हड़ताल की और अपनी मांगे मनवाई । इसके बाद उन्हें अम्बाला जेल भेज दिया गया और क़ैदे तन्हाई की सज़ा दी गयी । जेल से छूटने के बाद सन 1942 में अगस्त क्रांति की प्रभावी नेता के रूप में सामने आयीं । आपने डॉ॰ लोहिया के साथ मिलकर एक पत्र 'इन्क़िलाब' निकाला । इस पत्र में आपने अपने विचार यूं प्रकट किये, 'यह समय हिंसा-अहिंसा की बहस करने में लगे रहने का नहीं है । मैं चाहती हूं, प्रत्येक नागरिक अपने ढंग से आज़ादी का सिपाही बने । वह तरीक़ा इन्क़िलाब का हो या सत्याग्रह का, काम होना चाहिए ।' आपकी गिरफ़्तारी के लिए अंग्रेज़ों ने 8 हज़ार रुपये के इनाम की घोषणा की थी ।

इस इनाम की घोषणा 9 अगस्त 1942 से 26 जनवरी 1946 तक जारी रही, पर इनका किसी ने कोई सुराग़ नहीं दिया । आप भूमिगत रहकर ही कार्य करती रहीं । सन 1946 में जब अंग्रेज़ सरकार ने गिरफ़्तारी वारंट वापस ले लिया तक ही आप सामने आयीं ।

दिल्ली जलसे में आपने घोषणा की थी 'भारत की स्वतंत्रता के संबंध में इंग्लैंड से कोई समझौता नहीं हो सकता । भारत अपनी स्वतंत्रता छीनने में संकोच नहीं करेगा । हम भारतीय उनसे भीख मांगने नहीं जाएंगे ।'

इन मुस्लिम महिलाओं के अतिरिक्त और भी बहुत-सी महिला सेनानी हुई हैं, किंतु उनका विवरण नहीं मिलता है । 1857 से 1947 तक स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिसके लिए देश उनका सदैव ऋणी रहेगा ।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान– डॉ॰ बानो सरताज (सा॰ : शान्तिधर्मी)

परदेसी परिन्दों की चहचहाहट और ख़ूबसूरती पर आखेटकों की कुदृष्टि

■ विद्या प्रकाश

जिस समाज में गृहागत मेहमानों को देखकर प्रसन्न होने, अतिथि देवो भव के परंपरानुसरण तथा उनके स्वागत-सत्कार में कोई कोर कसर बाक़ी न रखने की अमूल्य सांस्कृतिक विरासत हो, उसी समाज में जीभ का जायक़ा बदलने तथा स्वाद की क्षणिक सुखानुभूति के लिए विदेशी परिन्दों को बेख़ौफ़ मारना दुखद है ।

उ०प्र० के जौनपुर, आज़मगढ़, बस्ती, वाराणसी आदि विभिन्न जनपदों में नगर मुख्यालय के कोलाहल और चकाचौंध से सुदूर ग्रामीणांचलों में स्थित सरोवरों में प्रतिवर्ष नवम्बर में जाड़े की शुरुआत से लेकर मार्च में हेमंत ऋतु के समापन तक लगभग पांच महीने तक परदेशी परिन्दों का डेरा लगता है । इन ताल-पोखरों में हर साल हेमंत ऋतु में खग कुल की कुल-कुल की स्वर लहरी से समुचा वायुमंडल गुंणायमान हो उठता है ।

हेमंत ऋतु में प्रतिवर्ष तालों में आने वाले परदेशी परिन्दों पर मौत के शिकारी दरिन्दे कहर बनकर टूट पड़ते हैं तथा प्रवासकाल में बड़ी संख्या में ये पंक्षी निर्भयतापूर्वक मौत के घाट उतार दिये जाते हैं । हालांकि वन विभाग के कर्मचारी तथा पुलिसकर्मी प्रवासी पक्षियों के संरक्षण हेतु तैनात किये गये हैं मगर उनकी तैनाती तथा मौजूदगी का रंच मात्र भी असर नहीं दिखता तथा वे विदेशी पखेरुओं का शिकार का अर्थोपार्जन के लोभ में उनके व्यवसाय में बेख़ौफ़ लिप्त हैं तथा वे ज़रा-सा मौक़ा हाथ लगते ही मेहमान परिन्दों की जान लेने में ज़रा भी नहीं चूकते । शिकारियों के चलते परदेश से वायु मार्ग से हज़ारों किलोमीटर का फ़ासला तय कर आने वाले ये परिन्दे आखेटकों की कुदृष्टि से सुरक्षित बचकर सकुशल अपनी मातृभूमि लौट भी पाएंगे । यह कह पाना मुश्किल है । यही वजह है जो हेमंत ऋतु में तालों में सुदूरवर्ती देश देशांतर से आने वाले प्रवासी पक्षियों के

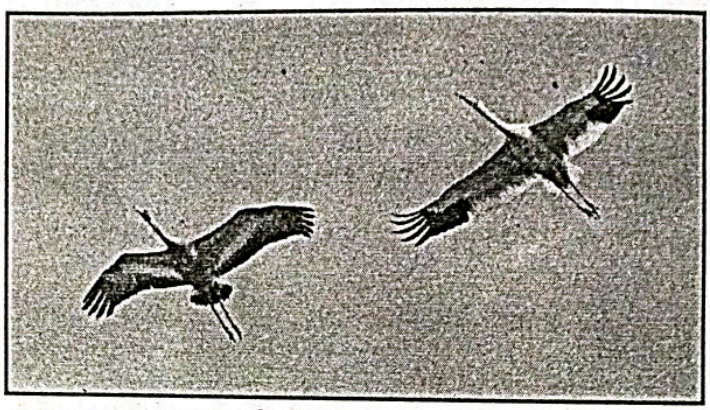

आगमन का ग्राफ़ वर्ष-प्रतिवर्ष घटता जा रहा है । उनकी संख्या में कमी का अन्य प्रमुख कारण ग्लोबल वार्मिंग भी है ।

यह उल्लेखनीय है कि प्रतिवर्ष हेमंत ऋतु की शुरुआत होने पर रूस, चीन, अफ़ग़ानिस्तान, यूरेशिया, जर्मनी, उत्तरी और पूर्वी साइबेरिया, आस्ट्रेलिया, ईरान, इराक़ तथा नगाधिराज हिमाचल के उस पार के विभिन्न देशों से विपुल संख्या में प्रवासी पंक्षी आकर उत्तर भारत ख़ासतौर से उ०प्र० के विभिन्न ताल-तलैया में अपना ठिकाना, अपना डेरा जमाते हैं । इन बाह्यागत प्रवासी पक्षियों में साइबेरियन क्रेन, अनाबील, लहतोरा, रामगगरा, सहेली, थिरथिरा, चहा, चुपका, सीखपर, गल, लगलम (स्टार्क), लोहा, इदुरी तथा सुरखाब (चकवा चकई) के अलावा मध्येशिया की प्रवासी बत्तखें, लालसर, तिदारी (सोवेलर), करछिया, बुड़ार तथा सवन प्रमुख हैं जो देखने में काफ़ी ख़ूबसूरत, रंगीन मनमोहक पंखदार तथा आकर्षक छवि के होते हैं । जाड़े के मौसम में यहां की जलवायु भौगोलिक तथा नैसर्गिक दृष्टि से इन पक्षियों के अनुकूल होती है ।

ध्रुवीय प्रदेश से हज़ारों किलोमीटर की उड़ान भरकर यहां बड़ी संख्या में आने वाले रंग-बिरंगे पखेरुओं का ख़ूबसूरत मेला तथा ताल-तलैयों में सांगीतिक कलखयुक्त जलक्रीड़ा और परस्पर चंचु चुम्बन अवलोकनीय होता है ।

विभागाधिकारियों तथा स्थानीय प्रशासन का ध्यानाकृष्ट करने पर कुछ समय के लिए उनका शिकार थम जाता है । कुछ समय क ख़ामोशी के बाद इन पखेरुओं के शिकार का सिलसिला फिर चुपचाप शुरू हो जाया करता है ।

क्षेत्रवासियों के कथनानुसार बताया जाता है कि शिकारी भोर में वाहन के ट्यूब तथा गुड़ पकाने वाले बड़े कड़ाहे की सहायता से तैरकर ताल के बीचो-बीच पहुंचते हैं तथा मझधार में जाल फेंककर वे चुपचाप पड़े रहते हैं । कुछ आखेटक ऐसे हैं जो पक्षी पकड़ने हेतु फनिया लगाते हैं । जब पक्षी चारा चुगने की लालच में आते हैं तो वे उसके जाल में फंस जाते हैं ।

इसके अलावा बैंगन में छिड़की जाने वाली विषाक्त कीटनाशक दवा को भी चारा में मिलाकर फेंका जाता है जिसका सेवन कर परिन्दे मूर्च्छित हो जाया करते हैं । यह शिकार रात्रिकालीन अंधकार में बड़े आराम के साथ बेखटके किया जाता है । इस प्रकार अगले दिन चतुर्दिशाओं में प्रात:कालीन प्रकाश फैलने पर आखेटक दर्जनाधिक परिन्दों का शिकार करके खाने अथवा विक्रय के मक़सद से क़स्बा-शहर की ओर बेख़ौफ़ चल दिया करते हैं । अनेक शिकारियों के पास ग्राहकों की मांग पहले से तैयार रहती है । प्रवासी पक्षियों का गोश्त खाने के शौकीन मिज़ाज के लोग इसके लिए उन्हें मुंहमांगी क़ीमत चुकाते हैं तथा बहुत से लोग पेशगी भी दे दिया करते हैं । इन मांसाहारियों से बचे परिन्दों को लेकर बेचने के लिए चिड़ीमार शहर की ओर रुख़ करते हैं । शहर में परिन्दे 100 से लेकर 150 रुपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से जैसा ग्राहक मिल गया, बड़े आराम से बिक जाते हैं । प्रतिवर्ष नवम्बर की शुरुआत में यहां आने वाले इन प्रवासी पक्षियों के प्रस्थान का सिलसिला फ़रवरी मासांत से आरंभ हो जाता है जिसके शिकार में स्थानीय विभागाधिकारियों तथा पुलिसा कर्मचारियों की भी मिलीभगत तथा अप्रत्यक्ष सहयोग बताया जाता

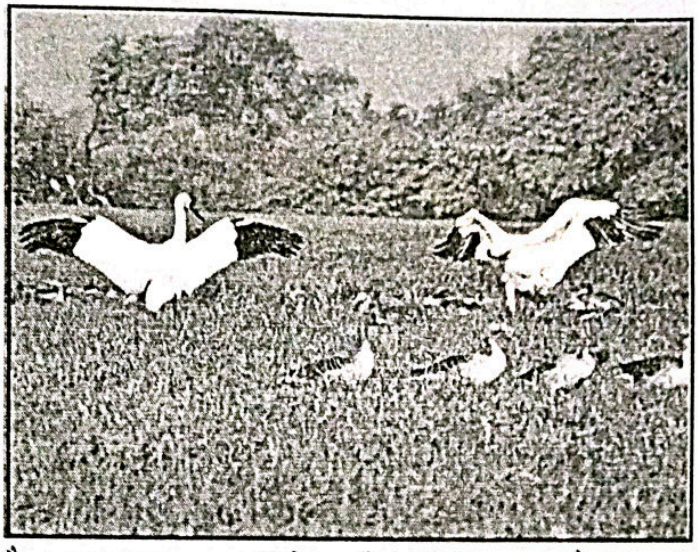

है । इस बाह्यागत परिन्दे हमारे अतिथिस्वरूप हैं जिनकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व हम सबका है । इनकी सुरक्षा हेतु पर्यावरणवेत्ताओं तथा स्वयंसेवी संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए ।

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर

मासिक कान्ति

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

स्त्री-पुरुष के पारस्परिक दायित्व

❖ मुहम्मद इलियास हुसैन

1. लेखिका बुशरा सादिक़ा ने समीक्ष्य पुस्तक 'स्त्री-पुरुष में समानता की वास्तविकता' में विभिन्न समाजों में स्त्री-पुरुष के बीच पायी जाने वाली समानता और असमानता का तर्कसंगत और यथार्थपरक विवेचन किया है और समानता की पाश्चात्य और इस्लामी धारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

विदुषी लेखिका ने समानता की पाश्चात्य धारणा का विश्लेषण करके उसके दोषों और दुष्परिणामों को दर्शाने का भरपूर प्रयास किया है । समानता की इस्लामी धारणा की युक्तिसंगत विवेचना करके लेखिका ने बताया है कि इस्लाम अपने जन्मकाल से ही स्त्री-पुरुष की समानता का पक्षधर और ध्वजावाहक रहा है । स्त्री-जाति को जो सम्मान, जो समानता, जो अधिकार और जो स्थान इस्लाम और इस्लामी समाज ने प्रदान किया है, वह अन्य किसी भी धर्म और समाज उसे प्रदान नहीं कर सका है, चाहे स्त्री-पुरुष की समानता का ढिंढोरा रात-दिन पीटा जाता रहा हो । पाश्चात्य उपभोक्तावादी संस्कृति ने तो स्त्री को 'उपभोग की वस्तु' बनाकर उसका बहुआयामी शोषण ही किया है । पश्चिमी संस्कृति ने नारी को अधिकार प्रदान करने के नाम पर उसके 'सम्मान के साथ जीने के अधिकार' का हरण ही किया है । स्त्री ने उस संस्कृति से बहुत कुछ पाया है, तो बहुत कुछ खोया भी है । आत्म-सम्मान और अस्मिता-रक्षा की दृष्टि से नारी हर जगह असहाय और लाचार नज़र आती है ।

नारी-मुक्ति आन्दोलन से प्रेरित होकर स्त्री-पुरुष के बीच समानता का नारा ज़ोर-शोर से लगाया जाने लगा । इसकी प्रतिध्वनि से लगभग पूरा संसार गूंजने लगा । इसका नतीजा यह हुआ कि स्त्रियां घर से बाहर निकलकर पुरुषों के साथ होटलों, दुकानों, ऑफ़िसों और कंपनियों इत्यादि में श्रम-साध्य कार्य करने लगीं । स्त्रियों को उन कामों से छुट्टी तो न मिली, जो प्रकृति ने उन्हें सौंपे थे, बल्कि दूसरे बहुत-से काम भी उन पर लाद दिये गये । उपभोक्तावादी संस्कृति ने पारिवारिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करके रख दिया । माता-पिता के संरक्षण से वंचित बच्चे समाज में तरह-तरह की बुराइयां फैलाने का कारण बनने लगे । फलतः मानव-समाज अनगिनत अनैतिक बुराइयों से भर गया ।

स्त्री-पुरुष के मध्य प्राकृतिक रूप से कुछ समानताएं हैं और असमानताएं भी । कहने को तो जान-माल आत्म-सम्मान और अस्मिता-रक्षा की दृष्टि से दोनों को एक समान अधिकार प्राप्त हैं । लेकिन वास्तविकता की धरा कुछ और कहानी कहती है । दिन-प्रतिदिन दानवता का रूप धारण करते जा रहे विश्व-समाज में आज स्त्री कहां खड़ी है ?

प्रस्तुत संदर्भ में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-पंक्ति 'आंचल में दूध आंखों में पानी' को रखकर विचार किया जाए, तो उपभोक्तावादियों ने 'आंचल में दूध' वाक्यांश का अर्थ बदलकर 'ममतामयी मां' से बदलकर 'दूधारू गाय' का दिया है और उन्होंने इतने नये-नये तरीक़ों से स्त्रियों का शोषण किया है कि स्त्री-जाति अपने मन की दहनशील पीड़ा किसी पर प्रकट भी नहीं कर सकती । वह

1. पुस्तक शीर्षक	: स्त्री-पुरुष में समानता की वास्तविकता
लेखका	: बुशरा सादिक़ा
पृष्ठ : 23, मूल्य	: 16.00 रुपये
प्रकाश	: एम॰एम॰आई॰ पब्लिशर्स, नयी दिल्ली-25
फ़ोन/फ़ैक्स	: 011-26981652, 26987858
2. पुस्तक शीर्षक	: शादी और इस्लाम
लेखक	: डॉ॰ वारिस मज़हरी
पृष्ठ : 32, मूल्य	: 15.00 रुपये
प्रकाशक	: मधुर संदेश संगम, नयी दिल्ली-25
मोबाइल	: 09212567559, 09212356332

तो बस 'आंखों में पानी' भरकर किसी मुक्तिदाता की राह देखती रहती है । बुशरा सादिक़ा ने स्त्री-जाति को दयनीय दशा से निकालने के लिए यह किताब लिखी है । यह पुस्तक आशा की एक किरण है संपूर्ण स्त्री-जाति के लिए । 'पुरुष', 'लगीं हैं' आदि त्रुटियां खटकती हैं ।

2. डॉ॰ वारिस मज़हरी ने शादी से होने वाले लाभ और उसके महत्व पर अपनी किताब 'शादी और इस्लाम' में प्रकाश डाला है और एक सफल वैवाहिक जीवन का गुर बताया है । विवाह मानव-समाज में फैलनें वाले हर प्रकार की यौन उच्छृंखलता पर रोक लगाता है और मानव-वंश रूपी गाड़ी को अबाध गति से बढ़ते रहने का मार्ग प्रशस्त करता है । इससे एक सभ्य समाज का निर्माण होता है ।

डॉ॰ मज़हरी ने प्रस्तुत पुस्तक में पति-पत्नी के अधिकारों, कर्तव्यों और दोनों की सीमाओं का विस्तृत वर्णन किया है । ईमानदारीपूर्वक अपने-अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने से दाम्पत्य जीवन में सुख-शांति की बहार आती चली जाती है । घर-परिवार मानो जन्नत में परिवर्तित हो जाता है ।

आजकल मुस्लिम घरानों में भी शादी-ब्याह में ग़ैर-शरई रस्म-रिवाजों का बोलबाला हो गया है । फ़ुज़ूलख़र्ची, दिखावा, दान-दहेज और नाच-गाना को शान-शौकत का प्रतीक समझा जाने लगा है । इस्लाम में इसकी गुंजाइश नहीं है । एक सच्चे और पक्के मुसलमान को इन सारे ग़ैर-शरई कामों से बचना चाहिए ।

क़ुरआन और हदीसों को आधार बनाकर लिखी गयी इस किताब में लेखक ने इस्लामी विवाह भर भरपूर प्रकाश डाला है । इस्लाम में विवाह (निकाह) इबादत की हैसियत रखता है । हदीस में इसे 'आधा धर्म' कहा गया है । इस सिलसिले में समाज में जो ग़लतफ़हमियां, ग़लत नस्म-रिवाज फैल गये हैं, इस पुस्तक से उन्हें दूर करने में मार्गदर्शन मिलेगा । इस्लामी शादी के संबंध में संक्षेप में तमाम ज़रूरी बातें बयान करके लेखक ने सराहनीय काम किया है ।

ग़ज़ल

मत कहो आकाश में कुहरा घना है,
मित्र अब भी श्रेष्ठ की संभावना है ।

वह ही मानवता के पथ का है अनुगामी
पास जिसके हर समय संवेदना है ।

नार की हो लाज रक्षित, यह भी चाहत,
पुरुष में सद्‌बुद्धि हो, यह प्रार्थना है ।

वृक्ष ऐसे तो यह मिट ही जाएगा,
संस्कृति का चरमराता अब तना है ।

नीतिं, नैतिकता नहीं, ना धर्म है,
इसलिए ही तो ये मौसम अनमना है ।

बात सीधी-सी मनुज समझेगा कब,
मान मानवता का रखने वह बना है ।

जो है प्रहरी, वह लुटेरा, देखिए,
हाथ खंजर, मुंह तो उसका ख़ूं सना है ।

अब तिमिर को जीतना है ऐ 'शरद',
सूर्य दमके सबके मन, अभ्यर्थना है ।

प्रो॰ शरद नारायण खरे
विभागाध्यक्ष इतिहास
शासकीय महिला महाविद्यालय
मंडला (म॰प्र॰)-481661



मानव शरीर की कुछ रोचक जानकारी

मानव शरीर वास्तव में अद्‌भुत है । यह ईश्वर की ही देन है । इतनी छोटी मानव काया में कितने विशाल से विशाल कार्य हुआ करते हैं । मानव शरीर की संरचना एवं इसमें प्रतिदिन ऐसी-ऐसी घटनाएं घटती हैं जो देखने में लगती तो बहुत तुच्छ है परन्तु गहराई से देखने से उसकी विशालता हमारे सामने उपस्थित होती है । ऐसे में इनकी जानकारी अत्यंत ज़रूरी हो जाती है । मानव शरीर के संबंध में ऐसी ही कुछ रोचक जानकारी प्रस्तुत है । शरीर की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं ।

● शिशु में 270 अस्थियां होती हैं, जो वयस्क होने तक 206 रह जाती है ।

● हमारे शरीर में रक्त की औसत मात्रा 6.5 लीटर है ।

● हम एक मिनट में 17 बार श्वास लेते हैं ।

● मनुष्य के दोनों वृक्कों में 20 लाख सूक्ष्म नलिकाएं (नेफ्रोन्स) पायी जाती हैं जो रूधिर को शुद्ध करती हैं ।

● हमारे नाख़ून एक वर्ष में 2.5 इंच बढ़ते हैं । हमारी आहार नली की लंबाई 9 मीटर होती है शरीर की सबसे लंबी अस्थि जांग की फीमर होती है । तथा सबसे छोटी अस्थि कान में स्थित स्टेपीज है ।

● नेत्र के कॉर्निया व लैंस में रूधिर की आपूर्ति नहीं होती है ।

● हमारे शरीर में लगभग 81 लाख बाल होते हैं ।

● मनुष्य की त्वचा हर 27 दिन बाद बदल जाती है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



With Best Compliment From

DR. M. A. PATANKAR

Al-Khaleej Diagnostic Centre









M-2, 2nd Floor, Above SBI Bank
South Extension Part-2, New Delhi-110049
Email : alkhaleejdc@yahoo.com
Tel. No. : 011-26262680-41646577

Posted on 20-21 January 2016
February 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.01.2016
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी भाषियों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

हबीब होम्यो केयर

जम्मू कश्मीर बैंक के बग़ल में, स्टेशन रोड, भदोही

डॉ० मेराज अंसारी
B.H.M.S (BFUHSc.,PB)

(Govt. Regn. No-H031662)

मिलने का समय :
प्रत्येक दिन सुबह 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
शाम 4:00 बजे से 9:00 बजे तक
और प्रत्येक रविवार
सुबह 10:00 बजे से 1:00 बजे तक

(जटिल एवं असाध्य रोग विशेषज्ञ)

क्या आप जोड़ों के दर्द (गठिया, अर्थराइटिस आदि से परेशान हैं ।

क्या आप त्वचा, श्वास रोग, गुप्त रोग से परेशान हैं ।

बीमारियां सालों से आपके शरीर में घर कर गयी हैं ।

यदि हां तो संपूर्ण इलाज के लिए संपर्क करें, और अपनी दवा कुरियर से मंगाएं और स्थायी और हमेशा के लिए रोगों से मुक्ति पाएं ।

नोट :
1. सभी दवाओं के बीच में दो-दो मिनट का अन्तर रखें ।
2. दवा खाने के 15 मिनट पहले और 15 मिनट बाद ही कुछ खाएं ।

दरोपुर (नई मस्जिद के सामने), भदोही - 221401 (उ०प्र०)

प्रत्येक दिन सुबह 8:00 बजे से 9:30 बजे तक, रविवार बन्दी

अब तक अनेकों मरीज़ों को फ़ायदा मिला–दिल्ली, मुंबई, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तक के मरीज़ों ने जटिल बीमारियों से मुक्ति पायी ।